मैदाने हश्र

मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

मैदाने हश्र

मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

www.idaraimpex.com

मैदाने हश्र

मौलाना मुहम्मद आशिक इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

Maidane Hashr

प्रथम प्रकाशन : 2015

ISBN 81-7101-480-1

TP-398-15

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: +91-11-2695 6832 & 085888 33786
Fax: +91-11-6617 3545 Email: **info@idara.in**
Online Store: **www.idarastore.com**

Retail Shop: **IDARA IMPEX**
Shop 6, Nizamia Complex, Gali Gadrian, Near Karim's Hotel
Hazrat Nizamuddin, New Delhi-13 (India) Tel.: 085888 44786

विषय-सूची

मैदाने हश्र

मैदाने हश्र

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ.

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। वस्सलातु वस्सलामु अ़ला रसूलिही सैयदिना मुहम्मदिंव्व आलिही व अस्हाबिही अजमईन०। अम्मा बअ़्द—

इस दुनिया में जो भी आया, हर एक ने इसको छोड़कर दूसरी दुनिया का रास्ता लिया यानी अपनी उम्र की सांस पूरी करके मौत की कठिन घाटी को तय करके बर्ज़ख़ में पहुंचा। बर्ज़ख़ में अ़ज़ाब और तकलीफ़ें भी हैं और आराम व राहत भी है। अपने-अपने आ़माल के एतबार से बर्ज़ख़ में अलग-अलग हालात से गुज़रना पड़ता है। दुनिया से जो आता है बर्ज़ख़ में जगह पाता है। ग़रज़ यह कि हर आने वाला जाएगा और—

सब ठाठ पड़ा रह जायेगा
जब लाद चलेगा बंजारा

जिस तरह इंसानों और जिन्नों की उम्रें मुक़र्रर हैं; उसी तरह दुनिया की उम्र भी मुक़र्रर है। जब इस दुनिया की उम्र पूरी होगी; अचानक उसके मज्मूए को मौत आ जाएगी। एक-एक आदमी के चले जाने को मौत और पूरी

दुनिया के ख़त्म हो जाने को क़ियामत कहते हैं। मौत और ज़िंदगी की हिक्मत ब्यान फरमाते हुए अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने इर्शाद फ़रमाया है:

الَّذِیْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَیٰوۃَ لِیَبْلُوَکُمْ اَیُّکُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ

अल्लज़ी ख़ ल क़ल मौ त वल हया त लियब्लु व कुम ऐयुकुम अहसनु अ़ म ला०

'जिसने पैदा किया मौत को और ज़िंदगी को ताकि तुमको जांचा जाए कि तुम में कौन अच्छे काम करता है।'

यानि मौत व ज़िंदगी का यह सिलसिला इसलिए है कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आ़माल की जांच करे कि कौन बुरे काम करता है और कौन अच्छे काम करता है। और अच्छे से-अच्छे काम करने वाला कौन है? पहली ज़िंदगी में अ़मल का मौक़ा देकर और काम करने का तरीक़ा बताकर इंसान को इम्तिहान में डाला। फिर दूसरी ज़िंदगी रखी गयी। जिसका एलान पैग़म्बरों की ज़ुबानी साफ़ कर दिया गया कि ऐ इंसानो! तुमको मरना है और मरने के बाद जी उठना है और जी उठकर पैदा करने वाले व मालिक के हुज़ूर में जवाबदही करना है। सूरः मूमिनून में इंसान की पैदाइश के हालात ब्यान करने के बाद इर्शाद फ़रमाया :

ثُمَّ اِنَّکُمْ بَعْدَ ذٰلِکَ لَمَیِّتُوْنَ ۞ ثُمَّ اِنَّکُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ؕ

सुम्म म इन्नकुम बअ़् द ज़ालि क ल मैयितून। सुम्म म इन्नकुम यौमल क़ियामति तुब्अ़सून०

'फिर तुम इसके बाद मरोगे। फिर तुम क़ियामत के दिन खड़े किये जाओगे।'

यानी यह ज़िंदगी, ज़िंदगी नहीं है और जीती जागती मूरत और हंसती-बोलती तस्वीर। देखती-सुनती जान जो तुमको दी गई है, हमेशा न रहेगी, मौत की घाटी से गुज़र कर एक और ज़िंदगी पाओगे और अपनी उस प्यारी जान को लेकर अल्लाह के हुज़ूर में पेश होकर *'वुफ़्फ़ियत कुल्लु*

नफ़्सिम मा अ़मिलत' का मंज़र देखोगे।

आ़माल का बदला मिलना ज़रूरी है, इस पर तमाम अक़्ल वाले एक राय हैं। 'जैसी करनी वैसी भरनी' मशहूर मिस्ल है जो आ़म व ख़ास हर एक की ज़ुबान पर है। दुनिया में जो काम इंसान करते हैं, उनके फ़ैसले क़ियामत के दिन होंगे। क़ुरआन मजीद में क़ियामत के दिन को *'यौमुद्दीन'* (बदले का दिन) और *'यौमुल फ़स्ल'* (फ़ैसले का दिन) और *'यौमुल हिसाब'* (हिसाब का दिन) फ़रमाया गया है। उस दिन रिश्तेदार काम न आयेंगे; ताक़त न चलेगी, बेकसी और बेबसी की दुनिया होगी, आ़माल पेश होंगे। हर भलाई-बुराई सामने आयेगी। सूरः ज़िल्ज़ाल में फ़रमाया :

يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ
خَيْرًا يَّرَهٗ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ط

यौ मइजिंय्यस्दुरुन्नासु अश्तातल्लि युरौ अअ़्मा ल हुम
फ़मैंयअ़्मल मिस्क़ा ल ज़र्र तिन ख़ैरैंयरः व मैंयअ़्मल मिस्क़ा
ल ज़र्रतिन शर्रैंयरः

'उस दिन अलग-अलग जमाअ़तों में हो जाएगें ताकि आ़माल को देख लें सो जिसने ज़र्रा बराबर नेकी की, वह उसे देख लेगा और जिसने ज़र्रा बराबर बुराई की वह उसे देख लेगा।

अपने आप अकेले हाज़िरी होगी और पहले के और आख़िर के लोगों में से कोई छिपकर कहीं न जा सकेगा। अल्लाह का इर्शाद है :

لَقَدْ اَحْصٰهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا (سورئہ مریم)

ल क़ द अह्‌साहुम व अ़द्‌दहुम अ़द्दा व कुल्लुहुम आतीहि
यौमल क़ियामति फ़र्दा।

'उसके पास उनकी गिनती है और गिन रखी है उनकी गिनती। और क़ियामत के दिन इनमें से हर एक उसके सामने तंहा आयेगा।'

इंसानों ने जो काम दुनिया में किये थे, उनका अक्सर हिस्सा दुनिया में

ही भूल गये थे, फिर आख़िरत में तो क्या याद रखेंगे। लेकिन अल्लाह तआला उनके तमाम आमाल से इत्तिला फ़रमायेंगे। सूरः मुजादला में फ़रमाया :

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا اَحْصٰهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ط

यौ म यब्अ़सुहुमुल्लाहु जमीअ़न फ़ युनब्बिउहुम बिमा अ़मिलू अहसाहुल्लाहु व नसूह०

रहा यह सवाल कि नेकियों और बुराईयों का बदला क़ियामत के दिन पर उधार क्यों रखा है। मरते के साथ ही क़ब्र में क्यों फ़ैसला नहीं हो जाता तो इसका जवाब यह है कि अल्लाह तआ़ला हिकमत वाला और जानने वाला है। उनकी हिकमत चाहती है कि फ़ैसलों और बदलों के लिए क़ियामत के दिन का इंतिज़ार किया जाए। अल्लाह जल्ल ल शानुहू के इल्म में तो (ख़ुदा ही बेहतर जाने) कितनी मस्लहतें और हिकमतें होंगी। सरसरी नज़र में जो (मस्लहत) हमारी समझ में आती है, वह यह है कि इस दुनिया में इंसान का तअ़ल्लुक़ इंसान से भी है और इसके अ़लावा दूसरी मख़्लूक़ से भी है और इंसान को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हुक्म दिया गया है कि सारी मख़्लूक़ से अच्छा बर्ताव रखे और अच्छा व्यवहार करे। किसी पर जानी या माली ज़ुल्म न करे। मख़्लूक़ के मख़्लूक़ पर जो हक़ हैं, खुले तौर पर पाक शरीअ़त ने उनसे आगाह (सूचित) फ़रमा दिया है। फिर यह कि इंसान के ज़िम्मे न सिर्फ़ मख़्लूक़ के हक़ हैं बल्कि अल्लाह तआ़ला के हक़ भी हैं। उनकी तफ़्सील भी पाक शरीअ़त में मौजूद है उसके साथ दूसरी बात यह भी ज़ेहन में रख लीजिए कि नेक अ़मल और बुरे अ़मल दोनों की दो क़िस्में हैं; एक वे अ़मल कि जो अ़मल करते ही ख़त्म हो जाते हैं और उनको कर लेने के बाद इंसान अ़ज़ाब या सवाब का हक़दार हो जाता है। दूसरे वह अ़मल कि जो वुजूद में आते ही ख़त्म नहीं होते बल्कि उनका असर बराबर ज़्यादा-से-ज़्यादा सवाब या अ़ज़ाब का हक़दार होता चला जाता है, जैसे किसी शख़्स ने लिखकर या बोलकर तब्लीग़ (प्रचार) किया और उसके असर से दुनिया में नेकियां जारी हैं या किसी ने कुआं खुदवा दिया है या सराय बनवा दी है या और कोई ऐसा काम कर दिया है जिसका नफ़ा और

असर बराबर जारी है तो बहरहाल उसका सवाब भी चालू है। वह मर भी जाएगा तब भी उसका सवाब चालू रहेगा। इसके ख़िलाफ़ अगर किसी ने कोई गुनाह का काम चालू किया या किसी को गुनाह का रास्ता बता दिया या कोई ऐसी किताब लिख दी जो इंसानों को गुनाहों पर उभारती रहती है या और कोई ऐसा काम कर दिया जिसकी वजह से गुनाह बराबर जारी हैं तो बहरहाल उसके आ़मालनामे में गुनाह बढ़ते रहेंगे और ज़्यादा-से-ज़्यादा अ़ज़ाब का हक़दार होता रहेगा। इससे यह भी साफ़ हो गया कि जिस तरह दुनिया में इंसान के आ़माल का खाता बराबर लिखा जाता रहता है इसी तरह मरने के बाद भी उसके आ़माल में (अच्छे हों या बुरे) बढ़ोतरी होती रहती है।

कहने का मतलब यह है किः—

जबकि क़ब्र (यानी बर्ज़ख़ की दुनिया) भी अ़मल का घर है और आख़िरत में जिन आ़माल की वजह से अ़ज़ाब या सवाब मिलता है; वह अब भी उसके आ़मालनामे में जारी हैं (चाहे उसने किये हों या वह उनके करने की वजह बन गया हो) कैसे दे दिया जाए और आख़िरी फ़ैसला किस तरह हो? फिर चूंकि बंदे के हक़ के फ़ैसले भी होना ज़रूरी हैं। इसलिए भी क़ियामत के दिन पर फ़ैसला रखा गया। क्योंकि बर्ज़ख़ की दुनिया में तमाम हक़दार मौजूद न होंगे। हर आदमी की मौत का वक़्त अलग-अलग है। बर्ज़ख़ की दुनिया में यह आज पहुंचा है और जिसने उसपर ज़ुल्म किया था वह दस वर्ष बाद वहां पहुंचेगा और जिन लोगों पर उसने ज़ुल्म किया है, वह बीस वर्ष बाद दुनिया से रुख़्सत होकर बर्ज़ख़ में जगह पाएंगे। इंसाफ़ का तक़ाज़ा है कि मुद्दई और मुद्दआ़अ़लैह दोनों मौजूद हों तब फ़ैसला किया जाए ताकि ग़ायबाना फ़ैसला करने पर मुद्दई यह एतराज़ न कर सके कि मेरा हक़ कम दिलाया गया और मुद्दआ़अ़लैह यों न कह सके कि मेरे ख़िलाफ़ डिग्री देना उस वक़्त सही होता जब कि मुद्दई मौजूद होता। क्या मुम्किन न था कि मुद्दई माफ़ कर देता।

इसलिए

हिकमत व मस्लहत का तक़ाज़ा यह हुआ कि एक ऐसी तारीख़

फ़ैसलों और बदलों के लिए मुक़र्रर कर दी जाए जिसमें सब हाज़िर हों और जिसमें हर क़िस्म के आमाल (चाहे ख़ुद किए हों या वास्ते के साथ बंदे के आमालनामे में लिखे गये हों) ख़त्म हो चुके हों ताकि सबके सामने फ़ैसला हो और पूरे आमाल का पूरा बदला दिया जाए। इसी तारीख़ को क़ियामत का दिन कहते हैं। क़ियामत के दिन यह दुनिया ख़त्म हो जाएगी और हर क़िस्म के अमल और अमल के सिलसिले ख़त्म हो जाएंगे और तमाम अगले व पिछले लोग ज़िंदा करके हाज़िर किये जाएंगे और उस दिन फ़ैसले होंगे और बदले मिलेंगे।

बाक़ि रहा यह सवाल कि इस दुनिया में क्यों फ़ैसले नहीं होते और बदले क्यों नहीं मिलते तो इसका जवाब यह है कि एक तो यह दुनिया अमल की जगह है इसमें इम्तिहान के लिए आते हैं। अमल की जगह अमल का बदला मिलने लगे तो ग़ैब पर ईमान न रहे और इम्तिहान का मक़सद बेकार हो जाए। फिर यह कि अमल बराबर जारी है। नेकियों से बहुत-से गुनाह (छोटे) माफ़ होते रहते हैं और तौबा करने का भी मौक़ा है। इसलिए यह मुनासिब और सही है कि इस ज़िंदगी के बाद दूसरी ज़िंदगी में फ़ैसले हों और बदले दिए जाएं। क़ियामत के दिन जब ख़त्म होगा और सबके फ़ैसले हो जाएंगे तो हर एक अपने-अपने अंजाम के मुताबिक दोज़ख़ में पहुंचेगा। वे गुनाहगार मोमिन जो बुरे आमाल की वजह से दोज़ख़ में जाएंगे। बाद में जब अल्लाह जल्ल ल शानुहू की मंशा होगी, दोज़ख़ से निकाल कर जन्नत में दाख़िल कर दिए जाएंगे। लेकिन जन्नत से निकाल कर किसी को किसी दूसरी जगह न भेजा जाएगा। क़ियामत के फ़ैसले के बाद जन्नत का फ़ैसला हो जाना ही सच्ची कामयाबी है। क़ुरआन शरीफ़ में है :

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ (آل عمران)

कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल मौत। व इन्नमा तुवफ़्फ़ौ न उजू रकुम यौमल क़ियामति फ़ मन ज़ुह्ज़ि ह अनिन्नार। व

उद्ख़िलल जन्न न त फ़ क़द फ़ा ज़ व मल हयातुद्दुन्या इल्ला मताउल ग़ुरूर०

—आले इमरान

'हर जान मौत को चखने वाली है और तुमको पूरे बदले क़ियामत के दिन दिए जाएंगे। पस जो शख़्स दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया सो वह पूरा कामयाब हुआ और दुनिया की ज़िंदगी धोखे की पूंजी के सिवा कुछ भी नहीं है।'

इंसान के आ़माल का बदला जो दोज़ख़ या जन्नत की शक्ल में मिलेगा और उसके आ़माल के फ़ैसले जो क़ियामत के दिन होंगे, उनके हालात और तफ़सीलात क़ुरआन व हदीस में ख़ूब खोलकर ब्यान किये गये हैं। मुसलमानों के अ़लावा दूसरी कौमों में भी मरने के बाद अ़मल का बदला मिलने के बारे में कुछ बातें मिलती हैं लेकिन इनकी कोई सही बुनियाद नहीं जिसकी वजह यह है कि उन बातों को उन्होंने अपनी अटकल से तज्वीज़ कर लिए हैं जो अल्लाह तआ़ला के रसूलों की तालीमात और उनके बताये अक़ीदों के ख़िलाफ़ हैं। जैसे, कुछ क़ौमों में आवागमन का अ़क़ीदा चला आ रहा है। जिसे उन लोगों ने अपनी तरफ़ से तज्वीज़ किया है। उन लोगों का ख़्याल है कि मरने के बाद इंसान की रूह दूसरे इंसान या जानवर की योनि में जगह पाकर नया जन्म ले लेती है और हमेशा यही होता रहता है। इस अ़क़ीदे की वजह यह नहीं है कि ख़ुदा के पैग़म्बरों की बतायी हुई बात को मान कर ऐसा कर रहे हैं बल्कि इस अ़क़ीदे के गढ़ने की वजह यह है कि इन लोगों को दुनिया में इंसानों के अलग-अलग मर्तबे और दर्जे इस तरह नज़र आये कि कोई हाकिम है, कोई महकूम (जिस पर हुकूमत की जाए) कोई अमीर है, कोई ग़रीब है, कोई ख़ादिम है, कोई मख़्दूम (जिस्की ख़िदमत की जाए)। और इसी तरह के अनगिनत फ़र्क़ हैं। इस अलगाव की वजह क्या है? इसका फ़लसफ़ा (दर्शन) उन लोगों की समझ में न आया। हज़रत मुहम्मद ﷺ की शरीअ़त की तरफ़ रुजूअ़ करते तो इस अलगाव की बहुत-सी वज्हें मालूम हो जातीं। ख़ुद समझना चाहा, इसलिए समझ न सके। मजबूर होकर यह तज्वीज़ किया कि पिछले जन्म में जो कर्म

किये थे, यह अच्छा या बुरा हाल उसी का नतीजा है। इन नादानों का यह अक़ीदा जो उनका ख़ुद गढ़ा हुआ है, बहुत-से पहलुओं से ग़लत है। अगर ग़ौर किया जाए तो सरसरी नज़र में एक बड़ा सवाल और एतराज़ इस अक़ीदे के मान लेने के साथ ही मामूली समझ वाले इंसान की अक़्ल में यह आता है कि अ़मल का बदला (अ़ज़ाब की हैसियत में) सच में, वही बदला समझा जा सकता है, जिसके बारे में बदला मिलने वाले को उसका इल्म और यक़ीन हो कि मुझे यह आराम या तकलीफ़ फ़्लां अ़मल की वजह से है तो उसको बदला कहने का कोई मतलब न हुआ। दुनिया में जो लोग मौजूद हैं, जबकि उनको यह मालूम नहीं कि यह आराम या तकलीफ़ फ़्लां जगह के लिए फ़्लां अ़मल की वजह से है तो दुनिया के आराम व राहत या तकलीफ़ व मुसीबत को किसी पिछले जन्म का नतीजा किस तरह माना जाए? सज़ा भुगतने वाले को जब ही शर्म और पछतावा होगा जबकि उसे यह ख़बर हो कि यह फ़लां अ़मल की सज़ा है। काश! वह अ़मल मैं न करता।

बहरहाल हक़ वही है जो हज़रत मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया और बताया। उन्होंने जो कुछ फ़रमाया, सही फ़रमाया। जो बताया, अल्लाह की तरफ़ से फ़रमाया। गुमान और अटकल को उन्होंने किसी मतलब का न समझा।

अब मैं क़ुरआन हकीम और नबी करीम ﷺ के इर्शादात की रौशनी में क़ियामत के हालात तफ़सील से लिखता हूं। ये हालात हक़ हैं। इनको सच्चा जानो और अपनी आक़बत (अंजाम) की फ़िक्र करो।

क़ियामत का आना ज़रूरी है। कोई माने या न माने। वादा सच्चा है जो होकर रहेगा। जिस वक़्त क़ुरआन करीम नाज़िल होता था उस वक़्त भी क़ियामत के इंकारी थे और आज भी इस साबित सच्चाई से इंकार करने वाले मौजूद हैं। वह्य नाज़िल होते वक़्त जो लोगों को इस बारे में शक व शुब्हे थे; बहुत-से मौक़ों पर क़ुरआन शरीफ़ में उनके जवाब दिए गये हैं। नीचे कुछ आयतें इसी से मुतआ़ल्लिक़ लिखी जाती हैं। सूरः यासीन में फ़रमाया:

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ

व ज़ र ब लना म स लौं व नसि य ख़ल्क़ह। क़ा ल मैंय युहयिल इज़ा म व हि य रमीम०

‘और ब्यान की (इंसान ने) हमारे लिए मिसाल और भूल गया अपनी पैदाइश को। कहने लगा कौन हड्डियों को ज़िंदा करेगा। जबकि वह खोखली हो गयी होंगी।’

इस आयत में इंसान की नामुनासिब बात की शिकायत की गयी है कि देखो वह खुदा पर भी जुम्ले चस्पां करता है और कहता है कि मियां! गली-सड़ी हड्डियों को कौन ज़िंदा करेगा? बस ये सब कहने की बातें हैं। ऐसा सवाल करते वक़्त इंसान पैदाइश को भूल जाता है। अगर उसे अपनी पैदाइश एक ज़लील क़तरे (बूंद) से है तो अल्लाह जल्ल ल शानुहू के बारे में ऐसे लफ़्ज़ कहने में कुछ तो शर्म खाता और अक़्ल से काम लेता तो इस सवाल का जवाब भी अपनी पैदाइश में ग़ौर करने से पा लेता। आगे इस सवाल का तफ़सीली जवाब देते हुए फ़रमाया:

قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِىٓ اَنْشَاَهَآ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمٌ

क़ुल युहयीहल्लज़ी अन्शअ् हा अव्व ल मर्रतिउं व हु व बिकुल्लि ख़ल्क़िन अ़लीम०

‘आप फ़रमा दीजिए कि इन हड्डियों को वही ज़िंदा करेगा जिसने इनको पहली बार पैदा फ़रमाया था और वह सब बनाना जानता है’।

यानी जिसने पहली बार हड्डियों को वुजूद बख़्शा और उनमें जान डाली; वही दोबारा उनको ज़िंदगी बख़्शेगा। वह पूरी क़ुदरत रखता है। उसके लिए सब कुछ आसान है। बदन के अंश और हड्डियों के कण जहां कहीं भी बिखरे हों उनका एक-एक कण उसके इल्म में है। वह हर तरह बनाने पर क़ुदरत रखता है। सोचना चाहिए कि जिसने नुत्फ़े (वीर्य) को बहुत-से हालात से गुज़ार कर जीती-जागती तस्वीर देकर रूह डाल दी भला उसके लिए यह कैसे मुम्किन है कि वह मुर्दों को जिंदा न कर सके।

اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى

अ लै स ज़ालि क बिक़ादिरिन अ़ला ऐंयुह्यियल मौता०

इंसानी समझ का तकाज़ा तो यह है कि पहली बार अदम (न होना) से वुजूद बख़्शने के बाद दोबारा ज़िंदगी देना आसान है। सूरः रूम में फ़रमाया :

وَهُوَ الَّذِىْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ

व हुवल्लज़ी यब्दउल ख़ल क़ सुम्म म युईदुहू व हु व अह्वनु अ़लैह०

'और वही है जो पहली बार पैदा करता है, फिर उसको दोबारा पैदा कर देगा और यह (दोहराना) इसके लिए (पहली बार पैदा करने से) ज़्यादा आसान है।

यानी तुम खुद ही समझ लो कि जिसने पहली बार बिना मिसाल, नक़्शे और ख़ाके के वुजूद बख़्श दिया; वह दोबारा पैदा करने पर क्योंकर क़ुदरत न रखेगा। गो उसके लिए पहली पैदाइश और दूसरी पैदाइश सब बराबर है।[1] लेकिन तुम्हारी समझ के एतबार से पहली बार पैदा करने से दूसरी बार दोहरा देना आसान होना चाहिए। यह अजीब बात है कि जिसने पहली बार वुजूद बख़्शा वह मौत देकर दोबारा ज़िंदा न कर सके, कुछ तो समझो। सूरः अह्क़ाफ़ में फ़रमायाः

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْىَ
بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ

अ व लम यरौ अन्नल्ला हल्लज़ी ख़ ल क़स्समावाति वल् अर्ज़ि व लम यअ् य बिख़ल्क़िहिन्न न बिक़ादिरिन अ़ला अंय्युहियूयल मौता बला-इन्नहु अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर०

1. बुख़ारी

'क्या नहीं देखते कि वह अल्लाह जिसने बनाये आसमान व ज़मीन और उनके बनाने से वह थका नहीं, वह क़ुदरत रखता है कि मुर्दों को ज़िंदा कर दे। ज़रूर! वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।'

यानी जिसने आसमानों और ज़मीन जैसी बड़ी-बड़ी चीज़ें सिर्फ़ अपनी क़ुदरत से फ़रमा दीं, क्या इसपर क़ुदरत नहीं रखता कि मुर्दों को ज़िंदा करे। बिला शुबहा इसपर वह ज़रूर क़ादिर (क़ुदरत रखने वाला) है। सूरः हाम-मीम सज्दा में फ़रमायाः

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ
وَرَبَتْ ۭ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۭ اِنَّهٗ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

व मिन आयातिही इन्न क तरल अर ज़ ख़ाशिअ़तन फ़ इज़ा अन्ज़ल्ना अ़लैहल माअह तज़्ज़त व रबत अह्याहा ल मुहिइल मौता। इन्नहू अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर०

'और बहुत-सी इसकी निशानियों में से एक यह है कि तू ज़मीन को देखता है; दबी पड़ती है। फिर जब हम इस पर पानी बरसाते हैं वह उभरती है। बेशक जिसने इस ज़मीन को ज़िंदा कर दिया है, वही मुर्दों को ज़िंदा करने वाला है। बेशक वह हर चीज़ पर क़ादिर है।'

यानी जिस ख़ुदावन्द करीम ने इस ज़मीन को ज़िंदा कर दिया वही मुर्दों के जिस्मों में दोबारा जान डाल देगा।

एक बार एक सहाबी ﷺ ने हज़रत रसूल करीम ﷺ से सवाल किया कि या रसूलल्लाह! अल्लाह तआ़ला मख़्लूक़ को कैसे दोबारा ज़िंदा फ़रमायेगा और (मौजूदा) मख़्लूक़ में इसकी क्या नज़ीर (मिसाल) है? इस पर आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि क्या ऐसा नहीं हुआ कि तुम अपनी क़ौम के जंगल पर उस वक़्त नहीं गुज़रे जबकि ज़मीन सूखी हुई थी, फिर दोबारा उस वक़्त गुज़रे जबकि वह हरी-भरी होकर लहलहाती हुई थी? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि जी हां, ऐसा तो हुआ है। प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया कि यही अल्लाह की निशानी है उसकी मख़्लूक़ में, (यानी मौत के बाद ज़िंदा करने

की एक नज़ीर है) इसी तरह अल्लाह मुर्दों को ज़िंदा फ़रमाएगा[1]।

कुछ जगहों पर क़ुरआन मजीद में क़ियामत के इंकारियों का सवाल नक़ल फ़रमाकर उनका जवाब दलील से नहीं दिया, बल्कि क़ियामत होने का यक़ीन दिलाने के लिए क़ियामत होने के दावे को दोहरा दिया है। चुनांचे सूरः साफ़्फ़ात में पहले इंकार करने वालों की बात नक़ल फ़रमायी। फिर जवाब में दावे को दोहरा दिया। चुनांचे इर्शाद है :

ءَ اِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَ اِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ اَوَ اٰبَآءُ نَا الْاَوَّلُوْنَ قُلْ نَعَمْ وَّاَنْتُمْ دَاخِرُوْنَ فَاِنَّمَا هِىَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِىْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ

अ इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबौं व इज़ामन अ इन्न ना लमबऊसून अ व आबाउनल अव्वलून। क़ुल नअ़म व अन्तुम दाख़िरून। फ़ इन्नमा हि य ज़ज्रतूंव्वाहिदतुन फ़ इज़ा हुम यन्ज़ुरून व क़ालू या वैलना हाज़ा यौमुद्दीन। हाज़ा यौमुल फ़स्लिल्लज़ी कुन्तुम बिही तुकज़्ज़िबून।

'क्या जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियां ही हड्डियां हो गये तो क्या हम उठाये जाएंगे? क्या हमारे अगले बाप-दादे भी उठाये जाएंगे? आप फ़रमा दीजिए कि हां, (तुम उठाये जाओगे) और ज़िल्लत की हालत में होगे और कहेंगे कि हाय! हमारी ख़राबी!! यह आ गया बदले का दिन! (जवाब मिलेगा कि) यह है दिन फ़ैसले का जिसको तुम झुठलाते थे।'

सूरः सबा में इर्शाद फ़रमाया :

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ اِنَّكُمْ لَفِىْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِى الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ

व क़ालल्लज़ी न क फ़ रू हल नदुल्लुकुम अ़ला रजुलिं

1. मिश्कात शरीफ़

युनब्बि-उकुम इज़ा मुज़्ज़िक़्तुम कुल ल मुमज़्ज़क़िन इन्नकुम लफ़ी खल्क़िन जदीद। अफ़्त र अ़लल्लाहि कज़िबन अम बिही जिन्नः। बलिल्लज़ी न ला युअ्मिनू न बिल आख़िरति फ़िल अ़ज़ाबि वज़्ज़लालिल बईद।

'और कहने लगे काफ़िर- क्या हम बतलाएं तुमको एक मर्द जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम फट कर ज़र्रा-ज़र्रा से रेज़े (कण) हो जाओगे। तुमको फिर नये सिरे से बनना है। क्या बना लाया है अल्लाह पर झूठ या उसको जुनून है? कुछ भी नहीं। लेकिन जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, आफ़त में हैं और गुमराही में दूर जा पड़े हैं।'

हासिल यह है कि क़ियामत हक़ है। अल्लाह तआ़ला की जब मंशा होगी; सूर फूंक दिया जाएगा। क़ियामत आ मौजूद होगी। तो कोई भी उसको झुठलाने वाला न होगा। उसके आने का वक़्त अल्लाह तआ़ला के इल्म में मुक़र्रर है। लोगों के एतराज़ करने से अल्लाह तआ़ला वक़्त से पहले ज़ाहिर न फ़रमायेंगे। सूरः सबा में यह भी इर्शाद है :

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ
لَّاتَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ط

व यक़ूलू न मता हाज़ल् वअ़्दु इन कुन्तुम सादिक़ीन। क़ुल लकुम मीआ़दु यौमिल्ला तस्तअ्ख़िरू न अ़न्हु साअ़तौं वला तस्तक़्दिमून।

'और वे कहते हैं कि यह वादा कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो। आप कह दीजिए कि तुम्हारे लिए वादा है एक दिन का। न एक घड़ी इससे लेट किये जाओगे और न पहले।'

क़ियामत की निशानियां इस नाचीज़ ने एक किताब में जमा कर दी हैं जो **'रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पेशीनगोइयां'** के नाम से छप चुकी हैं इसलिए क़ियामत की निशानियों को उसी में पढ़ लें। अब उन लोगों का मुख़्तसर हाल लिखकर जिन पर क़ियामत क़ायम होगी,

क़ियामत के हालात लिखना शुरू करता हूँ।

وَاللّٰهُ وَلِیُّ التَّوْفِيْقِ وَهُوَ خَيْرُعَوْنٍ وَّخَيْرُ رَّفِيْقٍ

वल्लाहु वलीयुत्तौफ़ीक़ि व हु व ख़ैरु औनिउँ व ख़ैरु रफ़ीक़।

क़ियामत किन लोगों पर क़ायम होगी?

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द ﷺ से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत सबसे बुरी मख़्लूक़ पर क़ायम होगी। यह भी इर्शाद फ़रमाया कि उस वक़्त तक क़ियामत क़ायम न होगी जब तक ज़मीन में अल्लाह-अल्लाह किया जाता रहेगा। यह भी इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत किसी ऐसे शख़्स पर क़ायम न होगी जो अल्लाह-अल्लाह कहता होगा।[1]

एक लम्बी हदीस में है कि (चूंकि किसी मुसलमान की मौजूदगी में क़ियामत क़ायम न होगी। इसलिए दुनिया के इसी दिन व रात के होते हुए) अचानक अल्लाह तआ़ला एक उम्दा हवा भेज देंगे जो मुसलमानों की बग़लों में लगकर हर मोमिन और मुस्लिम की रूह क़ब्ज़ कर लेगी और सबसे बुरे लोग बाक़ी रह जाएंगे जो (सबके सामने बेहयाई से) गधों की तरह औरतों से ज़िना करेंगे।[2]

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि प्यारे नबी ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि दज्जाल को क़त्ल करने के बाद हज़रत ईसा ﷺ सात वर्ष लोगों में रहेंगे। इस दौर में दो आदमियों के बीच ज़रा दुश्मनी न होगी। फिर अल्लाह तआ़ला मुल्क शाम की तरफ़ से एक ठंढी हवा भेज देंगे, जिसकी वजह से तमाम मोमिन ख़त्म हो जाएंगे (और) ज़मीन पर कोई भी ऐसा शख़्स बाक़ी न रहेगा, जिसके दिल में ख़ैर का (या फ़रमाया ईमान का)

1. मुस्लिम शरीफ़
2. मिश्कात शरीफ़

कोई ज़र्रा होगा। यहां तक कि अगर तुम (मुसलमानों में से) कोई शख़्स किसी पहाड़ के अन्दर (खोह में) दाख़िल हो जाएगा, तो वह हवा वहां भी दाख़िल होकर उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेगी।

इसके बाद सबसे बुरे लोग रह जाएंगे (जो बुरे करतूतों और शरारत की तरफ़ बढ़ने में) हल्के परिंदों की तरह (तेज़ी से उड़ने वाले) होंगे और (दूसरों का ख़ून बहाने और जान लेने में) दरिंदों-जैसे अख़्लाक़ वाले होंगे। न भलाई को पहचानते होंगे, न बुराई को बुराई समझते होंगे। उनका यह हाल देखकर इंसानी शक्लों में शैतान उनके पास आकर कहेगा कि (अफ़सोस! तुम कैसे हो गये) तुम्हें शर्म नहीं आती (कि अपने बाप-दादों को छोड़ बैठे)। वे उससे कहेंगे कि तू ही बता हम क्या करें? इसलिए वे उनको बुत परस्ती को तालीम देगा (और वे बुत की पूजा करने लगेंगे) वे इसी हाल में होंगे (यानी क़त्ल व ख़ून, बिगाड़-फ़साद और बुत परस्ती में पड़े होंगे) और उनको ख़ूब रोज़ी मिल रही होगी और अच्छी ज़िंदगी गुज़र रही होगी कि सूर फूंक दिया जाएगा। सूर की आवाज़ सब ही सुनेंगे। जो-जो सुनता जाएगा (डर की वजह से, हैरान होकर) एक तरफ़ को गरदन झुका देगा और दूसरी तरफ़ को उठा देगा।

फिर फ़रमाया कि सबसे पहले जो शख़्स उसकी आवाज़ सुनेगा, वह वह होगा जो ऊटों को पानी पिलाने का हौज़ लीप रहा होगा। वह शख़्स सूर की आवाज़ सुनकर बेहोश हो जाएगा और फिर सब लोग बेहोश हो जाएंगे। फिर ख़ुदा एक बारिश भेजेगा जो ओस की तरह होगी, उससे आदमी उग जाएंगे (यानी क़ब्रों में मिट्टी के जिस्म बन जाएंगे)। फिर दोबारा सूर फूंका जाएगा तो अचानक सब खड़े देखते होंगे। इसके बाद एलान होगा कि ऐ लोगो! चलो अपने रब की तरफ़ और फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि इनको ठहराओ। इनसे सवाल होगा। फिर एलान होगा कि (इस सारे मज्मे से) दोजख़ियों को अलग कर दो। इसपर पूछा जाएगा (अल्लाह जल्ल ल शानुहू से) कि किस तादाद में से कितने दोज़ख़ी निकाले जाएं, जवाब मिलेगा कि हर हज़ार में 999 दोज़ख़ी निकालो। इसके बाद आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि यह दिन होगा कि जिसके डर और दहशत से, बच्चे बूढ़े हो

जाएंगे और यह दिन बड़ा ही मुसीबत का होगा।[1]

इन हदीसों से मालूम हुआ कि क़ियामत क़ायम होने के वक़्त कोई मुसलमान दुनिया में मौजूद न होगा। इस बड़ी मुसीबत से अल्लाह तआला इन इंसानों को बचाये रखेंगे, जिनके दिल में ज़रा भी ईमान होगा।

क़ियामत की तारीख़ की ख़बर नहीं दी गई

अल्लाह तआला ही जानते हैं कि क़ियामत कब आयेगी। क़ुरआन शरीफ़ में बताया गया है कि क़ियामत अचानक आ जाएगी। बाक़ी उसकी मुक़र्ररा तारीख़ की ख़बर नहीं दी गई। एक बार हज़रत जिब्रील ﷺ ने इंसानी शक्ल में आकर मज्लिस में हाज़िर लोगों की मौजूदगी में प्यारे नबी ﷺ से पूछा कि क़ियामत कब क़ायम होगी, तो उनके इस सवाल के जवाब में प्यारे नबी ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि ——

مَاالْمَسْئُوْلُ عَنْهَا بِاَعْلَمَ مِنَ السَّائِلِ ط (بخاری ومسلم)

मल मस्ऊलु अ़न्हा बि अअ़्लम मिनस्साइल।

—बुख़ारी व मुस्लिम

'इस बारे में सवाल करने वाले से ज़्यादा उसको इल्म नहीं है जिस से सवाल किया गया है।'

यानी इस बारे में हम और तुम दोनों बराबर हैं। न मुझे उसके क़ायम होने के वक़्त का इल्म है और न तुमको है। एक बार जब लोगों ने प्यारे नबी ﷺ से पूछा कि क़ियामत कब आयेगी तो अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ से हुक्म हुआः

قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّىْ لَايُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ط ثَقُلَتْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاتَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ط يَسْئَلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِىٌّ عَنْهَا قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَايَعْلَمُوْنَ ط

1. मुस्लिम शरीफ़

क़ुल इन्नमा इल्मुहा इन द रब्बी ला युजल्लीहा लिवक़्तिहा इल्ला हू। सक़ुलत फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ला तअ्तीकुम इल्ला बग़्तः। यस्अलून क क अन्न न क हफ़ीय्युन अ़न्हा क़ुल इन्नमा इल्मुहा इन्दल्लाहि व ला किन्न न अक्सरन्नासि ला यअ्लमून। -अल-आअ्राफ़

'आप फ़रमा दीजिए कि इसका इल्म सिर्फ़ मेरे रब ही के पास है। उसके वक़्त पर उसको सिवाए अल्लाह तआ़ला के कोई ज़ाहिर न करेगा। आसमान व ज़मीन में बड़ी भारी घटना होगी। वह तुम पर बिल्कुल ही अचानक आ पड़ेगी। वे आपसे इस तरह पूछते हैं जैसे गोया आप उसकी खोज कर चुके हैं। आप फ़रमा दीजिए कि उसका इल्म सिर्फ़ अल्लाह के पास है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।'

क़ियामत अचानक आ जाएगी

सूरः अंबिया में फ़रमायाः

بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَاهُمْ يُنْظَرُوْنَ

बल तअ्तीहिम बग़्ततन फ़तबअ़तुहुम फ़ ला यस्ततीऊ न रद्दहा व ला हुम युन्ज़रून।

'बल्कि वह आ जाएगी अचानक उनपर और उनको बदहवास कर देगी। न उसके हटाने की उसको क़ुदरत होगी और न उनको मोहलत दी जाएगी।'

इस मुबारक आयत से और इससे पहली आयत से मालूम हुआ कि क़ियामत अचानक आ जाएगी। हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि अलबत्ता क़ियामत ज़रूर इस हालत में क़ायम होगी कि दो आदमियों ने अपने दर्मियान (ख़रीदने-बेचने के लिए) कपड़ा खोल रखा होगा और अभी मामला तय करने और कपड़ा लपेटने भी न पायेंगे कि क़ियामत क़ायम होगी। एक इंसान अपनी ऊंटनी का दूध निकाल कर जा रहा होगा कि पी भी न सकेगा और क़ियामत यक़ीनन इस हाल में क़ायम होगी कि इंसान अपना

हौज़ लीप रहा होगा और अभी उसमें (मवेशियों को) पानी भी न पिलाने पायेगा और वाक़ई क़ियामत इस हाल में क़ायम होगी कि इंसान अपने मुंह की तरफ़ लुक़्मा उठायेगा और उसे खा भी न सकेगा।[1]

यानी जैसे आजकल लोग कारोबार में लगे हुए हैं, उसी तरह क़ियामत के आने वाले दिन भी लगे होंगे कि अचानक क़ियामत आ पहुंचेगी। जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी, वह जुमे का दिन होगा। प्यारे नबी ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि सब दिनों से बेहतर जुमा का दिन है। उसी दिन वह जन्नत से निकाले गये और क़ियामत जुमा ही के दिन क़ायम होगी।[2]

दूसरी हदीस में है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि जुमा के दिन क़ियामत क़ायम होगी। हर क़रीबी फ़रिश्ता और आसमान और ज़मीन और पहाड़ और समुद्र, ये सब जुमा के दिन से डरते हैं कि कहीं आज क़ियामत न हो जाए।[3]

सूर और सूर का फूंका जाना

क़ियामत की शुरूआत सूर फूंकने से होगी। प्यारे नबी ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि सूर एक सींग है, जिसमें फूंका जाएगा।[1] और यह भी इर्शाद फ़रमाया कि मैं मज़े की ज़िंदगी क्यों कर गुज़ारूंगा, हालांकि सूर फूकने वाले (फ़रिश्ते) ने मुंह में सूर ले रखा है और अपना कान लगा रखा है और माथा झुका रखा है। इस इंतिज़ार में कि कब सूर फूंकने का हुक्म हो।[2] सूरः मुद्दस्सिर में सूर को नाक़ूर फ़रमाया है। चुनांचे इर्शाद है :

فَإِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُورِ فَذَٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَوْمٌ عَسِيرٌ عَلَى الْكَافِرِينَ غَيْرُ يَسِيرٍ

फ़ इज़ा नुक़ि र फ़िन्नाक़ूरि फ़ ज़ालि क यौ म इज़िंय्यौमुन

---

1. बुख़ारी व मुस्लिम
   यह जो मशहूर है कि क़ियामत मुहर्रम की दसवीं तारीख़ को क़ायम होगी, किसी हदीस से साबित नहीं है। मुजम्मअ़ुल बह्हार में इसको मौज़ूअ़ यानी गढ़ी हुई बातों में गिना गया है।
2. मुस्लिम शरीफ़
3. मिश्कात शरीफ़

अ़सीरुन अ़लल्‌काफ़िरी न ग़ैरु यसीर।

'फिर जब नाक़ूर (यानि सूर) फूंका जायेगा तो वह काफ़िरों पर एक सख़्त दिन होगा जिसमें कुछ आसानी न होगी।'

सूरः ज़ुमर में इर्शाद फ़रमाया :

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ط

व नुफ़ि ख फ़िस्सूरि फ़ स इ क़ मन फ़िस्समावाति व मन फ़िल अर्ज़ि इल्ला मन शाअल्लाह। सुम्म म नुफ़ि ख़ फ़ीहि उख़्रा फ़ इज़ा हुम क़िया-मुंय्यन्ज़ुरून।

'और सूर में फूंका जाएगा। सो बेहोश हो जाएंगे। जो भी आसमानों और ज़मीन में है सिवाए उनके जिनका होश में रहना अल्लाह चाहें। फिर दोबारा सूर में फूंका जाएगा तो वह फ़ौरन खड़े हो जाएंगे, हर तरफ़ देखते हुए।'

क़ुरआनी आयतों और नबी की हदीसों में दो बार सूर फूंके जाने का ज़िक्र है। पहली बार सूर फूंका जाएगा तो सब बेहोश हो जाएंगे *(इल्ला मन शअल्लाह)* फिर ज़िंदे तो मर जाएंगे और जो मर चुके थे उनकी रूहों पर बेहोशी की हालत पैदा हो जाएगी। इसके बाद दोबारा सूर फूंका जाएगा तो मुर्दों की रूहें उनके बदनों में वापस आ जाएंगी और जो बेहोश थे उनकी बेहोशी चली जाएगी। उस वक़्त का अ़जीब व ग़रीब हाल देखकर सब हैरत से तकते होंगे और अल्लाह के दरबार में पेशी के लिए तेज़ी के साथ हाज़िर किए जाएंगे। सूरः यासीन में फ़रमाया :

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ـــ هٰذَا مَاوَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ط اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ط

1. मिश्कात शरीफ़
2. मिश्कात शरीफ़

व नुफ़ि ख़ फ़िस्सूरि फ़ इज़ाहुम मिनल अज्दासि इला रब्बिहिम यन्सिलून। क़ालू यावैलना मम ब अ़ स ना मिम मर्क़दिना, हाज़ा मा व अ़ दर्रहमानु व स द क़लमुर्सलून । इन कानत् इल्ला सैहतौं वा हिदतन फ़ इज़ा हुम जमीउल्लदैना मुह्ज़रून।

'और सूर में फूंका जाएगा। बस अचानक वह अपने रब की तरफ़ जल्दी-जल्दी फैल पड़ेंगे। कहेंगे कि हाय! हमारी ख़राबी! किसने हमको उठा दिया, हमारे लेटने की जगह से। (जवाब मिलेगा कि) यह वह माजरा है जिसका रहमान ने वादा किया है और पैग़म्बरों ने सच्ची ख़बर दी। बस एक चिंघाड़ होगी। फिर उसी वक़्त वे सब हमारे सामने हाज़िर कर दिए जाएंगे।'

यानी कोई न छिप कर जा सकेगा। सब अल्लाह के हुज़ूर में मौजूद कर दिए जाएंगे।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ ने फ़रमाया कि प्यारे नबी ﷺ ने पहली बार और दूसरी बार सूर फूंकने की दर्मियानी दूरी बताते हुए चालीस का अ़दद फ़रमाया। मौजूद लोगों ने हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से पूछा कि चालीस क्या? चालीस दिन या चालीस माह या चालीस साल। आंहज़रत ﷺ ने क्या फ़रमाया? इस सवाल के जवाब में हज़रत अबू हुरैरः ﷺ ने अपनी ला-इल्मी ज़ाहिर की और फ़रमाया कि मुझे ख़बर नहीं (या याद नहीं) कि आंहज़रत ﷺ ने सिर्फ़ चालीस फ़रमाया या चालीस साल या चालीस दिन फ़रमाया। दोबारा सूर फूंके जाने के बाद अल्लाह तबारक व तआ़ला आसमान से पानी बरसा देंगे, जिसकी वजह से लोग (क़ब्रों से) उग जाएंगे जैसे (ज़मीन से) सब्ज़ी (उग जाती है)। यह भी फ़रमाया कि इंसान के जिस्म की हर चीज़ गल जाती है यानी मिट्टी में मिलकर मिट्टी हो जाती है सिवाए एक हड्डी के कि वह बाक़ी है। क़ियामत के दिन उसी से जिस्म बना दिए जाएंगे। यह हड्डी रीढ़ की हड्डी है।'[1]

सूरः ज़ुमर की आयत में यह जो फ़रमाया कि सूर फूंके जाने से सब

---

1. बुख़ारी व मुस्लिम की एक हदीस में है कि राई के दाने के बराबर रीढ़ की हड्डी बाक़ी रह जाती है, उसी से दोबारा जिस्म बनेंगे। —अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब

बेहोश हो जाएंगे, सिवाए उनके जिनको अल्लाह चाहे। इसके बारे में तफ़सीर लिखने वालों के कुछ कौल हैं, किसी ने फ़रमाया कि शहीद मुराद हैं। किसी ने कहा कि जिब्रील ﷺ व मीकाईल ﷺ और इसूराफ़ील ﷺ व इज्राईल ﷺ के बारे में फ़रमाया है। किसी ने अ़र्श उठाने वालों को इस छूट में शामिल किया है। इनके अ़लावा और भी क़ौल हैं (अल्लाह ही बेहतर जानता है)। मुम्किन है कि बाद में इन पर भी फ़िना छा जाए, जिसे इस छूट में ब्यान किया जाता है। जैसा कि आयत **'लि मनिल मुल्कल यौम। लिल्लाहिल वाहिदिल क़ह्हार'** की तफ़सीर में साहिबे मआ़लिमुल तंज़ील लिखते हैं कि जब मख़्लूक़ के फ़िना हो जाने के बाद अल्लाह तआ़ला **'लि मनिल मुल्कुल यौम'** (किस का राज है आज?) फ़रमायेंगे, तो कोई जवाब देने वाला न होगा। इसलिए ख़ुद ही जवाब में फ़रमायेंगे: **'लिल्लाहिल वाहिदिल क़ह्हार'** (आज बस अल्लाह का राज है जो तंहा है और क़ह्हार[1] है)

यानी आज के दिन बस उसी एक हक़ीक़ी बादशाह का राज है। जिसके सामने हर ताक़त दबी हुई है। तमाम दुनिया की हुकूमतें और राज इस वक़्त फ़िना हैं।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि बेशक लोग क़ियामत के दिन बेहोश हो जाएंगे और मैं भी उनके साथ बेहोश हो जाऊंगा। फिर सबसे पहले मेरी ही बेहोशी दूर होगी तो अचानक देखूंगा कि मूसा ﷺ अ़र्शे इलाही को एक तरफ़ पकड़े ख़ड़े हैं। मैं नहीं जानता कि वह बेहोश होकर मुझ से पहले होश में आ चुके होंगे या उनपर बेहोशी आयी ही न होगी और वे उनमें से होंगे जिनके बारे में अल्लाह का इर्शाद है **'इल्ला मन शाअ़ल्लाह'** है।

—मिश्कात शरीफ़

कायनात का बिखर जाना

सूर फूंके जाने से न सिर्फ़ ये इंसान मर जाएंगे बल्कि कायनात का

1. ज़बर्दस्त क़हर वाला

निज़ाम ही टूट जाएगा। आसमान फट जाएगा; सितारे झड़ जाएंगे और बेनूर हो जाएंगे; चांद व सूरज की रोशनी ख़त्म कर दी जाएगी; ज़मीन हमवार मैदान बन जाएगी; पहाड़ उड़ते फिरेंगे।

नीचे की आयतों व हदीसों से ये बातें साफ़-साफ़ ज़ाहिर हो रही हैं।

पहाड़ों का हाल

अल्लाह का इर्शाद है :

اَلْقَارِعَةُ ۝ مَاالْقَارِعَةُ ۝ وَمَا اَدْرٰكَ مَاالْقَارِعَةُ ۝ يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۝ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ؕ

अल् क़ारि अ़ तु मल् क़ारिअ़:। व मा अद्रा क मल क़ारिअ़:। । यौ म यकूनुन्नासु कल्फ़राशिल मब्सूसि व तकूनुल जिबालु कल इह्निल मन्फ़ूश।

'वह खड़खड़ाने वाली? क्या है वह खड़खड़ाने वाली? और तू क्या समझा? क्या है वह खड़खड़ाने वाली? जिस दिन लोग परवानों की तरह और पहाड़ धुनी हुई रंगीन ऊन की तरह होंगे।'

'अल क़ारिअः' (खड़खड़ाने वाली) क़ियामत को फ़रमाया है। यह नाम इसका इसलिए रखा गया कि वह दिलों को घबराहट से और कानों को सख़्त आवाज़ से खड़खड़ा देगी। उस दिन इंसान परवानों की तरह बेचैनी के साथ, बदहवास होकर महशर की तरफ़ जमा होने के लिए चल पड़ेंगे। ऐसे बिखरे हुए अन्दाज़ में चलेंगे कि परवाने अंधाधुंध चिराग़ पर गिरते जाते हैं और पहाड़ों का यह हाल होगा कि जैसे धुनिया ऊन या रूई को धुनकर एक-एक फाया उड़ा देता है। उसी तरह पहाड़ बिखर कर उड़ जाएंगे। सूरः मुर्सलात में फ़रमाया : وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ (مرسلات)

व इज़ल जिबालु नुसिफ़त।

'और जब पहाड़ उड़ा दिए जाएंगे'

सूरः नबा में फ़रमाया :

وَسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا (النبا)

व सुय्यि रतिलजिबालु फ़कानत सराबा।

'और चलाये जाएंगे पहाड़ तो हो जाएंगे चमकते हुआ रेत'।

सूरः नह्ल में फ़रमाया :

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَهِيَ تَمُرُّ مَرَّالسَّحَابِ ط صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِىٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَىْءٍ ط

व तरल जिबा ल तह्सबुहा जामिदतन व हि य तमुर्रु मर्रस्सहाब। सुन् अ़ल्लाहिल्लज़ी अत्क़ न कुल्ल ल शैइ।

'और तू देखे पहाड़ों को तो यह समझते हुए कि वे जमे हुए हैं। हालांकि वे चलेंगे बादल की तरह। कारीगरी अल्लाह की जिसने ठीक किया हर चीज़ को।'

यानी ये बड़े-बड़े पहाड़ जिनको तुम इस वक़्त देख कर यह ख़्याल करते हो कि ये ऐसे जमे हुए हैं कि कभी अपनी जगह से जुंबिश भी न खा सकेंगे। उन पर एक दिन ऐसा आने वाला है कि यह रूई के गालों की तरह उड़े-उड़े फिरेंगे और बादल की तरह तेज़ रफ़्तार होंगे। अल्लाह ने हिकमत के मुताबिक़ हर चीज़ को दुरुस्त किया। उसी ने आज पहाड़ों को ऐसा बोझल, भारी और ठहरा हुआ बनाया कि ज़मीन को भी हिलने से रोके हुए है।

وَاَلْقٰى فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَبِكُمْ

व अल्क़ा फ़िल अर्ज़ि र वा सि य अन् तमी द बिकुम।

'फिर क़ियामत के दिन उनका मालिक और पैदा करने वाला ज़र्रा-ज़र्रा करके उड़ा देगा। यह सब उस कारीगर की कारीगरी है, जिसका कोई काम हिकमत से ख़ाली नहीं।' सूरः वाक़िअ़ः में फ़रमाया :

وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۝ فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا

व बुस्सतिल जिबालु बस्सा फ़ कानत हबाअम मुंबस्सा।

'और रेज़ा-रेज़ा हो जाएंगे पहाड़। फिर हो जाएंगे उड़ता हुआ ग़ुबार।'

आसमान व ज़मीन

सूरः ताहा में फ़रमाया :

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّىْ نَسْفًا فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا
لَّاتَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا ط

व यस्अलू न क अ़निल जिबालि फ़कुल यन्ि ज़्हा रब्बी नस्फ़न फ़ य ज़ रुहा क़ाअ़न सफ़सफ़ल्ला तरा फ़ीहा इ व जौं व ला अम्ता।

'और वे आप से पहाड़ों के बारें में पूछते हैं। आप फ़रमा दीजिए कि मेरा रब उनको अच्छी तरह उड़ा देगा। फिर ज़मीन को छोड़ देगा चटियल मैदान। न देखेगा तू उसमें मोड़ और टीला।'

यानी क़ियामत के दिन पहाड़ उड़ा दिए जाएंगे और ज़मीन साफ़ और हमवार बना दी जाएगी। कोई टीला उस पर न रहेगा। सूरः इब्राहीम में फ़रमाया :

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ط

यौ म तुबद्दलुल अर्ज़ु ग़ैरल अर्ज़ि वस्समावातु व ब र ज़ू लिल्लाहिल वाहिदिल क़ह्हार।

'जिस दिन बदल दी जाए इस ज़मीन से दूसरी ज़मीन और बदल जाएं आसमान और लोग निकल खड़े होंगे अल्लाह वाहिद क़ह्हार के सामने।'

इस आयत से मालूम हुआ कि आसमान व ज़मीन क़ियामत के दिन बदल दिए जाएंगे और अपनी इस मौजूदा शक्ल पर बाक़ी न रहेंगे। इस आयत के बारे में हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने आंहज़रत ﷺ से सवाल किया कि जब आसमान व ज़मीन बदले जाएंगे तो उस दिन लोग कहां

होंगे? इसके जवाब में फ़ख़्रे दो आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि पुलसिरात पर होंगे।[1]

इस रिवायत से मालूम होता है कि इस आयत में जो आसमान व ज़मीन के बदले जाने का ज़िक्र है, वह हिसाब-किताब होने के बाद उस वक़्त होगा, ज़बकि लोग जन्नत व दोज़ख़ में भेजे जाने के लिए पुलसिरात पर पहुंच जाएंगे।

पहली आयत में जो ज़िक्र हुआ कि ज़मीन हमवार और साफ़ मैदान कर दी जाएगी, वह हिसाब व किताब शुरू होने से पहले का ज़िक्र है। हज़रत सह्ल बिन सअ़्द ؓ ने रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन लोग ऐसी ज़मीन पर जमा किए जाएंगे जिसका रंग सफ़ेद होगा लेकिन सफ़ेदी का झुकाव मटियाले रंग की तरफ़ होगा। उस वक़्त ज़मीन मैदे की रोटी-जैसी होगी। किसी की उसमें निशानी न होगी।[2]

जब क़ियामत होगी तो आसमान में यह तब्दीली होगी कि उसके सितारे झड़ पड़ेंगे और बेनूर हो जाएंगे और चांद-सूरज की रौशनी लपेट दी जाएगी, नीज़ आसमान फट पड़ेगा और उसमें दरवाज़े हो जाएंगे। सूरः नबा में फ़रमाया :

يَّوۡمَ يُنۡفَخُ فِى الصُّوۡرِ فَتَاۡتُوۡنَ اَفۡوَاجًا وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتۡ اَبۡوَابًا

यौ म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि फ़तअ़्तू न अफ़्वाजौं व फ़ुतिहतिस्समाउ फ़कानत अब्वाबा।

'जिस दिन फूंका जाएगा सूर में तो तुम चले जाओगे झुण्ड के झुण्ड और खोला जाएगा आसमान तो हो जाएंगे उसमें दरवाज़े।'

यानी आसमान फटकर ऐसा हो जाएगा कि गोया दरवाज़े ही दरवाज़े हैं।

सूरः मुर्सलात में है : وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتۡ

व इज़स्समाउ फ़ुरिजत।

'और जब आसमान में झरोखे पड़ जाएंगे।'

सूरः फ़ुर्क़ान में फ़रमाया :

1. मुस्लिम शरीफ़
2. बुख़ारी

وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا۝

व यौ म त शक़्क़क़ुस्समाउ बिलग़मामि व नुज़्ज़िल लल मलाइकतु तन्ज़ीला।

'जिस दिन फट जाए आसमान बादल से और उतार दिए जाएं फ़रिश्ते लगातार।'

सूरः हाक़्क़ः में फ़रमाया :

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ، وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً، فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ، وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ، وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ۝

फ़ इज़ा नुफ़ि ख़ फ़िस्सूरि नफ़्ख़तुंव्वाहिदतुँ व हुमिलतिल अर्ज़ु वलजिबालु फ़ दुक्कतौं दक्कतौंवाहिदतन फ़यौम इज़िंव क़ अ़ तिल वाक़िअतः वन्शक़्क़तिस्समाउ फ़ हि य यौम इज़िंव्वाहियः वल म ल कु अ़ला अर्जाइहा। व यह्मिलु अ़र श रब्बि क फ़ौक़हुम यौ म इज़िन समानियः -अल-हाक़्क़ः

'फिर जब सूर में फूंक मारी जाए। एक फूंक और उठा दिए जाएं (अपनी जगह से) ज़मीन और पहाड़ फिर दोनों एक बार रेज़ा-रेज़ा कर दिए जाएंगे तो उस दिन हो पड़ने वाली हो पड़ेगी (यानी क़ियामत) और आसमान फट पड़ेगा तो वह उस दिन बोदा होगा और फ़रिश्ते आसमान के किनारों पर आ जाएंगे और आपके परवरदिगार के अ़र्श को उस दिन आठ फ़रिश्ते उठाये होंगे।'

जिस वक़्त दर्मियान से आसमान फटने लगेगा तो फ़रिश्ते उसके किनारे पर चले जाएंगे।

सूरः रहमान में इर्शाद फ़रमाया :

فَإِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ۝

फ़ इज़न शक़्क़तिस्समाउ फ़ कानत वर्दतन कद्दिहान।

'बस जब आसमान फट जाएगा तो ऐसा लाल हो जाएगा जैसे लाल नरी।'

और सूरः मआ़रिज में फ़रमाया है कि आसमान उस दिन 'मुह्‌ल' यानी पिघले हुए तांबे की तरह होगा यानी फटने के साथ उसका रंग भी बदल जाएगा और लाल हो जाएगा। सूरः तूर में फ़रमाया है कि उस दिन आसमान कपकपायेगा। يَوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا (طور)

यौ म तमूरुस्समाउ मौरा।

यानी कपकपा कर फट पड़ेगा।

सूरः इन्शिक़ाक़ में फ़रमाया :

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ○ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ○ وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ○
وَاَلْقَتْ مَافِيْهَا وَتَخَلَّتْ○ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ○

इज़स्समाउन शक़्क़त। व अज़िनत लिरब्बिहा व हुक़्क़त।
व इज़ल अर्ज़ु मुद्‌दत। व अलक़त मा फ़ीहा व तख़ल्लत।
व अज़िनत लिरब्बिहा व हुक़्क़त०

'जब आसमान फट जाएगा और अपने रब का हुक्म सुन लेगा और वह इसी लायक़ है और जब ज़मीन खींच कर बढ़ा दी जाएगी और अपने अन्दर की चीज़ों को बाहर डाल देगी और ख़ाली हो जाएगी और अपने रब का हुक्म सुन लेगी और वह इसी लायक़ है।'

आसमान को फटने का और ज़मीन को खींच कर बढ़ जाने और फैल जाने का हुक्म उनके रब की तरफ़ से होगा। दोनों अल्लाह की मख़्लूक़ हैं। मख़्लूक़ को ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) का हुक्म सुनना और अ़मल करना ज़रूरी बात है। ये दोनों भी अल्लाह तआ़ला के हुक्म को पूरा करेंगे और उनको यही लायक़ भी है कि अपने पैदा करने वाले और मालिक के आगे झुक जाएं और फ़रमांबरदारी में तनिक-भी कहें-सुनें नहीं।

ज़मीन खींच कर रबड़ की तरह बढ़ा दी जाएगी और इमारत और पहाड़ वग़ैरह सब बराबर कर दिये जाएंगे ताकि एक हमवार बराबर ज़मीन पर सब अगले-पिछले एक साथ खड़े हो सकें और कोई पर्दा-रुकावट बाक़ी न रहे, ज़मीन अपने भीतर की चीज़ों को बाहर डाल देगी और ख़ाली हो जाएगी यानी वह अपने अंदर से ख़ज़ाने और मुर्दे और मुर्दों के हिस्से उगल डालेगी और उन तमाम चीज़ों से ख़ाली हो जाएगी, जिनका तअ़ल्लुक़ बंदों के आ़माल का बदला मिलने से होगा।

चांद, सूरज और सितारे

जब सूर फूंका जाएगा तो चांद, सूरज और सितारे भी अपने हाल पर बाक़ी न रहेंगे। सूरः तकवीर में फ़रमाया :

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ○ وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ط

इज़श्शम्सु कुव्विरत व इज़न्नुजूमुन क द रत।

'जब सूरज बेनूर हो जाएगा और जब सितारे टूटकर गिर पड़ेंगे।'

सूरः इन्फ़ितार में फ़रमाया :

إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ○ وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ○

इज़स्समाउन फ त रत व इज़ल कवाकिबुन त स रत०

इन आयतों से आसमान का फटना और सितारों का झड़कर गिरना ज़ाहिर हुआ। सूरः मुर्सलात में फ़रमाया है कि उस दिन सितारों की रौशनी ख़त्म कर दी जाएगी। चुनांचे इर्शाद है : فَإِذَا النُّجُومُ طُمِسَتْ

फ़इज़न्नुजूमु तुमिसत।

'सो जब सितारे बेनूर हो जाएंगे।'

सूरः क़ियामः में फ़रमाया :

يَسْئَلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ○ فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ وَخَسَفَ الْقَمَرُ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ○ يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ○ كَلَّا لَاوَزَرَ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ نِالْمُسْتَقَرُّ○

यस्अलु ऐय्या न यौमुल क़ियामः। फ़ इज़ा बरिक़ल ब स रु व ख़ स फ़ल क़ म रु व जुमिअ़श्शम्सु वल क़मर। यक़ूलुल इन्सानु यौ म इज़िन ऐनल मफ़र्र। कल्ला, ला व ज़र। इला रब्बि क यौ म इज़ि-निल-मुस्तक़र्र।

'पूछता है (इंसान) कब होगा दिन क़ियामत का पस जब चुंधियाने लगे आंख और बेनूर हो जाए चांद और जमा किए जाएं चांद और सूरज। उस दिन कहेगा इंसान, कहां चला जाऊं भागकर। हरगिज़ नहीं, कहीं पनाह की जगह नहीं। उस दिन सिर्फ़ तेरे रब की तरफ़ जा ठहरना है।'

इन आयतों से साफ़ हो गया कि क़ियामत के दिन चांद भी बेनूर हो जाएगा। चांद के बेनूर होने का ज़िक्र फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया, **'व जुमिअ़श्शम्सु वल क़मर'** (सूरज और चांद जमा किए जाएंगे) यानी सिर्फ़ चांद ही बेनूर न होगा बल्कि बेनूर होने का ख़ास तौर से इसलिए ज़िक्र फ़रमाया कि अ़रब के लोगों को चांद का हिसाब रखने की वजह से उसका हाल देखने का ज़्यादा इहतमाम था।

हज़रत अबू हुरैरः ؓ रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन चांद और सूरज दोनों लपेट दिये जाएंगे।[1] यानी उनकी रौशनी लपेट दी जाएगी। जिसकी वजह से रौशनी न फैल सकेगी; न किसी चीज़ पर पड़ेगी।

बैहक़ी ने किताबुल बअ़्स वन्नुशूर में हज़रत हसन बसरी (रह०) से रिवायत की है कि हज़रत अबू हुरैरः ؓ ने आंहज़रत ﷺ का इर्शाद गरामी नक़ल करते हुए फ़रमाया कि सूरज और चांद बेनूर करके दो टुकड़े बनाकर क़ियामत के दिन दोज़ख़ में डाल दिए जाएंगे। यह सुनकर हज़रत हसन (रह०) ने सवाल किया कि इनकी क्या वजह है? हज़रत अबू हुरैरः ؓ ने

फ़रमाया कि मैं आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ का फ़रमान नक़ल कर रहा हूं (इससे ज़्यादा मुझे इल्म नहीं) यह सुनकर हसन रह० ख़ामोश हो गये।[1]

इन्सानों का क़ब्रों से निकलना

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन उमर ؓ रिवायत फ़रमाते हैं कि प्यारे नबी ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि सबसे पहले ज़मीन फटकर मुझे ज़ाहिर करेगी; फिर अबू बक्र ؓ व हज़रत उमर ؓ क़ब्रों से ज़ाहिर होंगे। फिर बक़ीअ़ (क़ब्रिस्तान) में जाऊंगा। इसलिए वे (क़ब्रों से निकल कर) मेरे साथ जमा कर दिए जाएंगे। फिर मैं मक्का वालों का इन्तिज़ार करूंगा, (यहां तक कि वे भी क़ब्रों से निकल कर मेरे साथ हो जाएंगे) फिर मैं हरमैन (वालों) के दर्मियान (महश्र में) जमा हो जाऊंगा।[2]

जो लोग क़ब्रों में दफ़न हैं (मुस्लिम हों या काफ़िर) वे तो दूसरी बार सूर की आवाज़ सुनकर क़ब्रों से निकल खड़े होंगे और जो लोग आग में जला दिये गये या समुद्रों में बहा दिए गये या जिनको दरिंदों ने फाड़ खाया था, उनकी

1. आसमान, ज़मीन, चांद, सूरज और सितारों के बारे में पुराने फ़लसफ़े और आज की साइंस के कुछ ख़्यालात है। ये सब उन लोगों ने ख़ुद तज्वीज़ कर लिए हैं, जिनमें तब्दीलियां तज्वीज़ करते रहते हैं। आज एक नज़रिया है, कल दूसरी बात कह देंगे। अटकलों, ख़्यालों और गुमानों के चारों तरफ़ इनके नज़रिए घूमते रहते हैं। फिर ताज्जुब यह है कि क़ुरआन व हदीस में इन चीज़ों के पिछले या अगले जो हालात ज़िक्र किये गये हैं, उनके मान लेने में इसलिए झिझकते हैं कि अपने गढ़े हुए नज़रियों के ख़िलाफ़ नज़र आते हैं, जिसने इन चीज़ों को वुजूद बख़्शा है। उससे ज़्यादा उसकी मख़लूक़ का जानने वाला कौन हो सकता है? बेशक वे लोग बड़े बे-सूझ-बूझ के और हक़ के रास्ते से हटे हुए हैं। अल्लाह जो सबको पैदा करने वाला और सबका मालिक है, उसकी ख़बर को अपने तज्वीज़ किए हुए नज़रियों पर परखते हैं। क़ियामत आने के सिलसिले में दुनिया के बिगड़ने और बदलने के जिन हालात का ज़िक्र क़ुरआन व हदीस में किया गया है, बेशुब्हा सही और हक़ है। जो लोग अपने तज्वीज़ किए हुए नज़रिए की बुनियाद पर क़ुरआन व हदीस को न मानें, खुली गुमराही और खुली नादानी में पड़े हुए हैं। इंय्यत्तबिऊ न इल्लज़्ज़ुन्न न वमा तहवल अन्फ़ुसु लक़द जा अहुम बिर्रब्बिहिमुलहुदा।
2. तिर्मिज़ी शरीफ़

रूहों को भी जिस्म दिया जाएगा और ज़रूर ही वे भी महशर में हाज़िर होंगे।

क़ब्रों से नंगे और बे-ख़त्ना के निकलेंगे

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि मैंने प्यारे नबी ﷺ से सुना कि क़ियामत के दिन लोग नंगे पांव, नंगे बदन, बे-ख़त्ना के जमा किए जाएंगे। मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! क्या मर्द व औरत सब (नंगे होंगे और) एक दूसरे को देखते होंगे। (अगर ऐसा हुआ तो बड़े शर्म की बात होगी) इसके जवाब में प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया कि ऐ आइशा! क़ियामत की सख़्ती इतनी ज़्यादा होगी (और लोग घबराहट और परेशानी से ऐसे बेहाल होंगे) कि किसी को दूसरे की तरफ़ देखने का ध्यान ही न होगा।[1]

दूसरी हदीस में है कि प्यारे नबी ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक क़ियामत के दिन नंगे पांव, नंगे बदन, बे-ख़त्ना जमा किये जाओगे। यह फ़रमाकर क़ुरआन मजीद की आयत **'क मा बदअ्ना अव्व ल ख़ल्क़िन नुइदुहू'** (हमने जिस तरह पहली बार पैदा करने के वक़्त शुरूआत की थी, उसको दोबारा इसी तरह लौटाएंगे) तिलावत फ़रमाई। फिर फ़रमाया कि सबसे पहले क़ियामत के दिन इब्राहीम عليه السلام को कपड़े पहनाये जाएंगे।[2]

उलमा ने लिखा है कि हज़रत इब्राहीम عليه السلام को इसलिए सबसे पहले लिबास पहनाया जाएगा कि उन्होंने सबसे पहले फ़क़ीरों को कपड़े पहनाये थे या इसलिए कि वे अल्लाह तआला की तरफ़ दावत देने की वजह से सबसे पहले नंगे किये गये जबकि काफ़िरों ने उनको आग में डाला था।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رضي الله عنه से रिवायत है आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि सबसे पहले जिसको कपड़े पहनाये जाएंगे, वह इब्राहीम عليه السلام होंगे। अल्लाह तआला फ़रमायेंगे कि मेरे दोस्त को पहनाओ। चुनांचे जन्नत के कपड़ों में से दो बारीक और नर्म-सफ़ेद कपड़े उनको पहनाने के लिए लाए जाएंगे। उनके बाद मुझे कपड़े पहनाये जाएंगे।

---

1. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ 2. मिश्कात शरीफ़

क़ब्रों से उठकर मैदाने हश्र में जमा होने के लिए चलना

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन लोग तीन क़िस्म से जमा किये जाएंगे-- (1) एक जमाअ़त पैदल, (2) दूसरा सवार और (3) तीसरी वह जमाअ़त होगी जो अपने चेहरों के बल चलेंगे। सवाल किया गया कि या रसूलल्लह! वे लोग चेहरों के बल क्यों कर चलेंगे? जवाब में सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक जिस ज़ात पाक ने उनको क़दमों पर चलाया, वह इसपर क़ुदरत रखता है कि उनको चेहरों के बल चला दें। फिर फ़रमाया कि ख़बरदार वे (चेहरों के बल इस तरह चलेंगे) कि ज़मीन के उभरे हुए हिस्से और कांटों तक से अपने चेहरों के ज़रिए बचाव करेंगे।[1]

यह हाल काफ़िरों का होगा। चूंकि इन नालायक़ों ने दुनिया में अपने चेहरे को ख़ुदा के हुज़ूर में रखने से मुंह फेरा और घमंड की वजह से सज्दे में सर रखने से इन्कार कर दिया इसलिए क़ियामत के दिन उनके चेहरों से उनको पांव का काम दिलाया जाएगा ताकि ख़ूब ज़लील हों और चेहरों के पैदा करने वाले और मालिक को सज्दा करने से जो इन्कार किया था, उसका मज़ा चख लें। अल्लाह तआ़ला को सब कुछ क़ुदरत है। वह अपनी मख़्लूक़ के जिस्म के हर हिस्से को उसकी हर ख़िदमत में इस्तेमाल फ़रमा सकते हैं। दुनिया ही में देख लिया जाए कि कुछ चीज़ें चार पैरों पर और कुछ दो पैरों पर चलती हैं और कुछ सिर्फ़ अपने पेट से (**फ़ मिन्हुम मैंयम्शी अ़ला बत्निहा**) वे लोग जिनके एक हाथ है, वे उसी एक हाथ से दोनों हाथों का काम कर लेते हैं। जो लोग अंधे होते हैं उनकी सुनने और महसूस करने की ताक़त अकसर तेज़ होती है, जिनसे बड़ी हद तक आंख न होने की कमी हो जाती है। क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला काफ़िरों को चेहरे के बल चलायेंगे। यह अक़्ल के एतबार से ज़रा भी नामुम्किन नहीं है।

1. बुख़ारी व मुस्लिम

काफ़िर गूंगे-बहरे और अन्धे उठाये जाएंगे

सूरः बनी इस्राईल में फ़रमाया :

وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّ صُمًّا۔

व नह्शुरुहुम यौमल क़ियामति अ़ला वुजूहिहिम उम्यौं व बुक्मौं व सुम्मा।

'और हम उनको क़ियामत के दिन अंधे, बहरे, गूंगे करके चेहरों के बल चलाएंगे।'

सूरः ताहा में इर्शाद फ़रमाया :

وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِىْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى، قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِىْٓ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا، وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى، وَكَذٰلِكَ نَجْزِىْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى۔

व मन अअ्‌र ज़ अ़न ज़िक्री फ़ इन्न न लहू मईशतन ज़न्कौंव नह्शुरुहू यौमल क़ियामति अअ्‌मा। क़ा ल रब्बि लि म हशर्तनी अअ्‌मा व क़द कुन्तु बसीरा। क़ा ल कज़ालि क अतत् क आयातुना फ़ न सी त हा व कज़ालि कल यौ म तुन्सा। व कज़ालि क नज्ज़ी मन असर फ़ व लम् युअ्‌मिम बिआयाति रब्बिही व ल अ़ज़ाबुल आख़िरति अशद्दु व अब्क़ा।

'और जिसने मुंह फेरा मेरी याद से तो उसके लिए है तंगी की ज़िंदगी और क़ियामत के दिन हम उसका हश्र इस तरह करेंगे कि वह अंधा होगा। वह कहेगा कि ऐ मेरे रब! क्यों तूने मुझे अंधा उठाया हालांकि मैं देखता था। जवाब में ख़ुदा इर्शाद फ़रमायेगा इसी तरह आती थीं तेरे पास मेरी आयतें, पस तूने उनको भुला दिया और इसी तरह आज तू भुलाया जाएगा और इसी

तरह हम बदला देंगे उसको जो हद से बढ़ा और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाया और अलबत्ता आख़िरत का अ़ज़ाब सख़्त है और बाक़ी रहने वाला है।'

अल्लाह के दीन से दुनिया में जिन लोगों ने आँखें फेरीं और सच्चे मालिक की आयतों को सुनकर क़ुबूल करने और इक़रार करने के बजाए सब सुनी अनसुनी कर दी, उनकी आंखों और कानों और ज़ुबानों की ताक़तें छीन ली जाएंगी और गूंगे-बहरे होकर उठेंगे। यह हश्र के शुरू का ज़िक्र है। फिर आंख और ज़ुबान और कान खोल दिए जाएंगे ताकि महशर के हालात और उसकी सख़्तियां देख सकें और हिसाब-किताब के मौक़े पर उनसे सवाल-जवाब किया जाए।[1]

काफ़िरों की आंखें नीली होंगी।

सूरः ताहा में फ़रमाया :

وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا

व नह्शुरुल मुज्रिमी न यौ म इज़िन ज़ुर्कैंय त ख़ाफ़तू न बै नहुम इल्लबिस्तुम इल्ला अ़श्रा।

'और हम जमा करेंगे उस दिन गुनाहगारों को इस हाल में कि उनकी आंखें नीली होंगी। चुपके-चुपके आपस में कहते होंगे कि दुनिया में बस तुम दस दिन रहे।'

यानी बुरा लगने के लिए उनकी आखें नीली कर दी जाएंगी, जब क़ियामत को उठ खड़े होंगे तो आपस में धीरे-धीरे बातें करेंगे कि दुनिया में कितने दिन रहे। फिर खुद ही आपस में जवाब देंगे। कोई कहेगा कि दुनिया में हम दस दिन ही रहे।

दुनिया में कितने दिन रहे?

अल्लाह तआ़ला ने इस आयत के बाद दूसरी आयत में फ़रमाया :

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا۔

1. मआ़लिमत्तंज़ील

नहनु अअ्लमु बिमा यक़ूलू न इज़ यक़ूलु अम्सलुहम तरीक़तन इल्लबिस्तुम इल्ला यौमा।

'हमको अच्छी तरह मालूम है, जो कुछ वे कहते हैं। जब बोलेगा उनमें का अच्छी रविश वाला कि तुम दुनिया में एक दिन से ज़्यादा नहीं रहे।'

आख़िरत के लम्बे और वहां कि दर्दनाक मंज़रों को देखकर दुनिया में या क़ब्र में रहना इतना कम नज़र आयेगा कि गोया दस दिन से ज़्यादा नहीं रहे। दस दिन भी किसी के ख़्याल में गुज़ारेगा। वरन् जो इनमें ज़्यादा अक़्लमंद और अच्छी राय वाला और होशियार होगा, वह कहेगा कि दस दिन कहां? सिर्फ़ एक ही दिन समझो। इस बात के कहने वाले को अक़्लमंद और अच्छे रवैया वाला इसलिए फ़रमाया कि दुनिया का ख़त्म हो जाना और आख़िरत का बाक़ी रहना और सख़्ती को उसने दूसरों से ज़्यादा समझा।

सूरः नाज़िआत में फ़रमाया :

كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوٓا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحٰهَا ○

क अन्नहुम यौ म यरौ न हा लम् यल्बसू इल्ला अ़शीय्यतन औ ज़ुहाहा।

'जब वे क़ियामत को देखेंगे तो ऐसा मालूम होगा कि दुनिया में बस एक शाम या उसकी सुबह ठहरे हैं।'

अब तो जल्दी करते हैं और कहते हैं। **'मता हाज़ल वअ़्दु इन कुन्तुम सादिक़ीन।** (यह वादा कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो) और यह भी कहते हैं कि **'ऐयाना मुर्साहा'** (कब पूरा होगा क़ियामत का आना) लेकिन जब वह अचानक आ पहुंचेगी, उस वक़्त ऐसा मालूम होगा कि बहुत जल्द आयी, बीच में ज़रा देर भी नहीं लगी।

सूरः रूम में फ़रमाया :

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ، مَا لَبِثُوا غَيْرَ سَاعَةٍ، كَذٰلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ○

व यौ म तक़ूमुस्सा अ़ तु युक़्सिमुल मुज्रिमू न मा लबिसू ग़ै र साअ़तिन क ज़ालि क कानू युअ़् फकून।

'और जिस दिन क़ायम होगी क़ियामत, क़सम खाकर कहेंगे मुज्रिम कि हम दुनिया में एक घड़ी से ज़्यादा नहीं रहे। इसी तरह उलटे चलते थे।'

क़ब्र में या दुनिया में रहना थोड़ा-सा मालूम होगा। जब क़ियामत की मुसीबत सर पर आ खड़ी होगी तो अफ़सोस करेंगे और कहेंगे कि दुनिया की और बर्ज़ख़ की ज़िंदगी बड़ी जल्दी ख़त्म हो गयी। कुछ ज़्यादा मुद्दत ठहरने को मौक़ा मिलता तो इस दिन के लिए तैयारी करते। यह तो एक दम मुसीबत की घड़ी सामने आ गयी। दुनिया के मज़े और लम्बी चौड़ी उम्मीदें सब भूल जाएंगे। बेहूदा उम्र खोने और दुनिया की साज-सज्जा और ओहदों और बड़ाईयों में जो वर्षों गुज़ारे थे, उतनी लम्बी उम्र को घड़ी भर की ज़िंदगी बतायेंगे। अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने फ़रमाया, **कज़ालि क कानू युअ्फ़कून।** यानी इसी तरह दुनिया में उलटी बातें करते थे और बेहूदा ख़्यालात जमाते थे, न दुनिया में हक़ को माना और दिल में उतारा, न यहां सच बोल रहे हैं।

आगे इर्शाद फ़रमाया :

وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْاِيْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِیْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰی يَوْمِ الْبَعْثِ، فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ۔

व.क़ालल्लज़ी न ऊतुल इल मा वल ईमा न लक़द लबिस्तुम फ़ी किताबिल्लाहि इला यौमिल बअ़्सि फ़ हाज़ा यौमुल बअ़्सि व ला किन्ननकुम कुन्तुम ला तअ़्लमून।

'और कहेंगे इल्म और ईमान वाले, तुम्हारा ठहरना अल्लाह की किताब में जी उठने के दिन तक था, सो यह है जी उठने का दिन, लेकिन तुम जानते न थे।'

इल्म और ईमान वाले उस वक़्त उनकी बातों को रद्द करेंगे और कहेंगे कि तुम झूठ बकते हो और यह जो कहते हो कि सिर्फ़ एक घड़ी रहना हुआ,

सरासर ग़लत है। तुम ठीक अल्लाह तआला के इल्म में और लौहे महफ़ूज़[1] के नविश्ता[2] के मुताबिक़ क़ियामत के दिन तक ठहरे, एक सेकंड की भी कमी नहीं हुई, हर एक को जितनी उम्र मिली थी, उसने सब पूरी की। फिर बर्ज़ख़ की लम्बी ज़िंदगी गुज़ार कर अब मैदाने हश्र में मौजूद हुआ है। आज वह दिन आ पहुंचा जिसका आना यक़ीनी था। अब देख लो जिसे तुम जानते और मानते न थे। अगर पहले से उस दिन का यक़ीन करते तो यहां के लिए ईमान और नेकियों से तैयार होकर आते।

क़ियामत के दिन की परेशानी और हैरानी

क़ियामत का दिन होश गुम कर देने वाला होगा

सूरः इब्राहीम में फ़रमाया :

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُؤُسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ وَاَفْئِدَتُهُمْ هَوَآءٌ

व ला तहसबन्नल्ला ह ग़ाफ़िलन अ़म्मा यअ़मलुज़्ज़ालिमू न इन्नमा युअख़्ख़िरुहुम लियौमिन तश्ख़सु फ़ीहिल अब्सारु मुह़तिई न मुक़्निई रुऊसिहिम ला यर्तद्दु इलैहिम तर्फ़ुहुम व अफ़इदतुहुम हवाउ।

'और जो कुछ ज़ालिम करते हैं अल्लाह तआ़ला को उनके आ़माल से बेख़बर मत समझ। उनको सिर्फ़ उस दिन तक मोहलत दे रखी है जिसमें उन लोगों की आंखें फटी रह जाएंगी। दौड़ते होंगे (और) अपने सर ऊपर को उठाये हुए होंगे, उनकी नज़र उनकी तरफ़ हटकर न आयेगी और उनके दिल बिल्कुल बद-हवास होंगे।'

महशर की तरफ़ (क़ब्रों से निकल कर) सख़्त परेशानी और हैरत से ऊपर को सर उंठाये टकटकी बांधे घबराते हुए चले जाएंगे। हक्का-बक्का

1. सुरक्षित तख़्ती 2. लिखे हुए

होकर देखते होंगे। ज़रा पलक भी न झपकेगी। दिलों का यह हाल होगा कि होश से बिल्कुल ख़ाली होंगे, ख़ौफ़ में उड़े जा रहे होंगे।

सूरः हज में फ़रमाया :

يٰاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ، اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ، يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَاهُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ○

या ऐयुहन्नासुत्तक़ू रब्बकुम इन्न न ज़ल ज़लतस्साअ़ति शैउन अज़ीम तरौ न हा तज़हलु कुल्लु मुर्ज़िअ़तिन अ़म्मा अ़र्ज़अ़त व तज़उ कुल्लु ज़ाति हम्लिन हम्लहा व तरन्ना स सुकारा व मा हुम बिसुकारा। व ला किन्न न अ़ज़ाबल्लाहि शदीद।

'ऐ लोगो! डरो अपने रब से बिला शुब्हा क़ियामत का भूंचाल एक बड़ी चीज़ है जिस दिन उसको देखोगे, भूल जाएगी हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पिलाने को और गिरा देगी हर हमल वाली अपने हमल को और तू देखेगा लोगों को नशे में और (हक़ीक़त में), वे नशे में न होंगे लेकिन अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है।'

क़ियामत के बड़े ज़ल्ज़ले हैं। क़ियामत से कुछ पहले जो क़ियामत की निशानियों में से हैं दूसरा उस वक़्त जब दोबारा सूर फूंके जाने के बाद क़ब्रों से निकल खड़े होंगे। इस आयत में अगर पहला ज़ल्ज़ला मुराद है तो दूध पिलाने वालियों का बच्चों को भूल जाना और हामिला औरतों का अपने-अपने हमल गिरा देना हक़ीक़ी और ज़ाहिरी मानी के एतबार से मुराद होगा और अगर दूसरे मानी मुराद हों तो यह मिसाल के तौर पर कहा गया समझा जाएगा यानी क़ियामत की घबराहट और सख़्ती इतनी होगी कि अगर औरतों के पेटों में उस वक़्त हमल हों तो उनके हमल गिर जाएं और उनकी गोदों में दूध पीते बच्चे हों तो उनको भूल जाएं।

इस वक़्त लोग इतने डरे हुए होंगे कि देखने वाला ख़्याल करेगा कि ये लोग शराब के नशे में हैं हालांकि वहां नशे का क्या काम? अ़ज़ाब की

सख़्ती होश गुम कर देगी। सूरः मुज़्ज़म्मिल में इर्शाद है :

فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ إِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبًا

फ़ कै फ़ तत्तक़ू न इन कफ़र्तुम यौमैंयज्अलुल विल्दा न शीबा।

'सो अगर तुम कुफ़्र करोगे तो कैसे बचोगे उस दिन से जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा।'

अगर दुनिया में बच गये तो उस दिन किस तरह बचोगे जिस दिन की तेज़ी और लम्बाई बच्चों को बूढ़ा कर देने वाली होगी। चाहे, सच में बूढ़े न हों मगर वह दिन ऐसा सख़्त होगा कि उसकी सख़्ती और लम्बाई बच्चों को बूढ़ा कर देने वाली होगी।

चेहरों पर ख़ुशी और उदासी

महशर में सब ही हाज़िर होंगे अल्लाह के नेक बंदों के चेहरे सफ़ेद और ख़ुश और हंसते-खेलते होंगे और काफ़िरों और नाफ़रमानों के चेहरों पर उदासी और ज़िल्लत छायी होगी। सूरः आले इम्रान में फ़रमाया :

يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ، فَأَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ، أَكَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ وَأَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ، هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ○

यौ म तब्यज़्ज़ु वुजूहुंव्व तस्वद्दु वुजूह। फ़ अम्मल्लज़ी नस्वद्दत वुजूहुहुम अ कफ़र्तुम बअ् द ईमानिकुम फ़ ज़ूक़ुल अज़ा ब बिमा कुन्तुम तक्फ़ुरून। व अम्मल्लज़ी नब यज़्ज़त वुजूहुहुम फ़फ़ी रहमतिल्लाहि हुम फ़ीहा ख़ालिदून।

'जिस दिन कुछ चेहरे सफ़ेद होंगे और कुछ स्याह होंगे। सो जिनके चेहरे स्याह होंगे, उनसे कहा जाएगा क्या तुम काफ़िर हुए बाद ईमान लाने के। बस चखो अज़ाब इस वजह से कि तुम कुफ़्र करते थे और जिनके चेहरे सफ़ेद हुए सो वह अल्लाह की रहमत में होंगे; वे उसमें हमेशा रहेंगे।'

कुछ के चेहरों पर ईमान व तक़्वा का नूर चमकता होगा और इज़्ज़त के साथ खुश-खुश नज़र आएंगे उनके ख़िलाफ़ दूसरों के मुंह कुफ़्र व निफ़ाक़ की स्याही से काले होंगे। शक्ल से ज़िल्लत व रुस्वाई टपक रही होगी। हर एक का ज़ाहिर उसके भीतर का आईना होगा।

सूरः अ़ ब स में फ़रमाया :

وُجُوهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ○ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ○ وَوُجُوهٌ يَّوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ○ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ○ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ○

वुजूहुंयौ म इज़िम मुस्फ़िरः। ज़ाहिकतुम मुस्तब्शिरः। व वुजूहुंयौ म इज़िन अ़लैहा ग़ ब रः। तर्हक़ुहा क़ त रः। उलाइ क हुमुल क फ़ र तुल फ़ ज रः०

'कितने चेहरे उस दिन रौशन (और) हंसते (और) ख़ुशी करते होंगे और कितने चेहरे उस दिन ऐसे होंगे कि उन पर गर्द पड़ी होगी और स्याही चढ़ी आती होगी। ये लोग काफ़िर व नाफ़र्मान होंगे।'

ईमान और नेक कामों की वजह से नेक बन्दों के चेहरे रौशन होंगे। उनकी शक्लों से खुशी और ताज़गी ज़ाहिर हो रही होगी और जिन नालायक़ों ने दुनिया से ख़ुदा को भुला दिया, ईमान और नेक कामों के नूर से अलग रहे और कुफ़्र और नाफ़र्मानी की स्याही में घुसे रहे, क़ियामत के दिन उनके चेहरों पर स्याही चढ़ी होगी। ज़िल्लत और रुस्वाई के साथ महशर में हाज़िर होंगे और अपने बुरे आ़माल की वजह से उदास हो रहे होंगे और डरे हुए होकर यह सोचते होंगे कि वहां हमसे बुरा बर्ताव होने वाला है और वह आफ़त आने वाली है जो कमर तोड़ देने वाली होगी। *(तज़ुन्नु ऐंयुफ़ अ़ ल बिहा फ़ाकिरः)*

इर्शाद फ़रमाया सरवरे आ़लम ﷺ ने कि क़ियामत के दिन हज़रत इब्राहीम عليه السلام की उनके बाप आज़र से मुलाक़ात हो जाएगी। उनके बाप के चेहरे पर स्याही होगी और गर्द पड़ी होगी। हज़रत इब्राहीम عليه السلام अपने बाप से फ़रमायेंगे—क्या मैंने न कहा था कि मेरी नाफ़रमानी न करो। उनका बाप कहेगा कि आज आप की नाफ़रमानी न करूंगा। उसके बाद हज़रत इब्राहीम عليه السلام अल्लाह के दरबार में अ़र्ज़ करेंगे कि आपने मुझ से वादा फ़रमाया था

कि क़ियामत के दिन मुझे आप रुस्वा न करेंगे, इससे ज़्यादा क्या रुस्वाई होगी कि मेरा बाप हलाक हो रहा है। अल्लाह तआला शानुहू फ़रमायेंगे कि मैंने काफ़िरों पर जन्नत हराम कर दी गई है (तुम्हारा बाप अज़ाब से बचकर जन्नत में नहीं जा सकेगा) फिर हज़रत इब्राहीम ﷺ से पूछा जाएगा कि आपके पांव में क्या है? वह नज़र करेंगे तो एक लिथड़ा हुआ बिज्जू नज़र आएगा फिर इस बिज्जू की टांगें पकड़कर दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा।

अल्लाह तआला शानुहू अपनी क़ुदरत से आज़र को बिज्जू की शक्ल में कर देंगे ताकि हज़रत इब्राहीम ﷺ की रुस्वाई न हो और उनको अपने बाप की शक्ल देखकर तरस भी न आये। अल्लाह! अल्लाह! यह किसके बाप का अंजाम हुआ? हज़रत इब्रहीम ﷺ के बाप का! जो नबियों के बाप हैं और ख़ुदा के दोस्त हैं। जिनकी मिल्लत (तरीक़े) की पैरवी करने का हुक्म हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ को हुआ। जिन्होंने ख़ाना काबा बनाया। काफ़िर बाप के हक़ में उनकी सिफ़ारिश भी न चली! कहां हैं वह पीर-फ़क़ीर जो नसब और रिश्ते पर फ़ख़्र करने वाले हैं और जो बुरे करतूतों के साथ रिश्तों की आड़ लेकर बख़्शे जाने के उम्मीदवार बने हुए हैं।

महशर में पसीने की मुसीबत

हज़रत मिक़दाद ﷺ रिवायत करते हैं कि प्यारे नबी० ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत कि दिन सूरज मख़्लूक़ से इतना करीब हो जाएगा कि उनसे करीब एक मील[1] के फ़ासले पर होगा और आमाल की बुराईयों के

1. पहले गुज़र चुका है कि क़ियामत क़ायम होने से चाँद सूरज बेनूर हो जाएंगे, आसमान फट जाएगा। अगर कोई सवाल करे कि सूरज बेनूर होने के बाद महशर में लोगों के सरों से एक मील होकर कैसे गर्मी पहुंचाएगा जवाब यह है कि एक तो बेनूर होने के साथ उसकी जलन और गर्मी का ख़त्म हो जाना ज़रूरी नहीं और अगर यह मान लिया जाए कि बेनूर होने के साथ उसकी जलन भी जाएगी तो दूसरा जवाब यह है कि उसको दोबारा रोशनी और गर्मी देकर महशर में सरों पर क़ायम किया जाएगा फिर इसके बाद दोबारा बेनूर करके दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा ताकि उसके पुजारियों को सबक़ मिले और समझ लें कि यह पूजा के क़ाबिल होता तो ख़ुद क्यों दोज़ख़ में पड़ा होता। बहरहाल आयतों और हदीसों में जो कुछ आया है उसपर ईमान लाना ज़रूरी है।

बराबर लोग पसीने में होंगे। बस कोई तो पसीने में टख़नों तक होगा और किसी के घुटनों तक पसीना होगा और किसी के तहमद बांधने की जगह पसीना होगा और किसी का यह हाल होगा कि पांव से लेकर मुंह तक पसीना होगा। उसका पसीना लगाम की तरह मुंह में घुसा हुआ होगा।[1]

एक हदीस में है कि प्यारे नबी ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि हश्र के मैदान में इंसान को इतना पसीना आयेगा और लगातार बाक़ी रहेगा कि इंसान यह कह उठेगा कि ऐ रब! आप का मुझे दोज़ख़ में भेज देना मेरे लिए इस मुसीबत से आसान है। महशर के अ़ज़ाब की सख़्ती को देखकर ऐसा कहेगा। हालांकि दोज़ख़ के अ़ज़ाब की सख़्ती को जानता होगा।[2]

हश्र के मैदान में मौजूद लोगों की अलग-अलग हालतें

भिखारियों की हालत

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि आदमी लोगों से सवाल करते-करते उस हालत को पहुंच जाता है कि क़ियामत के दिन इस हालत में आयेगा कि उसके चेहरे पर गोश्त की ज़रा-सी भी बोटी न होगी[3] यानी भीख मांगने वाले को रुस्वा और ज़लील करने के लिए हश्र के मैदान में इस हाल में लाया जाएगा कि उसके चेहरे पर बस हड्डियाँ ही हड्डियाँ होंगी और गोश्त की एक बोटी भी न होगी और तमाम लोग उसे देखकर पहचान लेंगे कि यह दुनिया में लोगों से सवाल करके अपनी इ़ज़्ज़त खोता था। आज भी उसकी कुछ इ़ज़्ज़त नहीं और सबके सामने ज़लील हो रहा है।

जिसने एक बीवी के साथ नाइंसाफ़ी की हो

हज़रत अबू हुरैरः رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस मर्द के पास दो बीवियां हों और उसने उनके दर्मियान

1. मुस्लिम शरीफ़ 2. तर्ग़ीब
3. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़

इंसाफ़ न किया हो तो क़ियामत के दिन वह इस हाल में आयेगा कि उसका पहलू गिरा हुआ होगा।

जो क़ुरआन शरीफ़ भूल गया हो

हज़रत साद बिन उबादा ﷺ से रिवायत है कि हज़रत रसूल करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस शख़्स ने क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा और फिर उसे (ग़फ़लत और सुस्ती की वजह से) भुला दिया, वह अल्लाह से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि **'अज्ज़म'** होगा।[1]

'अज्ज़म' यानी कोढ़ी होगा। उसके हाथ या उंगलियां गिरी हुई होंगी और कुछ बुज़ुर्गों का कहना है कि इसका मतलब यह है कि उसके दांत गिरे हुए होंगे।[2] ज़ाहिर में यह आख़िरी मतलब ही ज़्यादा मुनासिब मालूम होता है क्योंकि क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते रहने से याद रहता है और पढ़ते रहना ज़ुबान और दांतों का अमल है। इसलिए इसकी सज़ा दांतों का न होना ही मुनासिब है। (खुदा ही बेहतर जाने)

एक हदीस में है कि प्यारे नबी ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मुझ पर मेरी उम्मत के गुनाह पेश किये गये तो मैंने कोई गुनाह इससे बढ़कर नहीं देखा कि किसी को क़ुरआन शरीफ़ की कोई सूरः या आयत आती हो और फिर वह उसे भूल जाए।[3]

बेनमाज़ियों का हश्र

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने नमाज़ की पाबंदी न की, इसके लिए नमाज़ न नूर होगी, न दलील होगी, न निजात का सामान होगी और क़ियामत के दिन उसका हश्र फ़िरऔन, क़ारून, हामान और उबई बिन ख़ल्फ़ के साथ होगा।[4]

---

1. मिश्कात शरीफ़ 2. लम्आत
3. तिर्मिज़ी शरीफ़ 4. अहमद व दारमी

क़ातिल व मक़्तूल[1]

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन मक़्तूल अपने क़ातिल को पकड़कर इस तरह लायेगा कि क़ातिल का माथा और उसका सर मक़्तूल के हाथ में होगा और मक़्तूल की गरदनों की नसों से ख़ून बह रहा होगा। वह अल्लाह के दरबार में अ़र्ज़ करेगा कि ऐ रब! मुझे इसने क़त्ल किया था, (इसी तरह वह) उसे अ़र्श के क़रीब ले पहुंचेगा।[2]

क़ातिल की मदद करने वाला

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने किसी मोमिन के क़त्ल में ज़रा-सी कलिमा कहकर भी मदद की हो (क़ियामत के दिन) वह ख़ुदा से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि उसकी दोनों आंखें के दर्मियान *'आइसुम मिर्रहमतिल्लाह'* लिखा होगा। जिसके मानी यह है यह अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद है।[3]

वादा न पूरा करने वाला

हज़रत सईद ﷺ से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन हर ग़ादिर (यानी वादा तोड़ने वाला) के लिए झंडा होगा जो उसके पाख़ाने की जगह पर लगा होगा।[4]

दूसरी रिवायत में है कि आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसका वादा तोड़ना जितना ही बड़ा होगा उतना ही झंडा बुलन्द होगा। इसके बाद फ़रमाया कि ख़बरदार जो जनता का हाकिम बना उसके वादे तोड़ने से बढ़कर किसी का वादा तोड़ना नहीं यानी अगर वह वादा तोड़ेगा तो तमाम पब्लिक उसके निशाने पर आ जाएगी, इसलिए उसका वादा तोड़ना सबसे बड़ा हुआ।[5]

---

1. जिसे क़त्ल किया जाये
2. तिर्मिज़ी व नसाई
3. इब्ने माजा
4. मुस्लिम शरीफ़
5. मिश्कात

अमीर या बादशाह

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ फ़रमाते हैं कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स भी दस आदमियों का अमीर बना होगा, वह क़ियामत के दिन इस हाल में आयेगा कि उसके हाथ बंधे हुए होंगे। यहां तक कि (अगर रसने अपने मातहतों में इंसाफ़ से काम लिया होगा तो) उसे इंसाफ़ छुड़ा देगा या (अगर ज़ुल्म का बर्ताव किया होगा तो) उसे ज़ुल्म हलाक कर देगा।[1]

एक हदीस में है कि जो हाकिम भी लोगों के दर्मियान हुक्म करता है। वह क़ियामत के दिन इस हाल में आयेगा कि एक फ़रिश्ते ने उसकी गुद्दी पकड़ रखी होगी। (वह फ़रिश्ता उसको लाकर खड़ा कर देगा और) फिर अपना सर आसमान की तरफ़ उठाकर (अल्लाह के हुक्म का इन्तिज़ार करेगा) सो अगर अल्लाह तआ़ला हुक्म फ़रमाएंगे कि उसको गिरा दे तो वह उसको इतने गहरे गड्ढे में गिरा देगा जिसकी तह में गिरत-गिरते चालीस साल में पहुंचा जाए।[2]

ज़ालिम हाकिम गिराए जाएंगे।

ज़कात न देने वाला

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि हज़रत रसूल करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसे अल्लाह ने माल दिया और उसने उसकी ज़कात न अदा की तो क़ियामत के दिन उसका माल गंजा सांप बना दिया जाएगा जिसकी आँखों पर उभरे हुए दो नुक़्ते होंगे. वह सांप तौक़ बनाकर उसके गले में डाल दिया जाएगा फिर वह सांप उसके दोनों बांहों को पकड़कर कहेगा कि मैं तेरा माल हूं। फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फ़रमाई (जिस में यही मज़्मून आया है):

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَا اٰتٰهُمْ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ بَلْ هُوَ
شَرٌّ لَّهُمْ سَيُطَوَّقُونَ مَابَخِلُوا بِهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۝

1. दारमी 2. मिश्कात

व ला यह्सबन्नल्लज़ी न यब्ख़लू न बिमा आताहुमुल्लाहु मिन फ़ज़्लिही हु व ख़ैरल्लहुम। बल हु व शर्रुल्लहुम। स यु तव्वक़ू न मा बख़िलू बिही यौमलक़ियामः।

'और जो लोग अल्लाह के दिए हुए में बुख़्ल (कंजूसी) करते हैं जो उसने उनको अपने फ़ज़्ल से दिया है। वे यह ख़्याल न करें कि यह उनके हक़ में बेहतर है, बल्कि यह उनके लिए वबाल है। उन्हें बहुत जल्द क़ियामत के दिन इस (माल) का तौक़ पहनाया जाएगा, जिसमें उन्होंने कंजूसी की थी।' –बुख़ारी

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि हज़रत रसूल करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि सोने-चांदी के जिस मालिक ने इनमें से इनका हक़ (ज़कात) अदा न किया तो जब क़ियामत का दिन होगा तो उसके लिए आग की तख़्तियां बनायी जाएंगी जो दोज़ख़ में तपायी जाएंगी फिर उनसे उनका पहलू और उसका माथा और उसकी पीठ को दाग़ दिया जाएगा। जब भी वे (तख़्तियां ठंढी हो-होकर दोज़ख़ की आग में) वापस कर दी जाएंगी तो फिर बार-बार निकाली जाती रहेंगी (और उनसे दाग़ दिया जाता रहेगा और यह सज़ा) उसको उस दिन में (मिलती रहेगी) जो पचास हज़ार वर्ष का दिन होगा। यहां तक कि सब बन्दों का फ़ैसला कर दिया जाएगा। आख़िरकार वह (इस मुसिबत से निजात पाकर) अपना रास्ता पायेगा जो जन्नत की तरफ़ होगी या दोज़ख़ की तरफ़। मौजूद लोगों में से किसी ने सवाल किया कि या रसूलल्लाह! ऊंटों का हुक्म (भी) इर्शाद फ़रमायें। आप ﷺ ने फ़रमाया जो ऊंटों वाला इनमें से इनके हक़ अदा नहीं करता और इनके हक़ों में से एक हक़ यह भी है कि जिस दिन उनको पानी पिलाये उस दिन उनका दूध भी निकाल ले तो उसको उन ऊटों के नीचे साफ़ मैदान में लिटा दिया जाएगा। इसके ऊंट ख़ूब मोटेताज़े सबके सब वहां मौजूद होंगे। उनमें से एक बच्चा भी ग़ैर-हाज़िर न होगा। वे ऊंट अपने खुरों से उसको रौदेंगे और अपने मुंहों से उसको काटेंगे। जब उनका पहला गिरोह गुज़र चुकेगा तो बाद का गिरोह उस पर लौटा दिया जाएगा। पचास हज़ार वर्ष के दिन में बन्दों के दर्मियान फ़ैसले होने तक उसको यही सज़ा मिलती रहेगी। फिर वह अपना रास्ता जन्नत की तरफ़ जाएगा या

दोज़ख़ की तरफ़।

सवाल किया गया कि या रसूलुल्लाह! बकरियों और गायों का हुक्म भी इर्शाद फ़रमायें। आपने फ़रमाया कि जो गायों का मालिक और बकरियों का मालिक। इनमें से इनका हक़ अदा नहीं करता तो जब क़ियामत का दिन होगा तो उसको साफ़ मैदान में उनके नीचे लिटा दिया जाएगा। इनमें से वहां एक गाय या बकरी ग़ैरहाज़िर न होगी (और) न कोई इनमें मुड़े हुए सींगों की होगी और न कोई बेसींगा की और न कोई टूटे हुए सींगों की। फिर ये गायें और बकरियां उसपर गुज़रेंगी और अपने सींगों से उसको मारती जाएंगी और खुरों से रौंदती जाएंगो। जब इनका पहला गिरोह गुज़र चुकेगा तो आख़िर का गिरोह उसपर लौटा दिया जाएगा। पचास हज़ार वर्ष के दिन में फ़ैसला होने तक उसको यही सज़ा मिलती रहेगी फिर वह अपना रास्ता जन्नत की तरफ़ पायेगा या दोज़ख़ की तरफ़।[1]

क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा भूखे

हज़रत इब्ने उमर ﵁ से रिवायत है कि हज़रत रसूल करीम ﷺ के सामने एक शख़्स ने डकार ली। आप ने फ़रमाया कि अपनी डकार कम करो क्योंकि क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा देर तक वही भूखे रहेंगे जो दुनिया में सबसे ज़्यादा देर तक पेट भरे रहते हैं।[2]

दोग़ले का हश्र

हज़रत अम्मार ﵁ से रिवायत है कि हज़रत रसूले पाक ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जो दुनिया में दो चेहरों वाला था (यानी ऐसा शख़्स कि इस गिरोह के सामने इसकी तारीफ़ और दूसरों की निंदा (बुराई) करता हो और फिर जब दूसरों में जाए तो उनकी तारीफ़ और उस गिरोह की बुराई करता हो) तो क़ियामत के दिन उसकी ज़ुबान आग की होगी।[3]

---

1. मुस्लिम शारीफ़
2. मिश्कात शरीफ़
3. मिश्कात

कनसूई लेने वाला

फ़रमाया हुज़ूरे अक्दस ﷺ ने कि जिसने बनाकर (यानि अपनी तरफ़ से गढ़कर) झूठा ख़्वाब ब्यान किया उसे क़ियामत के दिन मजबूर किया जाएगा कि दो जौ के बीच में गिरह लगाये और उनमें हरगिज़ गिरह न लगा सकेगा (इसलिए अज़ाब में रहेगा)। और जिसने किसी गिरोह की बात की तरफ़ कान लगाये, हालांकि वह सुनाना न चाहते थे तो क़ियामत के दिन उसके कान में सीसा (पिघलाकर) डाला जाएगा और जिसने कोई तस्वीर (जानदार की) बनाई उसे क़ियामत के दिन अज़ाब दिया जाएगा और मजबूर किया जाएगा कि उसमें रूह फूंक कर ज़िंदा करे और वह रूह फूंक न सकेगा।[1]

ज़िल्लत का लिबास

हज़रत इब्ने उमर ﷺ से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने दुनिया मे शोहरत (घमंड और इतरावे) का लिबास पहना, उसे खुदा क़ियामत के दिन ज़िल्लत का लिबास पंहनायेगा।[2]

ज़मीन हड़पने वाला

इर्शाद फ़रमाया हुज़ूरे अक्दस ﷺ ने कि जिसने थोड़ी-सी ज़मीन भी बग़ैर हक़ के ले ली, उसको क़ियामत के दिन सातवीं ज़मीन तक धंसा दिया जायेगा।[3]

दूसरी रिवायत में है कि आप ﷺ ने फ़रमाया कि जिसने ज़ुल्म के तौर पर एक बालिश्त ज़मीन भी ले ली उसको अल्लाह तआला मजबूर करेगा कि उसे इतना खोदे कि सातवीं ज़मीन के आख़िर तक पहुंच जाए फिर क़ियामत का दिन ख़त्म होने तक, जब तक कि लोगों में फ़ैसला न हो, वे सातों ज़मीनें उसके गले में तौक़ की तरह डाल दी जाएंगी।[4]

आग की लगाम

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ रिवायत करते हैं कि हज़रत रसूले करीम ﷺ

1. मिश्कात शरीफ़
2. अहमद, अबूदाऊद
3. बुख़ारी शरीफ़
4. मिश्कात शरीफ़

ने इर्शाद फ़रमाया कि जिससे कोई इल्म की बात पूछी गयी, जिसे वह जानता था और उसने वह छिपा ली तो क़ियामत के दिन उसके (मुंह में) आग की लगाम दी जाएगी।[1] चूंकि उसने बोलने के वक़्त ज़ुबान बंद कर रखी। इसलिए जुर्म के मुताबिक़ सज़ा तज्वीज़ हुई कि आग की लगाम लगायी गई।

ग़ुस्सा पीने वाला

हज़रत सह्‌ल ﷺ अपने बाप हज़रत मुआज़ ﷺ से रिवायत फ़रमाते थे कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया कि जिसने ग़ुस्सा पी लिया हालांकि वह ग़ुस्से के तक़ाज़े पर अ़मल करने की क़ुदरत रखता था; क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला उसको सारी मख़्लूक़ के सामने बुलाकर अख़्तियार देंगे कि जिस हूर को चाहे, अपने लिए अख़्तियार कर ले।[2]

हरमैन में वफ़ात पाने वाला

हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जो मदीने में ठहरा और उसने मदीने की तकलीफ़ पर सब्र किया। मैं क़ियामत के दिन उसके लिए गवाह और सिफ़ारिशी हूंगा और जो शख़्स मक्का के हरम या मदीना के हरम में मर गया, उसे अल्लाह क़ियामत के दिन अमन वालों में उठायेगा।[3]

जो हज करते हुए मर जाए

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि एक साहब हज़रत रसूले करीम ﷺ के साथ अरफ़ात में ठहरे थे। अचानक सवारी से गिर पड़े, जिससे उनकी गरदन टूट गई। हुज़ूर ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि उसको बेरी के पत्तों में पके हुए पानी में नहलाओ और उसको इन (इहराम के) ही कपड़ों में कफ़न दो और उसका सिर न ढांको क्योंकि यह क़ियामत के दिन 'तल्बियः'[4] पढ़ता हुआ उठेगा।[5]

---

1. अहमद व तिर्मिज़ी
2. तिर्मिज़ी व अबूदाऊद
3. बैहक़ी
4. हज में जो दुआ़ अक्सर पढ़ी जाती है, जिसमें बार-बार लब्बैक आता है उसे तल्बियः कहते हैं।
5. बुखारी शरीफ़

शहीद

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह की राह में जिस किसी के ज़ख़्म लग गया और अल्लाह ही ख़ूब जानता है कि उसकी राह में किस-किस के ज़ख़्म आया है। (यानी) नीयत का हाल अल्लाह ही ख़ूब जानता है तो वह क़ियामत के दिन उस ज़ख़्म को लेकर इस हाल में आयेगा कि उसका ख़ून बह रहा होगा जिसका रंग ख़ून की तरह होगा और ख़ुश्बू मुश्क की तरह होगी।[1]

कामिल नूर वाले

हज़रत बुरैदा ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि हज़रत रसूले करीम ने इर्शाद फ़रमाया कि अंधेरे में मस्जिद जाने वालों को ख़ुशख़बरी सुना दो कि उनको क़ियामत के दिन पूरा नूर इनायत किया जाएगा। —तिर्मिज़ी

अज़ान देने वाले

हज़रत मुआविया ﷺ से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि अज़ान देने वाले क़ियामत के दिन सब लोगों से ज़्यादा लम्बी गरदनों वाले होंगे। —मुस्लिम

ख़ुदा के लिए मुहब्बत करने वाले

हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि मेरी अ़ज़्मत (बड़ाई) की वजह से आपस में मुहब्बत करने वालों के लिए नूर के मिंबर होंगे और नबी व शहीद उन पर रश्क करते होंगे (क्योंकि वे तो बेख़ौफ़ और बेलगाम होकर नूर के मिम्बरों पर बैठे होंगे और नबी व शहीद दूसरों की सिफ़रिश में लगे होंगे।) —मिश्कात शरीफ़

अ़र्श के साये में

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने

4. बुख़ारी व मुस्लिम

इर्शाद फ़रमाया कि सात शख़्सों को उस दिन अल्लाह अपने साए में रखेगा जबकि उसके साए के अ़लावा और किसी का साया न होगा।

1) मुसलमानों का इंसाफ़ पसंद बादशाह,

2) वह जवान, जिसने अल्लाह की इबादत में जवानी गुज़ारी,

3) वह मर्द, जिसका दिल मस्जिद में लगा रहता है। जब वह मस्जिद से निकलता है, जब तक वह वापस न आये (उसका जिस्म बाहर और दिल मस्जिद के अंदर रहता है),

4) वे दो शख़्स जिन्होंने आपस में अल्लाह के लिए मुहब्बत की। उसी मुहब्बत की वजह से जमा होते हैं और उसी को दिल में रखते हुए जुदा हो जाते हैं।

5) वह शख़्स जिसने तन्हाई में अल्लाह को याद किया और उसके आंसू बह निकले,

6) वह मर्द जिसको ख़ूबसूरत और इ़ज़्ज़तदार औरत ने (बुरे काम के लिए) बुलाया और उसने टका-सा जवाब दे दिया कि मैं तो अल्लाह से डरता हूं,

7) वह शख़्स जिसने ऐसे छिपाकर सद्क़ा दिया कि उसके बाएं हाथ को ख़बर न हुई कि दाहिने हाथ ने क्या ख़र्च किया।

—बुख़ारी व मुस्लिम

नूर के ताज वाले

हज़रत मुआ़ज़ जुह्नी ﵁ रिवायत फ़रमाते हैं कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने क़ुरआन पढ़ा और उसपर अ़मल किया, क़ियामत के दिन उसके मां-बाप को एक ताज पहनाया जाएगा, जिसकी रौशनी सूरज की उस रौशनी से भी अच्छी होगी जबकि दुनिया के घरों में इस शक्ल में होती, जिस वक़्त कि सूरज तुम्हारे घरों में मौजूद होता। अब तुम ही बताओ कि जब उसके मां-बाप का यह हाल है तो ख़ुद जिसने उस

पर अ़मल किया होगा, उसका कैसा रुत्बा होगा।[1]

हलाल कमाने वाला

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने हलाल तरीक़े से इसलिए दुनिया तलब की कि भीख मांगने से बचे और अपने घर वालों पर ख़र्च करे और अपने पड़ोसी पर रहम करे तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला से वह इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि उसका चेहरा चौदहवीं रात की तरह चमकता हुआ होगा और जिसने हलाल तरीक़े से दुनिया इसलिए तलब की कि दूसरों के मुक़ाबले में ज़्यादा जमा कर ले और दूसरों पर फ़ख़्र करे और दिखावा करे तो ख़ुदा से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि अल्लाह तआ़ला उसपर ग़ुस्सा होगा।[2] —मिश्कात

रिश्ते-नाते काम न आयेंगे

उस दिन हर आदमी सिर्फ़ अपने बचाव की फ़िक्र में होगा। कोई किसी के काम न आयेगा। एक दूसरे से भागेगा। बहुत-सी आयतों में इन्हीं बातों का एलान फ़रमाया गया है। सूरः लुक़मान में इर्शाद है :

وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِىْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَجَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْئًاط

वख़्शौ यौमल्ला यज्ज़ी वालिदुन औंव ल दिही वला मौलूदुन हु व जाज़िन औंवालिदिही शैआ।

'उस दिन से डरो जिस दिन न बाप बेटे का बदला चुकायेगा, न बेटा ही बाप की तरफ़ से कोई मुतालबा (मांग) अदा कर सकेगा।'

क़ियामत के दिन बड़ा बिखराव होगा। दुनिया की कुछ दिनों की

---

1. अहमद, अबूदाऊद
2. यह बात ध्यान देने की है कि फ़ख़्र करने के लिए हलाल कमाने वाले के हक़ में यह धमकी है। पस जो लोग इस मक़सद के लिए हराम कमाते हैं, उनका क्या बनेगा? **फ़अ्तबिरू या उलिल् अब्सार।**

ज़िंदगी से (जिस में नाते-रिश्तेदार काम आते हैं) धोखा खाकर बेवक़ूफ़ी से यह समझना कि क़ियामत में भी ये लोग काम आयेंगे, नादानी है। सूरः मुमिनून में फ़रमाया : فَإِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَلَا أَنْسَابَ بَيْنَهُمْ وَلَا يَتَسَاءَلُوْنَ

फ़ इज़ा नुफ़ि ख़ फ़िस्सूरि फ़ ला अन्सा ब बै नहुम वला य त साअलून।

'जब सूर फूंका जा चुकेगा तो उस दिन उनके दर्मियान रिश्ते-नाते न रहेंगे और न कोई किसी को पूछेगा।'

सूरः अ़ ब स में फ़रमाया :

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ

यौ म यफ़िर्रुल मर्उ मिन अख़ीहि व उम्मिही व अबीहि व साहिबतिही व बनीह।

यानी 'क़ियामत के दिन इंसान अपने भाई से और मां-बाप से और बीवी से और बेटों से सबसे भागेगा।'

यानी किसी के साथ हमदर्दी और मदद तो दूर की बात। वह अपने ऐसे क़रीबी रिश्तेदारों तक से दूर भागेगा।

दोस्त दुश्मन हो जाएंगे

क़ियामत के दिन बस नेक अ़मल ही काम आयेंगे। इंसान को सबसे ज़्यादा भरोसा अपने रिश्तेदारों पर होता है। ऊपर की आयतों से यह बात मालूम हुई कि इंसान अपने रिश्तेदारों से दूर भागेगा। उनके बाद नम्बर दोस्तों और हमदर्दों का आता है। उनके बारे में अल्लाह का इर्शाद है :

وَلَا يَسْئَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا يُّبَصَّرُوْنَهُمْ

व ला यस अलु हमीमुन हमीमैंयुबस्सरू नहुम।

—सूरः मआ़रिज

यानी 'न दोस्त दोस्त को पूछेगा, हालांकि (वे एक दूसरे को) दिखाई दे रहे होंगे और फ़रमाया :

اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَئِذٍۢ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ○

अल-अख़िल्लाउ यौ म इज़िम बअ्ज़ुहुम लिबअ्ज़िन अ़दुव्वुन इल्लल मुत्तक़ीन। —ज़ुख़रुफ़

'यानी उस दिन दुनिया के दोस्त एक-दूसरे के दुश्मन बने हुए होंगे। हां! परहेज़गारों की दोस्ती उस वक़्त भी क़ायम रहेगी।

रिश्वत में सारी दुनिया देने को तैयार होंगे

सूरः मआ़रिज में फ़रमाया :

يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْيَفْتَدِىْ مِنْ عَذَابِ يَوْمَئِذٍۢ بِبَنِيْهِ○ وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ○
وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِىْ تُؤْوِيْهِ○ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ثُمَّ يُنْجِيْهِ ط كَلَّاء

यवद्दुल मुज्रिमु लौ यफ़्तदी मिन अ़ज़ाबि यौ म इज़िम बिबनीह। व साहिबतिही व अख़ीह। व फ़सीलतिहिल्लती तुअ्वीह। व मन फ़िल अर्ज़ि जमीअ़न सुम्म म युन्जीह, कल्ला।

'मुज्रिम चाहेगा (किसी तरह) अपनी सज़ा के बदले में अपनी औलाद को, बीवी को, भाई को, यहां तक कि अपना सारा कुन्बा, जिसके साथ रहता था, बल्कि ज़मीन में जो कुछ है वह सब (रिश्वत के तौर पर) दे दे और फिर उसे छुटकारा मिल जाए।'

(लेकिन) हरगिज़ ऐसा न होगा। क़ियामत के दिन अपने बदले में रिश्तेदार-नातेदार, माल व दौलत, बल्कि सारी ज़मीन देकर जान छुड़ाने तक के लिए इंसान राज़ी होगा मगर वहां आ़माल के सिवा कुछ पास भी न होगा। अ़ज़ीज़ व रिश्तेदार क्यों किसी के बदले उस दिन की मुसीबत में पड़ना पसंद करेंगे। मान भी लीजिए अगर किसी के पास कुछ हो और कोई किसी की

तरफ़ से अपनी जान के बदले में देने को तैयार भी हो जाए तो क़ुबूल न होगा। सूरः आले इम्रान में फ़रमाया :

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ

इन्नल्लज़ी न क फ़ रू व मातू व हुम कुफ़्फ़ारुन फ़लैंयुक़्ब ल मिन अ ह दिहिम मिल्उल् अर्ज़ि ज़ ह बौं व लविफ़्तदा बिः।

'बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और कुफ़्र की हालत में मर गये सो उनमें से किसी का ज़मीन भर कर सोना भी न लिया जाएगा भले ही अपनी जान के बदले देना चाहे।'

अल्लाहु अकबर! कैसी परेशानी और मजबूरी और बेकसी की हालत होगी।

दुनिया में दोबारा आने की दर्ख़्वास्त

सूरः अलिफ़-लाम-मीम सज्दा में फ़रमाया :

وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ رَبَّنَا اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ

व लौ तरा इज़िल मुज्रिमू न नाकिसू रुऊसिहिम इन द रब्बिहिम। रब्बना अब्सरना व समिअ्ना फ़र्जिअ्ना नअ्मल सालिहन इन्ना मूक़िनून।

'और अगर तुम वह वक़्त देखो जबकि मुज्रिम अपने परवरदिगार के सामने सिर झुकाये हुए (कह रहे) होंगे कि ऐ हमारे माबूद! हमने देख लिया और सुन लिया। हमें आप दुनिया में लौटा दीजिए। हम नेक काम करेंगे। अब हमें यक़ीन आ गया। उस वक़्त अजीब मंज़र देखोगे।'

लेकिन एक तो इन्हें दोबारा दुनिया में भेजा नहीं जाएगा और अगर भेज भी दिया जाए तो फिर नाफ़रमानी करेंगे। चुनांचे फ़रमाया :

وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ۝

व लौ रुद्दू ल आदू लिमानुहू अन्हु व इन्नहुम ल काज़िबून।

—सूरः अन्आम

'अगर उन्हें लौटा दिया जाए तो फिर वे गुनाह करेंगे जिससे मना किया गया है। बेशक ये बड़े झूठे हैं।'

सरदारों पर लानत

सूर-सबा में फरमाया :

وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ
نِ الْقَوْلَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَآ اَنْتُمْ لَكُنَّا
مُؤْمِنِيْنَ، قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ
الْهُدٰى بَعْدَ اِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا
لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِذْ تَاْمُرُوْنَنَآ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ
وَنَجْعَلَ لَهٗٓ اَنْدَادًا

व लौ तरा इज़िज़्ज़ालिमू न मौक़ूफ़ू न इन्द रब्बिहिम यर्जिउ बअ्ज़ुहुम इला बअ्ज़ि-निल-क़ौल। यक़ूलुल्लज़ी नस तुज़्इफ़ू लिल्लज़ी नस्तकबरू लौ ला अन्तुम ल कुन्ना मुअ्मिनीन क़ालल्लज़ी नस्तक्बरू लिल्लज़ीनस्तुज़् इफ़ू अ नह्नु सद्दनाकुम अ़निल हुदा बअ्द इज़ जा अ कुम बल कुन्तुम मुज्रिमीन। व क़ालल्लज़ीनस्तुज़् इफ़ू लिल्लज़ी नस्तकबरू बल मक्रुल्लैलि वन्नहारि इज़ तअ्मुरूनना अन नक्फ़ु र बिल्लाहि व नजूअ ल लहू अन्दादा।

'काश! तुम वह वक़्त देखो जब ज़ालिम अपने परवरदिगार के पास खड़े हुए एक दूसरे पर बात टाल रहे होंगे जो लोग दुनिया में छोटे समझे जाते थे, उन लोगों से कहेंगे जो दुनिया में बड़े समझे जाते थे। अगर तुम न होते, तो हम यक़ीनन मोमिन होते। (यह सुनकर) बड़े लोग छोटों से कहेंगे कि क्या

हमने तुमको हिदायत से रोका था। जब तुम्हारे पास हिदायत आयी थी बल्कि तुम खुद मुज्रिम हुए। वे बड़ों को जवाब देंगे, बल्कि तुम्हारे रात-दिन के फ़रेब और चालबाज़ियों ने ही (हमें गुमराह किया) जब तुम हमें अल्लाह पाक के साथ कुफ़्र करने और उसके साथ शरीक ठहराने का हुक्म देते थे।'

इन आयतों में बातिल के सरदारों और कुफ़्र व शिर्क के लीडरों और उसकी बात पर चलने वालों की आपस में जो बहस क़ियामत के दिन अल्लाह के दरबार में होगी, उसको नक़ल फ़रमाया है। छोटे कहेंगे कि लीडरो! तुमने हमारा नास मारा और खुदा से बाग़ी किया। लीडर कहेंगे कि हमने कब तुमको कुफ़्र व शिर्क पर मजबूर किया और कब तुम्हारा हाथ पकड़कर रोका। तुमने ख़ुद ही कुफ़्र किया था मगर तुम्हारी चालों और धोखेबाज़ियों ने हमको हक़ मानने और अल्लाह के रसूलों की पैरवी से रोके रखा। सूरः साफ़्फ़ात में फ़रमाया :

وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَ لُوْنَ ۝ قَالُوْٓا اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ۝ قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطَانٍ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ۝ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَآ اِنَّا لَذَآئِقُوْنَ ۝ فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ۝

व अक़ ब ल बअ़्ज़ुहुम अ़ला बअ़्ज़िं य त साअलून। क़ालू इन्नकुम कुन्तुम तअ़्तूनना अ़निल यमीन। क़ालू बल लम तकूनू मुअ़्मिनीन। व मा का न लना अ़लैकुम मिन सुल्तानिन बल कुन्तुम क़ौमन ताग़ीन। फ़ हक़्क़ क़ अलैना क़ौलु रब्बिना इन्ना लज़ाइक़ून। फ़ अग़्वैनाकुम इन्ना कुन्ना ग़ावीन।

'और एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर जवाब व सवाल करने लगेंगे जो ताबे (मातहत) थे वे अपने लीडरों से कहेंगे कि हमारे पास तुम्हारा आना बहुत ज़ोर से हुआ करता था। लीडर कहेंगे बल्कि तुम खुद ही ईमान नहीं लाये थे और हमारा तुम पर कोई ज़ोर तो था ही नहीं बल्कि तुम खुद ही सरकशी किया करते थे। सो हम सब पर तुम्हारे रब की बात साबित हो गयी कि हमको

मज़ा चखना है। तो हमने तुमको बहकाया। हम ख़ुद ही गुमराह थे।'

छोटे लोग और जनता अपने लीडरों और सरदारों पर इल्ज़ाम रखेंगे कि तुमने हमारा नास खोया और बड़े ज़ोर-शोर से तुम हमारे पास आते और तक़रीरों (भाषणों), तहरीरों (लेखों) से हम पर ज़ोर डालते और बातिल (असत्य) की तरफ़ बुलाते और हक़ के मानने से रोकते थे। लीडर जवाब में कहेंगे कि हमारा तुम पर क्या ज़ोर था। जो तुम्हारे दिल में ईमान न घुसने देते। तुम ख़ुद ही अक़्ल व इंसाफ़ की हद से निकल गए कि बेग़रज़ नसीहत करने वालों का कहना न माना और हमारे बहकावे में आये। समझ से और अंजाम को सोचते हुए काम लेते तो हमारी बातों पर कान न धरते। ख़ुदा के सच्चे पैग़म्बरों और क़ासीदों की बातों से क्यों मुंह मोड़ते? हम तो ख़ुद ही गुमराह थे। गुमराह से और क्या उम्मीद हो सकती है? वह तो गुमराह ही करेगा। अब क्या बन सकता है। अब हमको और तुमको अज़ाब चखना है। आगे फ़रमाया :

فَاِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِى الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ اِنَّا كَذَالِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ
اِنَّهُمْ كَانُوْا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ وَيَقُوْلُوْنَ ءَ اِنَّا
لَتَارِكُوْآ اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنَ ط

फ़ इन्नहुम यौ म इज़िन फ़िल अज़ाबि मुश्तरिकून। इन्ना कज़ालि क नफ़अ़लु बिल मुज्रिमीन। इन्नहुम कानू इज़ा क़ी ल लहुम ला इला ह इल्लल्लाहु यस्तक्बिरू न व यक़ूलू न अ इन्ना लतारिकू आलिहतिना लिशाइरिम मज्नून।

'सो वे सब उस दिन अज़ाब में शरीक हों। हम मुज्रिमों के साथ ऐसा ही करते हैं। दुनिया में जब उनसे **'ला इला ह इल्लल्लाह'** कहा जाता तो घमंड करते और यों कहते थे। क्या हम छोड़ देंगे अपने माबूदों को, एक शायर दीवाना के कहने से।'

लीडर हों या जनता, जिसने भी **'ला इला ह इल्लल्लाह'** से इंकार किया और ख़ुदा को माबूद मानने को अपनी शान के ख़िलाफ़ समझा और

ख़ुदा के रसूल को झुठलाया और शायर व दीवाना बताया। ऐसे लोग सब ही अ़ज़ाब में डाले जाएंगे। यह न होगा कि सिर्फ़ गुमराह करने वाले लीडरों को अ़ज़ाब हो और उनके रास्ते पर चलने वाली जनता छोड़ दी जाए।

लीडरों की बेज़ारी

सूरः बकरः में फ़रमाया :

اِذْ تَبَرَّءَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا وَرَاَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ○

इज़ तबर्रअल्लज़ी नत्तबिऊ मिनल्लज़ी नत्तबऊ व र अ वुल अ़ज़ा ब व तक़त्तअ़त बिहिमुल अस्बाब।

'जिनके कहने पर दूसरे चलते थे। जब वे इनसे साफ़ बेज़ारी ज़ाहिर करेंगे जिन्होंने उनका कहा माना था और अ़ज़ाब को देख लेंगे और उनके तअ़ल्लुक़ात आपस में टूट जाएंगे।'

क़ियामत के दिन गुमराही के लीडर और कुफ़्र के सरदार अपने लोगों से बेज़ारी ज़ाहिर करेंगे और कोई मदद न करेंगे और न मदद कर सकेंगे। उस वक़्त उनकी बात पर चलने वालों और उनकी कुफ़्र व बातिल की तज्वीज़ों और प्रस्तावों पर हाथ उठाने वालों लीडरों पर जो ग़ुस्सा आएगा, ज़ाहिर है। इसी आयत के आगे लोगों की परेशानी और शर्मिंदगी का ज़िक्र फ़रमाते हुए अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने फ़रमाया :

وَقَالَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْاَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُ وْا مِنَّا كَذَالِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرَاتٍ عَلَيْهِمْ وَمَا هُمْ بِخَارِجِيْنَ مِنَ النَّارِ۔

व क़ालल्लज़ी नत्त ब ऊ लौ अन्न न लना कर्रतन फ़ न त बर्र अ मिनहुम कमा तबर्रऊ मिन्ना क ज़ालि क युरीहुमुल्लाहु अअ़्मालहुम ह स रातिन अ़लैहिम व मा हुम बिख़ारिजी न मिनन्नार।

'(और इन झूठे लीडरों के) लोग कहेंगे कि किसी तरह एक बार ज़रा हमको दुनिया में जाना मिल जाए तो हम भी उनसे साफ़ अलग हो जाएं। जैसा ये हमसे (इस वक़्त) साफ़ अलग हो गए और उनको दोज़ख़ से निकलना नसीब न होगा।'

क़ुरआन करीम ने साफ़ खोल कर मैदाने हश्र के वाक़िए ब्यान फ़रमाये हैं। क्या ठिकाना है हमदर्दी और भलाई चाहने का। बदक़िस्मत हैं जो उसकी दावत पर कान नहीं धरते और उसकी खुली निशानियों से नसीहत हासिल नहीं करते!

हश्र के मैदान में प्यारे नबी ﷺ के बुलन्द मर्तबे का ज़ुहूर

शिफ़ाअ़ते कुबरा, मक़ामे महमूद, उम्मते मुहम्मदिया की बड़ाई

हज़रत अबू सईद खुदरी ؓ रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन आदम की तमाम औलाद का मैं सरदार हूंगा (यानी सरदार होना सब पर साफ़ हो जाएगा। गो हक़ीक़त में सरदार अब भी आप ही हैं) और मैं इस पर फ़ख़्र नहीं करता हूं (बल्कि यह ब्यान हक़ीकत और नेमत का इज़्हार है); और मेरे हाथ में हम्द का झंडा होगा और मैं इस पर फ़ख़्र नहीं करता हूं; और उस दिन हर बनी आदम और उनके अ़लावा सब नबी मेरे झंडे के नीचे होंगे और ज़मीन में सबसे पहले मैं ज़ाहिर हूंगा।' —तिर्मिज़ी

दूसरी रिवायत में है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि जब क़ियामत का दिन होगा तो मैं नबियों के आगे-आगे हूंगा और उन पर ख़तीब[2] और शफ़ाअ़त करने वाला हूंगा यह बग़ैर फ़ख़्र के ब्यान कर रहा हूं। —तिर्मिज़ी

हज़रत अबू हुरैरः ؓ रिवायत फ़रमाते हैं कि एक दावत में हम

1. तिर्मिज़ी
2. ख़िताब (भाषण) करने वाला

रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे। एक दस्त (बकरी का) आप ﷺ की ख़िदमत में पेश किया गया। आप ﷺ को दस्त पसन्द था। उसमें से आप ﷺ ने अपने मुबारक दांतों से थोड़ा-सा खाया और उस वक़्त इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन मैं सब इंसानों का सरदार हूंगा। तुमको मालूम है इसके (ज़ाहिर होने) की क्या शक्ल होगी? फिर खुद ही जवाब में इर्शाद फ़रमाया कि एक ही मैदान में अल्लाह तआ़ला तमाम अगलों-पिछलों को जमा फ़रमाएंगे; देखने वाला सबको देखेगा और पुकारने वाला सब को सुनायेगा और सूरज उनसे क़रीब होगा। इसलिए लोगों को ऐसी घुटन और बेचैनी होगी जो ताक़त और बर्दाशत से बाहर होगी।

इस घुटन और बेचैनी की वजह से लोग (आपस में) कहेंगे कि जिस हाल और जिस मुसीबत में तुम हो, ज़ाहिर है क्या किसी ऐसे (बुज़ुर्ग) शख़्स को नहीं खोजते जो तुम्हारे रब के दरबार में सिफ़ारिश कर दे। फिर कुछ से कहेंगे कि तुम्हारे बाप आदम عليه السلام इसके अहल (क़ाबिल) हैं, उनसे अर्ज़ करो। चुनांचे उनके पास आकर कहेंगे कि ऐ आदम! आप अबुल बशर[1] हैं। अल्लाह ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया तो उन्होंने आपको सज्दा किया और आपको जन्नत में ठहराया। क्या आप अपने रब से हमारे लिए सिफ़ारिश नहीं कर देते? आप देखते नहीं हैं, हम किस मुसीबत और परेशानी में हैं? हज़रत आदम عليه السلام फ़रमायेंगे, यक़ीन जानो कि मेरे रब को आज इस क़दर ग़ुस्सा है कि इससे पहले न कभी हुआ और न इसके बाद कभी हरगिज़ इतना ग़ुस्सा होगा और यह हक़ीक़त है कि मेरे रब ने मुझे पेड़ (के पास जाने) से रोका था जिसकी मुझसे नाफ़रमानी हो गयी? नफ़्सी-नफ़्सी-नफ़्सी (मुझे अपनी ही फ़िक्र है)। तुम लोग मेरे आलावा किसी दूसरे के पास चले जाओ। ऐसा करो कि नूह عليه السلام के पास पहुंचो (और उनसे दरख़्वासत करो) इसलिए लोग हज़रत नूह عليه السلام के पास पहुचेंगे और अर्ज़ करेंगे कि आप ज़मीन वालों की तरफ़ (कुफ़्फ़ार को ईमान की दावत देने के लिए) सबसे पहले रसूल थे। अल्लाह ने आपको शुक्रगुज़ार बन्दा फ़रमाया है। क्या आप नहीं देख रहे हैं कि हम किस मुसीबत में हैं और हमारा क्या बुरा हाल बना हुआ है? क्या

---

1. इन्सानों के बाप

आप अपने रब के दरबार में हमारे लिए सिफ़ारिश नहीं कर देते? हज़रत नूह عليه السلام जवाब में फ़रमायेंगे, यक़ीन जानो मेरे रब को आज इतना ग़ुस्सा है कि कभी ऐसा ग़ुस्सा न इससे पहले हुआ और न हरगिज़ कभी इसके बाद होगा और यह सच है कि मैंने अपनी क़ौम के लिए बद्दुआ की थी (मुझे इस पर पकड़े जाने का डर है) नफ़्सी-नफ़्सी-नफ़्सी। तुम लोग मेरे अ़लावा किसी और के पास पहुंच जाओ। ऐसा करो कि इब्राहीम عليه السلام के पास जाओ।

इसके बाद लोग हज़रत इब्राहीम عليه السلام के पास आएंगे और उनसे अ़र्ज़ करेंगे कि आप अल्लाह के नबी और ज़मीन वालों में से (चुने हुए) अल्लाह के दोस्त हैं। हमारे लिए अपने रब के सामने सिफ़ारिश फ़रमा दीजिए। आप देख ही रहे हैं कि हमारा क्या हाल बना हुआ है? हज़रत इब्राहीम عليه السلام उनको जवाब देंगे। यक़ीन जानो, मेरे रब को आज इस क़दर ग़ुस्सा है कि न कभी ऐसा ग़ुस्सा इससे पहले हुआ, न हरगिज़ कभी इसके बाद होगा और यह सच है कि मैंने तीन झूठ[1] बोले थे (गो दीनी मस्लहत और दीनी ज़रूरत से हुए थे, लेकिन ख़ौफ़ हैं कि कहीं मेरी पकड़ न हो जाए) यह फ़रमा कर उन तीन मौक़ों का ज़िक्र फ़रमाया, जिनमें उनसे झूठ निकला था। (आख़िर में हज़रत इब्राहीम عليه السلام फ़रमायेंगे) नफ़्सी-नफ़्सी-नफ़्सी (तुम मेरे अ़लावा किसी और के पास चले जाओ)। ऐसा करो तुम मूसा عليه السلام के पास पहुंचो।

चुनांचे लोग हज़रत मूसा عليه السلام के पास आएंगे और उनसे अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ मूसा! आप अल्लाह के रसूल हैं। आपको अल्लाह ने अपने पैग़ामों के ज़रिए और अपने साथ हमकलामी (बात करने) के ज़रिए लोगों पर फ़ज़ीलत दी। आप अपने रब के सामने हमारी सिफ़ारिश कर दीजिए, आप देख रहे हैं कि हमारा कैसा हाल बना हुआ है। हज़रत मूसा عليه السلام जवाब देंगे कि यक़ीन जानो कि मेरे रब को आज इस क़दर ग़ुस्सा है कि ऐसा ग़ुस्सा इससे

---

1. जिन तीन झूठों का ज़िक्र इस हदीस पाक में है। उनकी कैफ़ियत (अवस्था) ज़रूरत व मस्लहत दूसरी रिवायत में ज़िक्र हुई है। ऐसे मौक़ों पर झूठ बोलना मना नहीं है। लेकिन हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अपने बुलंद मर्तबे की वजह से ख़ौफ़ करेंगे कि गो जायज़ था, मगर झूठ तो था। ख़लीलुल्लाह से उसका होना शायद पकड़ में आये, जिनके रुत्बे हैं सिवा, उनको सिवा मुश्किल है।

पहले न हुआ, न हरगिज़ इसके बाद कभी होगा। यह सच है कि मैंने एक शख़्स को क़त्ल किया था जिसके क़त्ल करने का (ख़ुदा की तरफ़ से) मुझे हुक्म न था।[1] नफ़्सी-नफ़्सी-नफ़्सी, तुम लोग मेरे अ़लावा किसी और के पास जाओ। ऐसा करो कि ईसा ﷺ के पास पहुंचो।

चुनांचे लोग हज़रत ईसा ﷺ के पास जाएंगे और उनसे अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ ईसा! आप अल्लाह के रसूल हैं और उसका कलिमा हैं जिसे अल्लाह ने मरयम तक पहुंचाया और अल्लाह की तरफ़ से रूह हैं। आपने गहवारा में लोगों से बात की (ये आप के फ़ज़ाइल हैं) अपने पालनहार के दरबार में हमारी सिफ़ारिश फ़रमा दीजिये। आप देख ही रहें हैं कि हमारा क्या बुरा हाल बना हुआ है? वह फ़रमाएंगे कि यक़ीन जानो मेरे रब को आज इतना ग़ुस्सा है कि ऐसा ग़ुस्सा न इससे पहले हुआ, न हरगिज़ कभी इसके बाद होगा।[2]

यहां पहुंचकर प्यारे नबी ﷺ ने हज़रत ईसा ﷺ की किसी 'भूल' का ज़िक्र नहीं फ़रमाया जिसे याद करके वह सिफ़ारिश का उ़ज़्र करेंगे (बल्कि इसके बाद यह फ़रमाया कि हज़रत ईसा ﷺ फ़रमायेंगे) नफ़्सी-नफ़्सी-नफ़्सी (और यह फ़रमायेंगे कि) मेरे अ़लावा किसी और के पास चले जाओ, ऐसा करो कि मुहम्मद ﷺ के पास पहुंचो।

आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि अब मेरे पास लोग आयेंगे और कहेंगे कि ऐ मुहम्मद ﷺ! आप अल्लाह के रसूल हैं और नबियों के आख़िरी नबी हैं और अल्लाह ने आप का सब कुछ बख़्श दिया। अपने रब के दरबार में आप हमारे लिए सिफ़ारिश फ़रमा दीजिए। आप देख ही रहे हैं

1. हज़रत मूसा (ﷺ) ने एक दिन देखा कि दो आदमी आपस में लड़ रहे हैं। एक उनकी क़ौम का था और दूसरा दुश्मनों की क़ौम से था। हज़रत मूसा (ﷺ) की क़ौम वाले ने उनसे मदद चाही। इसलिए आपने उस आदमी को एक घूंसा मार दिया जो उनकी क़ौम वाले पर ज़ुल्म कर रहा था। मारा तो था सज़ा के लिए, तंबीह करने के लिए। मगर हुक्म ख़ुदा का ऐसा हुआ वह मर गया। हज़रत मूसा (ﷺ) शर्मिंदा हुए। अल्लाह तआ़ला से माफ़ी मांगी। अल्लाह तआ़ला ने माफ़ कर दिया इसी क़िस्से की तरफ़ इशारा है।
2. दूसरी रिवायत में है कि इस मौक़े पर हज़रत ईसा (ﷺ) शफ़ाअ़त न कर सकने की वजह यह ब्यान फ़रमायेंगे अल्लाह से परे मेरी इबादत की गयी।

कि हम किस बदहाली में हैं।

इसलिए मैं रवाना हो जाऊंगा और अ़र्श के नीचे आकर अपने रब के लिए सज्दा में पड़ जाऊंगा। फिर अल्लाह तआ़ला मुझपर अपनी वे तारीफ़ें और वह बेहतरीन सना (गुणगान) खोलेंगे जो मुझ से पहले किसी पर न खोली गयी थी। फिर अल्लाह का इर्शाद होगा कि ऐ मुहम्मद! सर उठाओ और मांगो। तुम्हारा सवाल पूरा किया जाएगा। सिफ़ारिश क़ुबूल की जाएगी। चुनांचे मैं सर उठाऊंगा और (अल्लाह के दरबार में) अ़र्ज़ करूंगा कि ऐ रब! मेरी उम्मत पर रहम फ़रमा, ऐ रब! मेरी उम्मत पर रहम फ़रमा। ऐ रब! मेरी उम्मत के उन लोगों को जिन पर कोई हिसाब नहीं है, जन्नत के दरवाज़ों में से दांए दरवाज़े से दाख़िल कर दे और उस दरवाज़े के अ़लावा दूसरे दरवाज़ों में भी वे साझी हैं (यानी उनको यह भी इख़्तियार है कि इस दरवाज़े के अ़लावा दूसरे दरवाज़ों से दाख़िल हो जाएं) इसके बाद आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़सम उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जन्नत के दरवाज़ों (की इतनी बड़ी चौड़ाई है कि उन) के दोनों किनारों के दर्मियान जो फ़ासला है, वह इतना लम्बा है कि जितना मक्का और हिज्र के दर्मियान का रास्ता है या (फ़रमाया कि जैसे) मक्का और बसरा के दर्मियान का रास्ता है। —अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब (बुख़ारी व मुस्लिम)

दूसरी रिवायत में है (जिसे रिवायत करने वाले हज़रत अनस ﷺ हैं) कि आंहज़रत ﷺ ने शफ़ाअ़त का वाक़िया ब्यान फ़रमा कर यह आयत तिलावत फ़रमाई : عَسٰى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا○

अ़सा एं यब् अ़ स क रब्बु क मक़ामम महमूदा।

(क़रीब है कि आप का रब आपको मक़ामे महमूद में खड़ा करेगा)

फिर फ़रमाया कि यह मक़ामे महमूद है जिसका वादा (अल्लाह तआ़ला ने) तुम्हारे नबी ﷺ से किया है। —बुख़ारी व मुस्लिम

उम्मते मुहम्मदिया की पहचान

हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ ने फ़रमाया कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ से

एक आदमी ने पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! आप (क़ियामत के दिन) सारी उम्मत से लेकर आप की उम्मत तक दुनिया में आयी थी, अपनी उम्मत को कैसे पहचानेंगे? इसके जवाब में आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि वुज़ू के असर से उनके चेहरे रौशन होंगे और हाथ और पांव सफ़ेद होंगे। इनके अलावा और कोई इस हाल में न होगा। और मैं उनको इस तरह भी पहचानूंगा कि उनके आ़मालनामे उनके दाहिने[1] हाथ में दिए जाएंगे और इस तरह भी उनको पहचानूंगा कि उनकी ज़ुर्रियत[2] उनके आगे दौड़ती होगी।

हौज़े कौसर

हश्र के मैदान में बड़ी भारी तादाद में हौज़ होंगे। आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि हर नबी का एक हौज़ होगा और सब नबी आपस में इस पर फ़ख़्र करेंगे कि किस के पास पीने वाले ज़्यादा आते हैं (हर नबी के हौज़ से उसके उम्मती पानी पीएंगे) और मैं उम्मीद करता हूं कि सबसे ज़्यादा लोग मेरे पास पीने के लिए आएंगे।[3]

हज़रत अनस ؓ ने फ़रमाया कि मैंने नबी करीम ﷺ से अ़र्ज़ किया कि आप क़ियामत के दिन मेरे लिए सिफ़ारिश फ़रमा दें। आप ने इर्शाद फ़रमाया कि हां, मैं कर दूंगा। मैंने अ़र्ज़ किया, आपको कहां तलाश करूं? फ़रमाया पहले पुलसिरात पर तलाश करना। मैंने अ़र्ज़ किया, वहां आपसे

---

1. बुख़ारी व मुस्लिम
2. क़ुरआन शरीफ़ में है कि जिनके आ़मालनामे दाहिने हाथ में दिए जाएंगे, उनसे आसान हिसाब होगा और अपने बाल-बच्चों में ख़ुश-ख़ुश लौटकर जाएंगे। इसमें उम्मते मुहम्मदिया को ख़ास नहीं किया गया। इसलिए इस हदीस शरीफ़ में यह फ़रमाया कि मैं अपनी उम्मत को इस तरह पहचानूंगा कि उनके आ़मालनामे सीधे हाथों में किसी ऐसी शक्ल से उनको आ़मालनामे मिलेंगे जो दूसरी उम्मतों के साथ न होगा या यह समझो कि उम्मते मुहम्मदिया को सबसे पहले दिए जाएंगे। (हाशिया मिश्कात)
3. क्योंकि उम्मते मुहम्मदिया (अ़ला साहिबिस्सलातु वस्सलाम) सब उम्मतों से ज़्यादा होगी। —तिर्मिज़ी

मुलाक़ात न हो तो कहां तलाश करूं? फ़रमाया आमाल की तराज़ू के पास तलाश करना! मैंने अ़र्ज़ किया; वहां भी मुलाक़ात न हो तो कहां हाज़िर हूं? फ़रमाया हौज़ पर तलाश करना, इन तीनों जगहों में से किसी एक जगह ज़रूर मिल जाऊंगा। —तिर्मिज़ी

हज़रत मुहम्मद ﷺ के हौज़ की ख़ूबियां

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رضي الله عنه रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरे हौज़ की लम्बाई-चौड़ाई इतनी ज़्यादा है कि उसके एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ जाने के लिए एक महीने की मुद्दत चाहिए और उसके कोने बराबर हैं (यानि वह चौकोर है, लम्बाई-चौड़ाई दोनों बराबर हैं) उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद है और उसकी ख़ुश्बू मुश्क से ज़्यादा उम्दा है और उसके लोटे इतने हैं जितने आसमान के सितारे हैं जो उसमें से पीयेगा, कभी प्यासा न होगा। —बुख़ारी व मुस्लिम

हज़रत अबू हुरैरः رضي الله عنه ने रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि बेशक मेरा हौज़ इतना लंबा-चौड़ा है कि उसके दोनों किनारों के दर्मियान उस फ़ासले से भी ज़्यादा फ़ासला है जो एला से अ़दन तक है। सच जानो वह बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा है। जो दूध में मिला हुआ हो और उसके बर्तन सितारों की तादाद से ज़्यादा हैं और मैं (दूसरी उम्मतों) को अपने हौज़ पर आने से हटाऊंगा। जैसे (दुनिया में) कोई शख़्स दूसरों के ऊंटों को अपने हौज़ से हटाता है। सहाबा رضي الله عنهم ने अ़र्ज़ किया-ऐ अल्लाह के रसूल! क्या उस दिन आप हमको पहचानते होंगे? इर्शाद फ़रमाया, हां (ज़रूर पहचान लूंगा, इसलिए कि) तुम्हारी एक निशानी होगी जो और किसी उम्मत की न होगी और वह यह कि तुम हौज़ पर मेरे पास इस हाल में आओगे कि वुज़ू के आसार से तुम्हारे चेहरे रौशन होंगे और हाथ-पांव सफ़ेद होंगे। —मुस्लिम

दूसरी रिवायत में यह भी आप ﷺ इर्शाद फ़रमाया कि आसमान के तारों की तादाद में हौज़ के अंदर सोने-चांदी के लोटे नज़र आ रहे होंगे[1]। यह

1. मुस्लिम

भी इर्शाद फ़रमाया कि इस हौज़ में दो परनाले गिर रहे होंगे जो जन्नत (की नहर से) उसके पानी में बढ़ौतरी कर रहे होंगे। एक परनाला सोने का और दूसरा चांदी का होगा।[1]

सबसे पहले हौज़ पर पहुंचने वाले

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरा हौज़ इतना बड़ा है जितना अ़दन[2] और ओमान के दर्मियान फ़ासला है। बर्फ़ से ज़्यादा ठंढा और शहद से ज़्यादा मीठा है और मुश्क़ से बेहतर उसकी ख़ुश्बू है। उसके प्याले आसमान के सितारों से भी ज़्यादा हैं जो उसमें से एक बार पी लेगा, उसके बाद कभी भी प्यासा न होगा। सबसे पहले पीने के लिए उस पर मुहाजिर फ़ुक़रा (मुहताज) आएंगे। किसी ने (मौजूद लोगों में से) सवाल किया कि ऐ अल्लाह के रसूल। उनका हाल बता दीजिए? फ़रमाया ये वह लोग हैं (दुनिया में) जिनके सरों के बाल बिखरे हुए और चेहरे (भूख, मेहनत व थकन की वजह से) बदले होते थे। इनके लिए (बादशाहों और हाकिमों) के दरवाज़े नहीं खोले जाते थे और अच्छी औ़रतों इनके निकाह में नहीं दी जाती थीं और (इनके मामलों की ख़ूबी का यह हाल था कि) इनके ज़िम्मे जो हक़ (किसी का) होता था तो सब चुका देते थे और इनका जो (हक़ किसी पर) होता था तो पूरा न लेते थे (बल्कि थोड़ा बहुत) छोड़ देते थे।[3]

यानी दुनिया में उनकी बदहाली और तंगी का यह हाल था कि बाल

---

1. मुस्लिम
2. हौज़ की लम्बाई-चौड़ाई कई तरह इर्शाद फ़रमायी है, कहीं एक माह की दूरी उसके किनारों के दर्मियान फ़रमाया; कहीं एला और अ़दन के बीच की दूरी से इसे नापा; कहीं कुछ और फ़रमाया। इन मिसालों का मक़्सद हौज़ की लम्बाई-चौड़ाई को समझाना है, नापी हुई दूरी बताना मुराद नहीं है। मौजूद लोगों के हिसाब से वह दूरी ज़िक्र फ़रमायी है जिसे वे समझ सकते थे। खुलासा तमाम रिवायतों का यह है कि हौज़ की दूरी सैकड़ों मील है।
3. तर्ग़ीब व तर्हीब

सुधारने और कपड़े साफ़ रखने की ताकत् भी न थी और ज़ाहिर है संवारने के उनको ऐसा ख़ास ध्यान भी न था कि बनाव-सिंगार के चोंचले में वक़्त गुज़ारते और आख़िरत से गफ़लत बरतते। उनको दुनिया में फ़िक्र-मुसीबतें इस तरह घेरी रहते थीं कि चेहरों पर उनका असर ज़ाहिर था। दुनिया वाले उनको ऐसा नीच समझते थे कि मज्लिसों, जश्नों और शाही दरबारों में उनको दावत देकर बुलाना तो दूर की बात उनके लिए ऐसे मौक़ों में दरवाज़े ही न खोले जाते थे और वे औरतें जो नाज़ व नेमत में पली थीं, इन ख़ुदा के ख़ास बन्दों के निकाहों में नहीं दी जाती थीं मगर आख़िरत में उनका रुत्बा होगा कि हौज़ कौसर पर सबसे पहले पहुंचेंगे। उनको नीच समझने वाले और उनके बाद उस पाक हौज़ से पी सकेंगे (बशर्ते कि ईमान वाले और उसमें से पीने के लायक़ हों)।

हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अज़ीज़ (रह०) के सामने आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ का यह इर्शाद सुनाया गया कि हौज़े कौसर पर सबसे पहले फ़ुक़रा मुहाजिरीन पहुंचेंगे जिनके सर बिखरे हुए और कपड़े मैले रहते थे और जिनसे अच्छी औरतों के निकाह न किये जाते थे और जिनके लिए दरवाज़े नहीं खोले जाते थे। नबी करीम ﷺ के इस इर्शाद को सुनकर हज़रत उमर बिन अब्दुल अ़ज़ीज़ (घबरा गये) और बेइख़्तियार फ़रमाया कि मैं तो ऐसा नहीं हूं। मेरे निकाह में अ़ब्दुल मलिक की बेटी फ़ातिमा (शाहज़ादी) है और मेरे लिए दरवाज़े खोले जाते हैं। अब तो ज़रूर ही ऐसा करूंगा कि उस वक़्त तक सर को न धोऊंगा जब तक बाल बिखर न जाया करेंगे और न अपने बदन का कपड़ा उस वक़्त तक धोऊंगा जब तक मैला न हो जाया करे।

हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अज़ीज़ (रह०) वक़्त के ख़लीफ़ा और इस्लामी सरकार के चलाने वाले थे। आख़िरत की फ़िक्र के उनके बड़े-बड़े क़िस्से एतबार वाली किताबों में मिलते हैं।

हौज़े कौसर से हटाये जाने वाले

हज़रत सहल बिन सअ़्द ﷺ से रिवायत है कि रसूले करीम ﷺ ने

इर्शाद फ़रमाया कि यक़ीन जानो (क़ियामत के दिन) हौज़ पर तुम्हारा मेरा सामना होगा (यानी मैं तुमको पिलाने के लिए पहले पहुंचा हुआ हूंगा)। जो मेरे पास से होकर गुज़रेगा, पी लेगा और जो (मेरे पास हौज़ से) पी लेगा, कभी प्यासा न होगा। फिर इर्शाद फ़रमाया ऐसा ज़रूर होगा कि पीने के लिए मेरे पास ऐसे लोग आएंगे, जिनको में पहचानता हूंगा और वे मुझे पहचानते होंगे, फिर (उनको मुझ तक पहुंचने न दिया जाएगा बल्कि) मेरे और उनके दर्मियान आड़ लगा दी जाएगी और वे पीने से महरूम रह जाएंगे। मैं कहूंगा ये तो मेरे आदमी हैं (इनको आने दिया जाए)। इसपर (मुझ से) कहा जाएगा कि आप नहीं जानते कि आपके बाद उन्होंने क्या नयी चीज़ें निकाली थीं, यह सुनकर मैं कहूंगा दूर हो, जिन्होंने मेरे बाद अदल-बदल किया।'

—बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़

आह! दीन में पच्चर लगाने वालों का उस वक़्त कैसा बुरा हाल होगा जबकि क़ियामत के दिन प्यास से बेताब और मुसीबत से परेशान होंगे और हौज़े कौसर के क़रीब पहुंचाकर धुत्कार दिये जाएंगे और प्यारे नबी ﷺ उनकी 'नयी बातों' का हाल सुनकर 'दूर-दूर' फ़रमा कर फटकार देंगे।

क़ुरआन व हदीस में जो कुछ आया है और जो हदीसों और आयतों से निकलता है, उसी पर चलने में भलाई और कामयाबी है। लोगों ने हज़ारों बिद्अ़तें निकाल रखी हैं और दीन में अदल-बदल कर रखा है, जिनसे उनकी दुनिया भी चलती है और नफ़्स को मज़ा भी आता है और अलग-अलग इलाक़ों में अलग-अलग बिद्अतें रिवाज पा गयी हैं। ऐसे लोगों को समझाया जाता है तो उलटा समझाने वाले ही को बुरा कहते हैं। हम सीधी और मोटी-सी एक बात कह देते हैं कि जो कोई काम करना हो, आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने जैसे फ़रमाया, इस तरह करो और जिस तरह आपने किया उसी तरह अ़मल करो।

—मिश्कात

दुनियादार पीर-फ़क़ीर या मौलवी-मुल्ला अगर कहें कि फ़्लां काम में सवाब है और अच्छा है तो उनसे सबूत मांगो और पूछो कि बताओ आंहज़रत ﷺ ने किया है या नहीं? और हदीस शरीफ़ की किस किताब में

लिखा है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ को ऐसा करना पसंद था या आपने इसको अंजाम दिया है।

मरने-जीने और ब्याह-शादी में औरतों ने और दुनियादार पीरों-फ़क़ीरों ने बड़ी बिद्अतें और ग़ैर शरई रस्में निकाल रखी हैं। सोयम, चेहल्लुम, क़ब्र पर चादर, क़ब्र का ग़ुस्ल, संदल, उर्स, पक्की क़ब्र और इसी तरह की बहुत-सी बातें जो क़ब्रों पर होती है, बिदअ़त हैं। ऐसा करने वाले अंजाम सोच लें। हौज़े कौसर से हटाये जाने को तैयार रहें और क़ब्र का तवाफ़ और क़ब्र को या पीर को सज्दा यह तो शिर्क है, जो गुनाह में बिदअ़त से कहीं ज़्यादा बढ़ा हुआ है।

अपने-अपने बापों के नाम से बुलाये जाएंगे

हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम क़ियामत के दिन अपने नामों के साथ और अपने बापों के नामों के साथ बुलाये जाओगे। इसलिए तुम अपने नाम अच्छे रखो[1]। आमतौर से मशहूर है कि क़ियामत के दिन लोग अपनी माँओं के नामों के साथ पुकारे जाएंगे, सही नहीं है बनायी हुई बात है।[2]

क़ियामत बुलन्द और पस्त करने वाली होगी

क़ियामत के बारे में अल्लाह का इर्शाद है :

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ، لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ، خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ

इज़ा व क़ अतिल वाक़िअः लै स लिवक़् अतिहा काज़िबः ख़ाफ़िज़तुर्राफ़िअः। —*सूरः वाक़िअः*

---

1. अहमद, अबूदाऊद
2. इमाम बुख़ारी ने अपनी जामे सहीह में बाब **'मा युद्अ़न्नास यौमल क़ियामति बि आबाइहिम'** क़ायम करके सही हदीसों से साबित किया है कि क़ियामत के दिन बापों के नाम से बुलावा होगा। मुआ़लिमुत्तंज़ील में माँओं के नामों के साथ पुकारने की तीन वजहें बतायी गयी हैं। लेकिन ये सब मनगढ़त हैं जो सिर्फ़ रिवायत के मशहूर होने की वजह से तज्वीज़ किया गये हैं। चुनांचे साहिबे मुआ़लिमुत्तंज़ील ने तीनों वज्हों का ज़िक्र फ़रमाया है कि सही हदीसें इस मशहूर क़ौल के ख़िलाफ़ हैं।

'जिस वक़्त होने वाली वाक़ेअ़ हो जाएगी, नहीं है उसके होने में कुछ झूठ। वह पस्त करने वाली है और बुलंद करने वाली है।'

क़ियामत के दिन अ़मल के मुताबिक़ रुत्बों में फ़र्क़ होगा और छोटाई-बड़ाई का मेयार नेकी-बदी होगा। यहां दुनिया में जो छोटा-बड़ा होने के मेयार हैं यहीं रह जाएंगे। बड़े-बड़े घमंडी, जो दुनिया में बहुत घमंडी और सरबुलंद समझे जाते थे, क़ियामत के दिन दोज़ख़ के गहरे गढ़े में ढकेल दिए जाएंगे और उनकी बड़ाई और चौधराहट धूल में मिल जाएगी। वहाँ ये मर्दूद कहेंगे :

مَآ اَغۡنٰى عَنِّىۡ مَالِيَهۡ۝ هَلَكَ عَنِّىۡ سُلۡطٰنِيَهۡ۝

मा अग़्ना अ़न्नी मालियः। ह ल क अ़न्नी सुल्तानियः।

'मेरा माल मेरे कुछ काम न आया, जाती रही मेरी हुकूमत।'

और यह कहना और हाथ मलना कुछ काम न आयेगा। और बहुत से लोग ऐसे होंगे जो दुनिया में नर्म बनकर रहते थे, लोग उनको नीची की नज़र से देखते थे और नीची ज़ात का समझते थे और उनको अपनी बड़ाई का ख़्याल न था लेकिन चूंकि उन्होंने अल्लाह से अपना तअ़ल्लुक़ सही रखा और अल्लाह के हुक्मों पर अ़मल करते रहे। इसलिए क़ियामत के दिन उनमें से कोई मुश्क के टीले पर बैठा होगा; कोई नूर के मिंबर पर होगा; अ़र्श के साए में मज़े करते होंगे। फिर बहुत-से तो बेहिसाब और बहुत-से तो हिसाब के बाद जन्नत में दाख़िल होंगे और उसके साफ़-सुथरे कोठों में चैन से रहेंगे।

اولئك يجزون الغرفة بما صبروا ويلقون فيها تحية وسلما

उलाइ क युज्ज़ौ नल ग़ुर्फ़ त बिमा स ब रू व युलक़्क़ौ न फ़ीहा तहीय्यतौंव सलामा।

सरवरे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि ख़बरदार! बहुत-से लोग जो दुनिया में खाते-पीते और नेमतों में रहने वाले हैं। आख़िरत में नंगे-भूखे होंगे। फिर फ़रमाया कि ख़बरदार! दुनिया में बहुत-से लोग ऐसे हैं जो अपने को इज़्ज़तदार बना रहे हैं और हक़ीक़त में वे अपने को ज़लील कर रहे हैं

(जिसका पता आख़िरत में चल जाएगा) और बहुत-से लोग दुनिया में ऐसे हैं जो (नर्मी की वजह से) अपने को ज़लील कर रहे हैं। सच तो यह है कि वे अपने को इज़्ज़तदार बना रहे हैं (क्योंकि उनकी नर्मी उनको जन्नत में पहुंचा देगी)। —तर्ग़ीब व तर्हीब

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि ज़रूर ऐसा होगा कि क़ियामत के दिन (भारी भरकम) मोटा-ताज़ा आदमी आयेगा, जिसका वज़न अल्लाह के नज़दीक मच्छर के बराबर भी न होगा यानी उसकी हैसियत और पोज़ीशन उस दिन न होगी) फिर आपने फ़रमाया कि तुम चाहो तो (मेरी बात की तस्दीक़ में) इस आयत को पढ़ लो।

فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا

फ़ ला नुक़ीमु लहुम यौमल क़ियामति वज़्ना।

(तो हम क़ियामत के दिन उनके लिए ज़रा वज़न भी क़ायम न करेंगे)।

आज दुनिया में बहुत-से आक़ा हैं जिनके नौकर-चाकर और ख़ादिम हैं। इन नौकरों को गालियां देते हैं, मारते-पीटते हैं और बहुत-से लोग दौलत या ओहदे के नशे में कम-हैसियत लोगों से बेगारें लेते हैं और बात-बात में लात-घूंसा दिखाते हैं। क़ियामत का दिन सही फ़ैसले और वाक़ई इंसाफ़ का होगा। वहां बहुत-से नौकर-चाकर और कम-हैसियत लोग बुलन्द हो जाएंगे और घमंड करने वाले, दौलत व पोज़ीशन वाले, जो ख़ुदा के बाग़ी थे, पस्त हो जाएंगे उनपर ज़िल्लत सवार होगी और दोज़ख़ का रास्ता लेंगे। क्या हाल बनेगा उन लोगों का जो बड़ाई के लिए एलेक्शन पर एलेक्शन लड़े चले जाते हैं और बड़ाई की उम्मीद में या बड़ाई मिलने के लिए अल्लाह तआला के हुक्मों के ख़िलाफ़ करते रहते हैं, ऐसे लोग अपना अंजाम सोच लें।

नेमतों का हाल

क़ियामत के दिन नेमतों का सवाल होगा। क़ुरआन शरीफ़ में इर्शाद है :

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ

सुम्म म ल तुस्अलुन्न न यौ म इज़िन अनिन्नईम।

(फिर अलबत्ता ज़रूर तुमसे उस दिन नेमतों की पूछ होगी)।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिलाशुब्हा क़ियामत के दिन नेमतों में से सबसे पहले (तन्दुरुस्ती और ठंढे पानी का सवाल होगा और) यूँ पूछा जाएगा कि क्या हमने तेरे जिस्म को ठीक न रखा था और क्या तुझे हमने ठंढे पानी से तर नहीं किया था। —तिर्मिज़ी शरीफ़

अल्लाह तआ़ला ने जो कुछ भी इनायत फ़रमाया है बग़ैर किसी हक़ के दिया है। उनको यह हक़ है कि अपनी नेमत के बारे में सवाल करें और यह पकड़ करें कि जिन नेमतों में तुम रहे बोलो, इन नेमतों का क्या हक़ अदा किया और मेरी इबादत में कितना लगे और इन नेमतों के इस्तेमाल के बदले क्या लेकर आये? यह सवाल बड़ा ही कठिन होगा। मुबारक हैं वे लोग जो खुदा की नेमतों के शुक्रिए में नेक अ़मल करते रहते हैं और आख़िरत की पूछ से कांपते हैं। इसके ख़िलाफ़ वे बदक़िस्मत हैं जो अल्लाह की नेमतों से पलते-बढ़ते हैं और नेमतों में डूबे हुए हैं, लेकिन खुदा की तरफ़ उनका ध्यान नहीं और खुदा के सामने झुकने का ज़रा ख़्याल नहीं। अल्लाह तआ़ला की अनगिनत नेमतें हैं। क़ुरआन शरीफ़ में इर्शाद है :

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَاتُحْصُوْهَا

व इन तउद्दू निअ़्मतल्लाहि ला तुहसूहा।

(अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनोगे, तो गिन नहीं सकते)।

फिर साथ ही यह भी फ़रमाया :

ان الانسان لظلوم كفار

इन्नल इन्सा न ले ज़लूमुन कफ़्फ़ार।

बिला शुब्हा इन्सान बड़ा ज़ालिम (और) नाशुक्रा है।

बिला शुब्हा यह इंसान की बड़ी नादानी और ज़ुल्म है कि मख़्लूक़ के ज़रा-से भी एहसान का भी शुक्रिया अदा करता है और जिससे कुछ मिलता

है, उससे दबता है और उसके सामने बा-अदब खड़ा होता है। हालांकि ये देने वाले मुफ़्त नहीं देते, बल्कि किसी काम के बदले या आगे किसी काम के मिलने की उम्मीद में देते-दिलाते हैं। अल्लाह तआ़ला, पैदा करने वाले मालिक, ग़नी और ग़नी बनाने वाले हैं; वे बग़ैर किसी ग़रज़ के देते हैं। लेकिन उनके हुक्मों पर चलने और उनके आगे सज्दा करने से इंसान भागता-फिरता है, यह बड़ी बदक़िस्मती है। अल्लाह की नेमतों को कोई कहां तक गिनेगा। जो नेमत है हर एक का मुहताज है। एक बदन की सलामती और तन्दुरुस्ती ही को ले लीजिए। कैसी बड़ी नेमत है। जब प्यास लगती है तो ग़टा ग़ट ठंढा पानी पी जाते हैं। यह पानी किसने पैदा किया है? इस पैदा करने वाले के हुक्मों पर चलने और शुक्रगुज़ार बन्दा बनने की भी फ़िक्र है या नहीं? यह ग़ौर करने की बात है।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द ﵁ रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन इंसान के क़दम हिसाब की जगह से न हट सकेंगे, जब तक कि उससे पांच चीज़ों का सवाल न हो जाएगा——————

1) उम्र का सवाल होगा कि किन चीज़ों में ख़त्म कर दी?
2) जवानी का सवाल होगा कि कहां बर्बाद कर दी?
3) माल का सवाल होगा कि कहां से कमाया?
4) और कहां ख़र्च किया?
5) इल्म का सवाल होगा कि (दीन और दीनियात का) जो इल्म था उस पर क्या अ़मल किया? —तिर्मिज़ी शरीफ़

हज़रत अनस ﵁ ने फ़रमाया कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन इंसान के तीन दफ़्तर होंगे। एक दफ़्तर में उसके नेक अ़मल लिखे होंगे। दूसरे दफ़्तर में उसके गुनाह दर्ज होंगे और एक दफ़्तर में अल्लाह की वे नेमतें दर्ज होंगी जो उसको ख़ुदा की तरफ़ से दुनिया में दी गई थीं। अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल सबसे छोटी नेमत से फ़रमायेंगे कि अपनी क़ीमत उसके नेक अ़मल में से ले लें। चुनांचे वह नेमत उसके तमाम नेक अ़मल को अपनी क़ीमत में लगा

लेगी और इसके बाद अ़र्ज़ करेगी कि (ऐ रब!) आपकी इज़्ज़त की क़सम! अभी मैंने पूरी क़ीमत वसूल नहीं की है। अब इसके बाद गुनाह बाक़ी रहे और नेमतें भी बाक़ी रहीं (जिनकी क़ीमत अदा नहीं हुई है) रहे नेक अ़मल! सो वे सब ख़त्म हो चुके। क्योंकि सबसे छोटी नेमत अपनी क़ीमत में तमाम नेक अ़मल को लगा चुकी है, पस अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे पर रहम करना चाहेंगे (यानी मग़्फ़िरत फ़रमा कर जन्नत अ़ता फ़रमाना चाहेंगे) तो फ़रमायेंगे कि ऐ मेरे बन्दे! मैंने तेरी नेकियों को बढ़ा दिया और तेरे गुनाहों से आंखें बचायीं।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि शायद आंहज़रत ﷺ ने इस मौक़े पर खुदा-ए-पाक का इर्शादे गरामी नक़ल फ़रमाते हुए यह भी फ़रमाया कि मैंने तुझे अपनी नेमतें (यों ही बग़ैर किसी बदले में) बख़्श दीं।

—तर्ग़ीब अ़निल बज़्ज़ार

हज़रत अनस ؓ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के रोज़ इंसान को बकरी के बच्चे की तरह (बेहक़ीक़त और बेहैसियत होने की हालत में) लाया जाएगा, फिर अल्लाह के सामने खड़ा कर दिया जाएगा। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे कि मैंने तुझे दिया और नेमतों से मालामाल किया, तूने क्या किया? वह जवाब देगा कि ऐ रब! मैंने माल जमा किया और नफ़ा पर नफ़ा कमाकर उसे बढ़ाया और जितना शुरू में था, उससे बहुत ज़्यादा बढ़ाकर छोड़ आया हूं। इसलिए आप मुझे इजाज़त दीजिए। मैं सारा आपके दरबार में लाकर हाज़िर कर देता हूं। अल्लाह का इर्शाद होगा (यहां से वापस जाने का क़ानून नहीं है) जो पहले से यहां भेजा था वह दिखाओ। इस फ़रमान के जवाब में वह फिर वही कहेगा कि ऐ रब। मैंने माल जमा किया और नफ़ा पर नफ़ा कमाकर उसे बढ़ाया और जितना शुरू में था उससे बहुत ज़्यादा बढ़ाकर छोड़ आया। पस मुझे वापस भेज दीजिए मैं सारा माल लाकर आपके दरबार में हाज़िर कर देता हूं।

खुलासा यह है कि वह यही जवाब देगा और चूंकि कुछ पहले से वहां के लिए इस दुनिया से न भेजा था। इसलिए वह नतीजे के तौर पर ऐसा शख़्स निकलेगा जिसने ज़रा भलाई (अपने लिए) पहले से न भेजी थी। चुनांचे उसको दोज़ख़ की तरफ़ रवाना कर दिया जाएगा। —तिर्मिज़ी शरीफ़

पैग़म्बरों से सवाल

क़ुरआन शरीफ़ में इर्शाद है :

فَلَنَسْئَلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْئَلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ

फ ल नस्अल न्न ल्लज़ी न उर्सि ल इलैहिम व ल नस्अलन्नल मुर्सलीन। *—सूरः आराफ़*

'सो हमको ज़रूर पूछना है उनसे जिनके पास पैग़म्बर भेजे गये और ज़रूर पूछना है पैग़म्बरों से।'

इसकी तशरीह (व्याख्या) दूसरी आयतों में इस तरह फ़रमायी :

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَا اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْبَاءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُوْنَ (قصص:٢٠)

व यौ म युनादीहिम फ़ यक़ूलु मा ज़ अजब्तुमुल मुर्सलीन। फ़ अ़मियत अ़लैहिमुल अंबाउ यौ म इज़िन फ़हुम ला य त सा अलून। *—सूरः क़सस*

'और जिस दिन उनसे पुकार कर पूछेगा कि तुमने पैग़म्बरों को क्या जवाब दिया। सो उस दिन उनसे सब मज़ामीन गुम हो जाएंगे पस वे आपस में भी पूछ-पाछ न कर सकेंगे।'

यानी रिसालत के बारे में सवाल होगा कि तुम पैग़म्बरों के समझाने पर समझे या नहीं? पैग़म्बरों को तुमने क्या जवाब दिया?

इस सवाल का कोई जवाब न बन पड़ेगा।

दूसरी जगह इर्शाद है :

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَا اُجِبْتُمْ ○ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ (مائده:٧)

यौ म यज्मउल्लाहुर्रुसु ल फ़ यक़ूलु मा ज़ उजिब्तुम। क़ालू

ला इलम लना। इन्न क अन्त अ़ल्लामुल गुयूब। –सूरः माइदः

'जिस दिन अल्लाह तआ़ला जमा फ़रमायेंगे सब पैग़म्बरों को फिर सवाल फ़रमायेंगे कि तुमको क्या जवाब मिला। वे कहेंगे हमको ख़बर नहीं! बेशक आप छिपी बातों के जानने वाले हैं।'

यह सवाल अंबिया किराम अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम से उनकी उम्मतों के सामने होगा कि जब तुम उनके पास हक़ की दावत ले गये तो उन्होंने क्या जवाब दिया। उस वक़्त अल्लाह की बड़ाई ज़ाहिर होगी। उसके क़हर से सब डर रहे होंगे। बेइंतिहा डर की वजह से अल्लाह तआ़ला के सामने जवाब में *'ला इलम लना'* (हमको कुछ ख़बर नहीं) से ज़्यादा कुछ न कह सकेंगे।

सूरः निसा में फ़रमाया :

فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا۔

फ़ कै फ़ इज़ा जिअ्ना मिन कुल्लि उम्मतिन बिशहीदिंव्व
जिअ्ना बि क अ़ला हा उलाइ शहीदा।

'फिर उस वक़्त क्या हाल होगा। जब बुलाएंगे हम हर उम्मत में से (उसका) हाल बताने वाला और तुमको उन (लोगों) के मुतअ़ल्लिक़ गवाही देने वाला बनाकर लाएंगे।'

इससे हर उम्मत का नबी और हर ज़माने के नेक और मोतबर लोग मुराद हैं कि वह क़ियामत के दिन लोगों की नाफ़रमानी और फ़रमांबरदारी ब्यान करेंगे और सबके हालात की गवाही देंगे। यह जो फ़रमाया, **'व जिअ्ना बि क अ़ला हा उलाइ शहीदा०'** (कि ऐ मुहम्मद ﷺ तुमको उनके मुतअ़ल्लिक़ गवाही देने वाला बना कर लाएंगे) इसका मतलब यह है कि दूसरे नबियों की तरह आप भी अपनी उम्मत के हालात व आ़माल के बारे में गवाही देंगे और यह भी हो सकता है कि **'हा उलाइ'** का इशारा नबियों की तरफ़ हो। जिसका मतलब यह होगा कि सैयदे आ़लम हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ हज़रत अंबिया-ए-किराम की सच्चाई पर गवाही देंगे जबकि

उनकी उम्मत उनको झूठा बताएंगी। एक बात यह भी हो सकती है कि **'हा उलाइ'** का इशारा काफ़िरों की तरफ़ हो, जिनका ज़िक्र पिछली आयत **'यौम इज़िंय्य वद्दुल्लज़ी न क फ़रू'** में हो चुका है। इस शक्ल में मतलब यह होगा कि जिस तरह पिछले नबी अपनी उम्मत के फ़ासिकों व काफ़िरों के फ़िस्क़ व कुफ़्र की गवाही देंगे। ऐसे ही आप भी ऐ मुहम्मद! इनकी बदआमाली पर गवाह बनेंगे, जिससे उनकी ख़राबी व बुराई और ज़्यादा साबित होगी।

फ़रिश्तों से ख़िताब

सूरः सबा में इर्शाद फ़रमाया :

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ط

व यौ म यहशुरुहुम जमीअन सुम्म म यक़ूलु लिल मलाइकति अ हाउलाइ इय्याकुम कानू यअ़्बुदून।

'और जिस दिन (अल्लाह तआला) जमा फ़रमायेगा इन सबको फिर फ़रिश्तों में सवाल फ़रमायेगा। क्या ये लोग तुमको पूजा करते थे।'

दुनिया में बहुत-से मुश्रिक फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियां बताते थे और उनके हैकल (बुत) बनाकर पूजते थे। कुछ उलमा का कहना है कि बुतपरस्ती की शुरुआत फ़रिश्तों की पूजा से हुई। क़ियामत के दिन मुश्रिकों को सुनाकर अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रिश्तों से सवाल फ़रमायेंगे, क्या ये लोग तुमको पूजते थे। शायद सवाल का मतलब यह हो कि तुमने तो उनसे ऐसा नहीं किया और तुम इनके काम से ख़ुश तो नहीं हुए? और इस सवाल का मक़सद भी हो सकता है कि फ़रिश्तों का यह जवाब मुश्रिकों के सामने सुनवा दिया जाए कि न हमने उनको शिर्क की तालीम दी, न उनकी इस हरकत से ख़ुश हुए! ताकि मुश्रिकों को यह यक़ीन हो जाए कि अपने अ़मल के हम ख़ुद अकेले ज़िम्मेदार हैं।

फ़रिश्तों का जवाब

आगे इसी आयत के बाद फ़रमाया :

قَالُوْا سُبْحَانَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ۝

क़ालू सुब्हा न क अन्त वलीय्युना मिन दूनिहिम बल कानू यअ़्बुदू नल जिन्न न अकसरुहुम बिहिम मुअ्मिनून।

'फ़रिश्ते जवाब में अ़र्ज़ करेंगे कि तेरी ज़ात पाक है। तू ही हमारा वली है न कि वह। बल्कि वह पूजा करते थे जिन्नों की। उनमें अकसर उन्हीं को मानते थे।'

यानी आपकी ज़ात इससे पाक है कि किसी दर्जे में भी कोई आपका शरीक हो, हम क्यों ऐसी बात कहते और क्यों शिर्किया हरकतों से ख़ुश रहते। हमारी ख़ुशी अपकी ख़ुशी में है। इन नालायक़ों से हमको क्या वास्ता? ये बदबख़्त हक़ीक़त में हमारी पूजा करते भी न थे। नाम हमारी पूजा का लेते और पूजते शैतानों को थे! शैतान उनको जिस तरफ़ मोड़ते, उधर ही मुड़ जाते थे। चाहे फ़रिश्तों का नाम लेकर, चाहे किसी नबी का, किसी वली और शहीद, पीर-फ़क़ीर का।

आगे फ़रमाया :

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا وَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّتِىْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ۝

फ़ल् यौ म ला यम्लिकु बअ़्ज़ुकुम लिबअ़्ज़िन नफ़्औं व ला ज़रौं व नक़ूलु लिल्लज़ी न ज़ ल मू ज़ूक़ू अ़ज़ाबन्ना रिल्लती कुन्तुम बिहा तुकज़्ज़िबून।

'सो, आज मालिक नहीं तुम में से कोई एक दूसरे के नफ़ा का, न नुक़्सान का और हम कह देंगे यह ज़ालिमों से कि चखो उस आग का अ़ज़ाब जिसे तुम झुठलाते थे।'

हज़रत नूह ﷺ की उम्मत के ख़िलाफ़ उम्मते मुहम्मदिया की गवाही

हज़रत अबू सईद ﷺ से रिवायत है कि रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन हज़रत नूह ﷺ को लाया जाएगा और उनसे सवाल होगा कि क्या तुमने तब्लीग़ (प्रचार) की? वे अ़र्ज़ करेंगे कि या रब! मैंने सच में तब्लीग़ की थी! उनकी उम्मत से सवाल होगा कि बोलो क्या इन्होंने तुमको हुक्म पहुंचाये? वे कहेंगे कि नहीं! हमारे पास तो कोई नज़ीर (यानी डराने वाला) नहीं आया। इसके बाद हज़रत नूह ﷺ से पूछा जाएगा कि तुम्हारे दावे की तस्दीक़ की गवाही देने वाले कौन हैं? वे जवाब देंगे कि हज़रत मुहम्मद ﷺ और उनके उम्मती हैं। यहां तक वाक़िआ नक़ल करने के बाद आंहज़रत ﷺ ने अपनी उम्मत को ख़िताब करके फ़रमाया कि इसके बाद तुमको लाया जाएगा और तुम गवाही दोगे कि बेशक हज़रत नूह ﷺ ने अपनी क़ौम को तब्लीग़ की थी। इसके बाद आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने (सूरः बकरः की) नीचे की आयतें तिलावत फ़रमायीं :

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ
الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ط

व कज़ालि क जअ़ल्नाकुम उम्मतौं व स तल्लितकूनू शु ह दा अ अ़लन्नासि व यकूनर्रसू लु अ़लैकुम शहीदा।

'और हमने तुमको एक ऐसी जमाअ़त बना दी है जो बहुत दर्मियानी है ताकि तुम दूसरी उम्मतों के लोगों के मुक़ाबले में गवाह बनो। और तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह ﷺ गवाह बनें।'

यह बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है। मुस्नद इमाम अहमद (रह०) की एक रिवायत से ज़ाहिर होता है कि हज़रत नूह ﷺ के अ़लावा दूसरे नबी ﷺ की उम्मतें भी इंकारी होंगी और कहेंगी कि हमको तब्लीग़ नहीं की गई। उनके नबीयों से सवाल होगा कि तुमने तब्लीग़ की। वे कहेंगे कि जो हमने तब्लीग़ की थी। इस पर उनसे गवाह मांगे जाएंगे तो वे हज़रत मुहम्मद ﷺ

और उनकी उम्मत को गवाही में पेश करेंगे। चुनांचे हज़रत मुहम्मद ﷺ और उनकी उम्मत से सवाल होगा कि इस बारे में आप हज़रात क्या कहते हैं। जवाब में अ़र्ज़ करेंगे-जी, हम पैग़म्बरों के दावे की तस्दीक़ करते हैं? उम्मते मुहम्मदिया से सवाल होगा कि तुमको इस मामले में क्या ख़बर है? वे जवाब में अ़र्ज़ करेंगे कि हमारे पास हमारे नबी ﷺ तशरीफ़ लाये और उन्होंने ख़बर दी कि तमाम पैग़म्बरों ने अपनी-अपनी उम्मत की तब्लीग़ की।[1]

आयत का आम होना **'लि तकूनू शुहदा अ अ़लन्नास'** भी इसको चाहता है कि हज़रत नूह ؑ के अ़लावा दूसरे नबियों की उम्मतों के मुक़ाबले में भी उम्मते मुहम्मदिया गवाही देंगी।

यहां एक शुब्हा किया जा सकता है और वह यह कि उम्मते मुहम्मदिया नबीयों से ज़्यादा सच्ची और एतबार के क़बिल तो नहीं है। फिर नबीयों की सच्चाई को उम्मते मुहम्मदिया की गवाही से साबित करने का क्या मतलब होगा? जवाब यह है कि ज़्यादा एतबार के और सच्चे तो हज़रात अंबिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम ही हैं लेकिन चूंकि इस मुक़द्दमे के फ़रीक़ हो गये। इसलिए दूसरे गवाहों की ज़रूरत होगी भले ही वे गवाह नबियों से कम दर्जे के होंगे।[2] और उनके एतबार वाला होने की गवाही प्यारे

---

1. कुछ रिवायतों में यह भी आया है कि जब उम्मते मुहम्मदिया दूसरी उम्मतों के मुक़ाबले में उनके नबियों की ताईद में गवाही देगी तो सैयदे आ़लम हज़रत मुहम्मद ﷺ से सवाल होगा कि क्या तुम्हारी उम्मत लायक़ है कि उनकी गवाही मोतबर मानी जाए? आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ अपनी उम्मत की अ़दालत की गवाही देंगे। यानी यह फ़रमायेंगे कि हां यह सच कहते हैं और इनकी गवाही मोतबर है। बेशक इस उम्मत का बड़ा मर्तबा है और बहुत बड़ाई है। जिसका हश्र के मैदान में अगलों-पिछलों के सामने ज़ुहूर होगा। उम्मते मुहम्मदिया ﷺ की गवाही पर हज़रात अंबिया किराम अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम के हक़ में अल्लाह के दरबार में फ़ैसला होना और अंबिया किराम अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम के मुख़ालिफ़ों का मुज्रिम क़रार पाकर सज़ा पाना इस उम्मत के लिए बड़े ऊंचे दर्जे की इ़ज़्ज़त है। —ब्यानुल क़ुरआन

2. यहाँ एक सवाल और पैदा होता है और वह यह है कि जब उम्मते मुहम्मदिया नबियों की तब्लीग़ के वक़्त मौजूद न थी तो उनकी गवाही कैसे एतबार की होगी? जवाब यह है कि गवाही का भरोसा सिर्फ़ यक़ीन पर है और महसूसात ग़ैर साबित बिल वह्य

नबी ﷺ दे देंगे जैसे कोई तहसीलदार (जो ख़ुद भी साहिबे इज्लास होता है) किसी गुस्ताख़ चपरासी के मुक़दमे में फ़रीक़ बन जाए तो हाकिमे आला के इज्लास में तहसीलदार से गवाह तलब किये जाएंगे। भले ही वे रुत्बे में तहसीलदार से छोटे दर्जे के हों और फिर उन गवाहों की सच्चाई को देख कर फ़ैसला किया जाएगा। यहीं से एक और शुब्हे का जवाब भी साफ़ हो जाता है। शुब्हा यह है कि रिसालत व तब्लीग़ के इंकारी इस मौक़े पर यह कह सकते है कि जब हमने नबियों को सच्चा न माना तो उनकी उम्मत (यानी उम्मते मुहम्मदिया) को क्यों सच्चा मानें? जवाब यह है कि ऐसा कहने का उनको हक़ न होगा क्योंकि मुद्दआ अ़लैह अगर उन गवाहों को झूठा साबित कर दे तो गवाह रद्द होंगे। गवाह पेश हो जाने के बाद मुद्दआ अ़लैह की तरफ़ से सिर्फ़ यह कह देना काफ़ी न होगा कि हम इनको सच्चा नहीं मानते। साथ ही इस हक़ीक़त से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि मुद्दआ अ़लैह गवाहों को सच्चा माने या न माने, फ़ैसला देने के लिए हाकिम के नज़दीक उनका सच्चा होना काफ़ी है।

मुश्रिकों का इंकार कि हम मुश्रिक न थे

सूरः अन्आ़म में फ़रमाया :

(वह्य के अ़लावा की महसूस चीज़ों) में यक़ीन हासिल होना बग़ैर देखे मुम्किन नहीं। इसलिए गवाही का मदार (आश्रय) मुशाहदा (देखना) को बना दिया गया है और नबियों की तब्लीग़ व रिसालत का वाक़िया अगर्चे महसूस भी है और मुशाहद (जिसे देखा जाए) भी है, लेकिन उम्मते मुहम्मिदया की गवाही का एतबार के क़ाबिल होना देखने की वजह से नहीं, बल्कि वह्य से साबित होने की वजह से होगा और वह्य से मुशाहदे जैसा बल्कि उससे भी ज़्यादा यक़ीन हासिल होता है। और यक़ीन ही असल गवाही का मदार है। जैसे कोई डॉक्टर किसी मुर्दा को जिसके बदन पर कोई ज़ाहिरी निशानी (ज़ख़्म वग़ैरह न हो) देखकर अपनी महारत के ज़रिए यह इज़्हार कर दे कि यह शख़्स मर्ज़ से नहीं बल्कि किसी भारी चोट से मरा है और इस वजह से क़ातिल की इन्कुवाइरी का हुक्म हो जाए तो इसके बावजूद कि डॉक्टर उसकी मौत के वक़्त मौजूद न था चूंकि सेहत के क़ायदों की वजह से 'भारी चोंट' वजह बतायी गयी, इसलिए इसका एतबार किया गया। —ब्यानुल क़ुरआन

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ اَشْرَكُوا اَيْنَ شُرَكَاءُ كُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّا اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَاكُنَّا مُشْرِكِيْنَ

व यौ म नह्शुरुहुम जमीअ़न सुम्म म नक़ूलु लिल्लज़ी न अश्रकू ऐ न शु र का उकुमुल्लज़ी न कुन्तुम तज़्उमून। सुम्म म लम तकुन फ़ित न तुहुम इल्ला अन् क़ालू वल्लाहि रब्बिना मा कुन्ना मुश्रिकीन।

'और वह वक़्त भी याद करने के क़ाबिल है जिस दिन हम इन सब को जमा करेंगे, फिर मुश्रिकों से कहेंगे कि तुम्हारे वे शरीक, जिनके माबूद होने के तुम मुद्दई थे, कहां गये। फिर उनके शिर्क का अंजाम बस यही होगा कि यूँ कहेंगे कि अल्लाह की क़सम! जो हमारा परवरदिगार है, हम मुश्रिक न थे।'

इसके बाद फ़रमाया :

اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰى اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَاكَانُوْا يَفْتَرُوْنَ○

उनज़ुर कै फ़ क ज़ बू अ़ला अन्फ़ुसिहिम व ज़ल्ल ल अ़न्हुम मा कानू यफ़्तरून।

'ज़रा देखो तो किस तरह झूठ बोला अपनी जानों पर और जिन चीज़ों को वे झूठ-मूठ तराशा करते थे, वे सब ग़ायब हो गयीं।'

इन्कार तो करेंगे मगर इन्कार से निजात कहां मिलेगी। आ़मालनामों और गवाहों के ज़रिए इल्ज़ाम साबित हो ही जाएगा।

जिनकी पूजा करते थे, वे भी इन्कारी होंगे।

सूरः यूनुस में फ़रमाया :

وَقَالَ شُرَكَاءُ هُمْ مَاكُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ

व क़ा ल शु र काउहुम मा कुन्तुम इय्याना तअ़बुदून। फ़ कफ़ा बिल्लाहि शहीदम बै न ना व बै नकुम इन कुन्ना अ़न इबादतिकुम ल ग़ाफ़िलीन।

‘और उनके शरीक कहेंगे कि तुम हमारी इबादत नहीं करते थे। सो हमारे तुम्हारे दर्मियान ख़ुदा काफ़ी गवाह है कि हमको तुम्हारी इबादत की ख़बर भी न की।’

हज़रत ईसा عليه السلام से सवाल

क़ियामत के दिन हज़रत ईसा عليه السلام से यही सवाल होगा जैसा कि सूरः माइदः में फ़रमाया :

وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَ اُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ○

व इज़ क़ालल्लाहु या ईसब्न मरय म अ अन्त क़ुल त लिन्नासित्तख़ि ज़ूनी व उम्मि य इलाहैनि मिन दूनिल्लाह।

‘और जबकि अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे कि ऐ ईसा बिन मरयम! क्या तुमने उन लोगों से कह दिया था कि मुझको और मेरी मां को ख़ुदा के अ़लावा माबूद बना लो।’

हज़रत ईसा عليه السلام का जवाब

قَالَ سُبْحٰنَكَ مَايَكُوْنُ لِيْ اَنْ اَقُوْلَ مَالَيْسَ لِيْ بِحَقٍّ ۗ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ تَعْلَمُ مَافِيْ نَفْسِيْ وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ۗ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝ مَاقُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝ اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَاِنْ تَغْفِرْلَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

का ल सुब्हा न क मा यकूनु ली अन अकू ल मा लै स ली बिहक़्क़। इन कुन्तु क़ुल्तुहू फ़क़द अ़लिम्तः। तअ़्लमु मा फी नफ़्सी व ला अअ़्लमु फ़ी नफ़्सिक । इन्न न क अन्त अ़ल्लामुल ग़ुयूब। मा क़ुल्तु लहुम इल्ला मा अमर्तनी बिही अनिअ़्बुदुल्ला ह रब्बी व रब्बुकुम व कुन्तु अ़लैहिम शहीदम्मा दुम्तु फ़ीहिम फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी कुन्त अन्तर्रक़ी ब अ़लैहिम व अन्त अ़ला कुल्लि शैइन शहीद। इन तुअ़्ज़िबहुम फ़ इन्नहुम इबादुक व इन तग़्फ़िर लहुम, फ़ इन्न क अन्तल् अ़ज़ीज़ुल हकीम।

'हज़रत ईसा ﷺ जवाब देंगे कि मैं तो आपको (हर ऐब) से बरी जानता हूं। मुझे किसी तरह मुनासिब न था कि ऐसी बात कहूं जिसके कहने का मुझे हक़ नहीं। मगर (अल्लाह की पनाह!) मैंने कहा होगा तो आप जानते होंगे। आप तो मेरे दिल की बात जानते हैं और मैं आप के इल्म में जो कुछ है, उसको नहीं जानता। बेशक आप तमाम ऐबों को ख़ूब जानते हैं। मैंने उनसे सिर्फ़ वही कहा जिसका आपने मुझे हुक्म दिया (और वह) यह कि तुम अल्लाह की इबादत करो जो मेरा भी रब है और तुम्हारा रब भी और मैं जब तक उनमें रहा, उनपर मुत्तला रहा। फिर जब आपने मुझे उठा लिया तो आप ही उन पर मुत्तला रहे और आप हर चीज़ की पूरी ख़बर रखते हैं। अगर आप उनको सज़ा दें तो यह आप के बन्दे हैं और अगर आप इनको माफ़ फ़रमा दें, तो आप अ़ज़ीज़ व हकीम हैं।

लेकिन काफ़िर और मुश्रिक की मग़्फ़िरत का क़ानून नहीं है। ज़रूर ही ईसाई दोज़ख़ में जाएंगे। अपने पैग़म्बरों की हिदायत को छोड़कर ख़ुद ही गुमराह और काफ़िर हुए। यक़ीनन अ़ज़ाब झेलेंगे।

हिसाब-किताब, क़िसास, मीज़ान

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّاعَمِلَتْ۔

व वुफ़्फ़ियत कुल्लु नफ़्सिम मा अ़मिलत०

'और हर जान को उसके अ़मल का पूरा बदला दिया जाएगा।'

नीयतों पर फ़ैसले

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि बेशक क़ियामत के दिन जिन लोगों के बारे में सबसे पहले फ़ैसला दिया जाएगा। उनमें से एक शख़्स वह होगा जो (जिहाद में क़त्ल हो जाने की वजह से) शहीद समझ लिया गया था, उसको क़ियामत के दिन लाया जाएगा। इसके बाद अल्लाह तआ़ला उसको नेमतों की पहचान कराएंगे जिनको वह पहचान लेगा (यानी उसे वे नेमतें याद आ जाएंगी जो अल्लाह ने दुनिया में उसको दी थीं) अल्लाह जल्ल ल शानुहू उस से सवाल फ़रमायेंगे कि तूने उन नेमतों को किस काम में लगाया? वह जवाब में अ़र्ज़ करेगा कि मैंने आपके रास्ते में यहां तक लड़ाई लड़ी कि शहीद हो गया। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे कि तूने झूठ कहा (तेरा यह कहना ग़लत है कि तूने मेरे लिए लड़ाई लड़ी)। बल्कि तूने इसलिए लड़ाई की कि तुझे बहादुर समझा जाए सो (इसका फल तुझे मिल चुका और) दुनिया में तेरा नाम हो चुका। इसके बाद हुक्म होगा कि इसे मुंह के बल खींचकर दोज़ख़ में डाल दिया जाए। चुनांचे हुक्म पूरा कर दिया जाएगा।

और एक आदमी उन लोगों में से भी होगा, जिसके बारे में सबसे पहले फ़ैसला किया जाएगा। जिसने इल्म (दीन) सीखा और सिखाया और क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा। उसे (क़ियामत के दिन) लाया जाएगा। इसके बाद अल्लाह तआ़ला उसको अपनी नेमतों की पहचान करायेंगे। चुनांचे वह पहचान लेगा। उससे अल्लाह तआ़ला सवाल फ़रमायेंगे कि तूने इन नेमतों को किस तरह काम में लगाया? वह जवाब देगा कि मैंने इल्म हासिल किया और दूसरों को सिखाया और आपकी ख़ुशी के लिए क़ुरआन पढ़ा। अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमायेंगे कि तूने झूठ बोला, (मेरे लिए तूने न इल्म हासिल किया, न क़ुरआन पढ़ा) बल्कि तूने इल्म इसलिए पढ़ा कि लोग तेरे मुतअ़ल्लिक़ यह कहें कि यह तो क़ुरआन पढ़ता रहता है (और इसका फल

तुझे मिल चुका और) दुनिया में तेरे मुतअ़ल्लिक़ वह कहा जा चुका जिसका तू चाहने वाला था। इसके बाद हुक्म होगा कि उसे मुंह के बल घसीट कर दोज़ख़ में डाल दिया जाए। चुनांचे हुक्म पूरा कर दिया जाएगा।

और एक वह शख़्स भी उन लोगों में से होगा जिनके मुतअ़ल्लिक़ सबसे पहले फ़ैसला किया जाएगा। जिसे अल्लाह तआ़ला ने बहुत कुछ दिया था और तरह-तरह के माल उसे दिये गये थे। क़ियामत के दिन उसे लाया जाएगा। इसके बाद अल्लाह तआ़ला अपनी नेमतों की पहचान करायेंगे। चुनांचे वह उनको पहचान लेगा। अल्लाह जल्ल ल शानुहू का सवाल होगा कि तूने इन नेमतों को किस चीज़ में लगाया? वह कहेगा कि कोई ऐसा भला काम जिसमें ख़र्च करना आप को महबूब हो, मैंने नहीं छोड़ा। हर भले काम में मैंने आप की ख़ुशी के लिए अपना माल ख़र्च किया। अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमायेंगे कि तूने झूठ बोला (मेरे लिए तूने ख़र्च नहीं किया) बल्कि तूने यह काम इसलिए किया कि तेरे बारे में यह कहा जाएगा कि वह सख़ी है, चुनांचे कहा जा चुका (और तेरा मक़सूद पूरा हो गया)। इसके बाद हुक्म होगा कि उसे मुंह के बल घसीटकर दोज़ख़ में डाल दिया जाए। चुनांचे इसे भी पूरा कर दिया जाएगा। —मिश्कात

तिर्मिज़ी शरीफ़ में भी यह हदीस मौजूद है। इसमें यही ज़िक्र किया गया है कि इसके ब्यान करने का हज़रत अबू हुरैरः ﷺ ने इरादा फ़रमाया तो (हश्र के मैदान के इस मंज़र के ख़्याल से) बेहोश हो गए। होश आने पर फिर ब्यान करने लगे तो दोबारा बेहोश हो गये। फिर होश आने पर तीसरी बार ब्यान करने का इरादा फ़रमाया तो तीसरी बार भी बेहोश हो गए और इसके बाद होश आने पर हदीस ब्यान फ़रमायी। जब यह हदीस हज़रत मुआ़विया ﷺ को सुनायी गयी तो फ़रमाया कि जब इन तीनों आदमियों के साथ ऐसा होगा तो इनके अ़लावा दूसरे बदनीयत इन्सानों के बारे में अच्छा मामला होने की क्या उम्मीद रखी जाए। इसके बाद हज़रत अमीर मुआ़विया ﷺ इतना रोये कि देखने वालों ने यह समझ लिया कि आज उनकी जान निकल कर रहेगी। —मिश्कात अ़न अहमद

हज़रत अबू सईद बिन फ़ुज़ाला ﷺ से रिवायत है कि हमारे नबी ﷺ ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन लोगों को जमा करेंगे जिनके आने में ज़रा शक नहीं है तो एक पुकारने वाला ज़ोर से पुकारेगा कि जिसने कोई अ़मल अल्लाह के लिए किया और इस अ़मल में किसी दूसरे को दिखाने की नीयत करके इस दूसरे को भी शरीक कर लिया तो उसको चाहिए कि इस अ़मल का सवाब अल्लाह के सिवा (इस ग़ैर से) ही ले ले।—मिश्कात

दूसरी हदीस में है (जिसकी रिवायत बैहक़ी ने शोबुल ईमान में की है) कि जिस दिन अल्लाह तआ़ला बन्दों को आ़माल का बदला देंगे। दिखावा करने वालों से फ़रमायेंगे, जाओ दुनिया में तुम जिनको दिखाने के लिए अ़मल करते थे। उन्हीं के पास जाओ। फिर देखो कि उनके पास तुम्हें कुछ सवाब या भलाई मिलती है। —मिश्कात शरीफ़

नमाज़ का हिसाब और नफ़्लों का फ़ायदा

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ ने फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना है कि बेशक क़ियामत के दिन बंदे के आ़माल में से पहले उसकी नमाज़ का हिसाब किया जाएगा। पस अगर नमाज़ ठीक निकली तो कामयाबी और बामुराद होगा और अगर नमाज़ ख़राब निकली तो नामुराद और टोटा उठाने वाला होगा। पस उसके फ़र्ज़ों में कोई कमी रह जाएगी तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे कि देखो, क्या मेरे बन्दे के कुछ नफ़्ल भी हैं? पस (अगर नफ़्ल निकले तो) जो फ़र्ज़ों में कमी होगी, नफ़्लों के ज़रिए पूरी कर दी जाएगी। फिर (नमाज़ के बाद) उसके बाक़ी अ़मलों का इसी तरह हिसाब होगा।[1]

एक रिवायत में है कि फिर (नमाज़ के बाद) इसी तरह ज़कात का हिसाब होगा। फिर (दूसरे) आ़माल इसी तरह से (हिसाब में) लिए जाएंगे। —मिश्कात शरीफ़

1. यानी फर्ज़ नमाज़ों की तकमील नफ़्लों से (ग़ैर नमाज़ में भी) की जाएगी।

बेहिसाब जन्नत में जाने वाले

अस्मा बिन्त यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन लोग एक ही मैदान में जमा किए जायेंगे, उस वक़्त एक पुकारने वाला ज़ोर से पुकार कर कहेगा कि वे लोग कहां हैं, जिनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते थे (क्योंकि वे रातों को नमाज़ों में वक़्त गुज़ारते थे)। यह सुनकर इस ख़ूबी के लोग पूरे मज्मे में से निकल कर खड़े होंगे जो तायदाद में (बहुत कम) होंगे। ये लोग जन्नत में बग़ैर हिसाब के दाख़िल हो जायेंगे फिर उसके बाद बाक़ी लोगों का हिसाब शुरू करने के लिए हुक्म होगा। —बैहक़ी शोबुल ईमान

हज़रत अबू उमामा رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया है कि मेरे रब ने मुझसे वादा फ़रमाया है कि तेरी उम्मत से सत्तर हज़ार बिला हिसाब-किताब जन्नत में दाख़िल होंगे, जिन पर कोई अज़ाब न होगा। हर हज़ार के साथ सत्तर हज़ार होंगे जो इसी बड़ाई से नवाज़े जायेंगे और तीन लप मेरे रब के लप[1] भरकर (भी) जन्नत में दाख़िल होंगे।

—मिश्कात शरीफ़

शिफ़ाअत वाली हदीस में हैं कि सरवरे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि मैं अर्श के नीचे अपने रब के लिए सज्दे में जा पड़ूंगा। फिर अल्लाह मुझे अपनी वे हम्दें और उम्दा तारीफ़ बता देगा जो मुझसे पहले किसी को न बताई होंगी। फिर अल्लाह का इर्शाद होगा कि ऐ मुहम्मद! अपना सर उठाओ और सवाल करो। तुम्हारा सवाल पूरा किया जाएगा और सिफ़ारिश करो, तुम्हारी सिफ़ारिश क़ुबूल की जाएगी। चुनांचे मैं सर उठाऊंगा। और *'या रब्बि उम्मती। या रब्बि उम्मती। या रब्बि उम्मती!* (ऐ मेरे रब! मेरी उम्मत, ऐ मेरे रब! मेरी उम्मत, ऐ मेरे रब: मेरी उम्मत) कहूंगा। इसलिए मुझसे कहा जाएगा

---

1. अल्लाह हाथ, लप, क़दम और चेहरे से पाक है। क़ुरआन व हदीस में जहां कहीं इन चीज़ों का ज़िक्र आया है, उन पर ईमान लाओ कि उनका जो मतलब अल्लाह के नज़दीक है। यही हमारे नज़दीक है और इनका ज़ाहिरी मतलब लेकर अल्लाह के लिए जिस्म तज्वीज़ कभी न करो।

कि ऐ मुहम्मद! अपनी उम्मत के उन लोगों को जन्नत के दरवाज़ों में से दाहिने दरवाज़े से जन्नत में दाख़िल कर दो, जिनसे कोई हिसाब नहीं है। (फिर फ़रमाया कि) क़सम उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जन्नत के दरवाज़े इतने चौड़े हैं, जितना कि मक्का और हिज्र[1] के दर्मियान फ़ासला है। —मिश्कात शरीफ़

हज़रत आइशा ﵂ फ़रमाती हैं कि मैंने एक नमाज़ में आंहज़रत ﷺ को यह दुआ करते हुए सुना कि———

اللهم حاسبنى حسابا يسيرا○

अल्लाहुम्म म हासिब्नी हिसाबैंयसीरा।

(ऐ अल्लाह! मुझसे आसान हिसाब लीजियो) मैंने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! आसान हिसाब का क्या मतलब है? इर्शाद फ़रमाया आसान हिसाब यह है कि आ़मालनामे से आंखें बचा कर मुंह फेर लिया जाए (और छानबीन न की जाए) यह सच है कि जिससे छानबीन करके हिसाब लिया गया, वह हलाक हुआ। —अहमद

सख़्त हिसाब

हज़रत आइशा ﵂ से यह भी रिवायत है कि नबी अकरम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन जिससे (सही मानी में) हिसाब लिया गया। वह बर्बाद होकर रहेगा। यह सुनकर मैंने अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं **'फ़ सौ फ़ युहासबु हिसाबैंयसीरा।'** (कि जिसके दाहिने हाथ में आ़मालनामा दिया गया। सो उससे बहुत जल्द आसान हिसाब होगा, इससे मालूम हुआ कि कुछ हिसाब देने वाले ऐसे भी होंगे, जो निजात पा जाएंगे।) आंहज़रत ﷺ ने इस सवाल के जवाब में फ़रमाया (आसान हिसाब से सही मानी में खोद-कुरेद और छानबीन वाला हिसाब मुराद नहीं है, बल्कि आसान हिसाब से यह मुराद है कि बन्दे के

1. हिज्र अरब के एक शहर का नाम था, जो मक्का से काफ़ी दूर था।

सामने सिर्फ़ आमालनामा पेश करके छोड़ दिया जाए। लेकिन जिसकी छानबीन हुई, वह तो बर्बाद ही होकर रहेगा। —बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़

मोमिन पर अल्लाह का ख़ास करम

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि बेशक (क़ियामत के दिन) अल्लाह तआ़ला मोमिन को अपने क़रीब करेंगे और (महशर वालों से उसे छिपा करके) फ़रमायेंगे कि क्या तुझे फ़्लां गुनाह याद है? क्या तुझे फ़्लां गुनाह याद है? वह जवाब में अर्ज़ करेगा कि, हां, ऐ रब! याद है, यहां तक कि अल्लाह तआ़ला उससे गुनाहों का इक़रार करा लेंगे और वह अपने दिल में यक़ीन कर लेगा कि मैं बर्बाद हो चुका। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे कि मैंने दुनिया में तेरे ऐबों को छिपाया और उन गुनाहों को ज़ाहिर न होने दिया और अब मैं बख़्शिश कर देता हूं। इसके बाद नेकियों का आमालनामा उसे इनायत कर दिया जाएगा। लेकिन काफ़िर और मुनाफ़िक़ लोगों का प्रोपगंडा किया जाएगा। सारी मख़्लूक़ के सामने उसके मुतअ़ल्लिक़ ज़ोर से पुकार दिया जाएगा कि ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब के बारे में झूठी बातें गढ़ी थीं। ख़बरदार! अल्लाह की लानत है ज़ालिमों पर। -बुखारी व मुस्लिम

बग़ैर किसी वास्ते और पर्दे के अल्लाह को जवाब देना होगा

हज़रत इद्दी बिन हातिम ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम में से कोई भी ऐसा नहीं है, जिससे उसका रब ख़ुद (हिसाब लेने के सिलसिले में) बात न करे। बन्दे के और उसके रब के दर्मियान कोई वास्ता और कोई पर्दा न होगा। उस वक़्त बन्दा अपने दाहिने तरफ़ नज़र करेगा तो अपने आमाल के अ़लावा कुछ नज़र न आयेगा और अपने बाएं तरफ़ नज़र करेगा तो जो पहले से करके भेजा था, वह नज़र आएगा और अपने सामने नज़र करेगा तो सामने दोज़ख़ ही पर

नज़र पड़ेगी लिहाज़ा तुम दोज़ख से बचो, अगरचे खजूर का एक टुकड़ा ही (अल्लाह के रास्ते से) ख़र्च करने को तुम्हारे पास हो। -बुखारी व मुस्लिम

किसी पर ज़ुल्म न होगा और भलाई व बुराई की एक-एक बात मौजूद होगी

क़ुरआन शरीफ़ में इर्शाद है :

فَالْيَوْمَ لَاتُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَّلَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَاكُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ○

फ़ल यौ म ला तुज़्लमु नफ़्सुन शैऔंव ला तुज्ज़ौ न इल्ला मा कुन्तुम तअ़्मलून।

'यानी उस दिन किसी जान पर ज़ुल्म न होगा और तुमको बस उन्हीं कामों का बदला मिलेगा जो तुम किया करते थे।'

और इर्शाद है :

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ۔

फ़ मैंयअ़् मल मिस्क़ा ल ज़र्रतिन ख़ैरैंयरह व मैंयअ़्मल मिस्क़ा ल ज़र्रतिन शर्रैंयरह।

'सो जो शख़्स (दुनिया में) ज़र्रा बराबर नेकी करेगा वह (वहां) उसको देख लेगा और जो शख़्स ज़र्रा बराबर बदी करेगा वह (भी वहां) उसको देख लेगा।'

सूरः मोमिन में फ़रमाया :

اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ لَاظُلْمَ الْيَوْمَ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ○

अल् यौ म तुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम बिमा क स बत ला ज़ुल्मल यौम। इन्नल्ला ह सरीउल हिसाब।

'और हर शख़्स को उसके कामों का बदला दिया जाएगा। आज (किसी पर) ज़ुल्म न होगा। बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।'

बंदों के हक़

क़ियामत के दिन अल्लाह के हक़ (नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज वग़ैरह) का भी हिसाब होगा और बंदों के हक़ का भी हिसाब होगा। दुनिया में जिसने किसी का हक़ मारा हो या किसी भी तरह ज़ुल्म या ज़्यादती की हो, सबका हिसाब और फ़ैसला होगा। बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि अल्लाह का मुज्रिम होना क़ियामत के दिन के लिए इतना ख़तरनाक नहीं है जितना बंदों के हक़ को मारने और बंदों के सताने व ज़ुल्म करने में ख़तरा है, क्योंकि अल्लाह तआ़ला बेनियाज़ है। उनकी तरफ़ से अपने हक़ की बख़्शिश कर देने की उम्मीद की जी सकती है। लेकिन बन्दे चूंकि ज़रूरतमंद होंगे और एक-एक नेकी से काम निकलने और निजात पाने की उम्मीद होगी। इसलिए बन्दों से माफ़ करने और अपना हक़ छोड़ने की उम्मीद रखना नामुनासिब है। क़ियामत के दिन रुपया-पैसा, माल व दौलत कुछ भी पास न होगा। हक़ की अदायगी के लिए नेकियों का लेन-देन होगा और हक़ की अदाएगी का एहतमाम इतना होगा कि जानवरों ने जो आपस में एक दूसरे पर पर ज़ुल्म किया था, उसका भी बदला दिलाया जाएगा।

नेकियों और बुराइयों से लेन-देन होगा

हज़रत अबू हुरैरः ؓ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने अपने किसी भाई पर ज़ुल्म कर रखा हो कि उसकी बे-आबरूई की हो और कुछ हक़ मारा हो, तो उसे चाहिए कि आज ही (उसका हक़ अदा करके या माफ़ी मांगकर) उस दिन से पहले हलाल करा ले जबकि न दीनार होगा, न दिरहम। (फिर फ़रमाया) अगर इसके कुछ अच्छे अ़मल होंगे तो ज़ुल्म के बराबर उससे ले लिए जायेंगे और जिस पर ज़ुल्म हुआ है उसको दिला दिए जायेंगे और अगर उसकी नेकियां न हुईं तो मज़्लूम की बुराइयां लेकर उस ज़ालिम के सर डाल दी जायेंगी। —बुख़ारी शरीफ़

क़ियामत के दिन सबसे बड़ा ग़रीब

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने एक बार अपने सहाबा ﷺ से सवाल फ़रमाया, क्या तुम जानते हो कि ग़रीब कौन है? सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया हम तो उसे ग़रीब समझते हैं कि जिसके पास दिरहम (रुपया-पैसा) और माल व अस्बाब न हो। इसके जवाब में आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक मेरी उम्मत में से (हक़ीक़ी) मुफ़्लिस वह है जो क़ियामत के दिन नमाज़ और रोज़े और ज़कात लेकर आएगा (यानी उसने नमाज़ें भी पढ़ी होंगी, रोज़े भी रखे होंगे और ज़कात भी अदा की होगी) और (इन सबके बावजूद) इस हाल में (हश्र के मैदान में) आयेगा कि किसी को गाली दी होगी और किसी को तोहमत लगायी होगी और किसी का (नामुनासिब और नाहक़) मारा होगा। (और चूंकि क़ियामत का दिन इंसाफ़ और सही फ़ैसलों का दिन होगा) इसलिए (उस शख़्स का फ़ैसला इस तरह किया जाएगा कि जिस-जिस को उसने सताया होगा और जिस-जिस का हक़ मारा होगा सबको उसकी नेकियां बांट दी जायेंगी) कुछ नेकियां इस हक़दार को दे दी जाएंगी। फिर अगर हुक़ूक़ पूरा न होने से पहले उसकी नेकियां ख़त्म हो जाएं तो हक़दारों के गुनाह उसके सिर डाल दिए जाएंगे। फिर उसको दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा। —मुस्लिम

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन अल्लाह (अपने बन्दों) को जमा फ़रमाएगा जो नंगे, बेख़त्ना और बिल्कुल ख़ाली हाथ होंगे। फिर ऐसी आवाज़ से पुकारेंगे जिसे हर दूर वाले इसी तरह सुनेंगे जैसे क़रीब वाले सुनेंगे (और उस वक़्त ये फ़रमायेंगे कि) मैं बदला देने वाला हूं, मैं बादशाह हूं। (आज) किसी दोज़ख़ी के हक़ में यह न होगा कि दोज़ख़ में चला जाए और किसी जन्नती पर उसका ज़रा भी कोई हक़ हो जब तक कि मैं उसका बदला न दिला दूं? यहां तक कि अगर एक चपत भी ज़ुल्म से मार दिया था तो उसका बदला भी दिला दूंगा।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हमने अ़र्ज़ किया- ऐ अल्लाह के

रसूल! बदला कैसे दिलाया जाएगा हालांकि हम नंगे, बेख़त्ना और बिल्कुल ख़ाली हाथ होंगे? जवाब में सरवरे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि नेकियों और बुराइयों से लेन-देन होगा। —अहमद

हज़रत अबू हुरैरः رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि जिसने अपने ख़रीदे हुए ग़ुलाम को ज़ुल्म से एक कोड़ा भी मारा था, क़ियामत के दिन उसको बदला दिलाया जाएगा। —तर्ग़ीब

मां-बाप भी हक़ छोड़ने पर राज़ी न होंगे

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि (अगर) मां-बाप का अपनी औलाद पर क़र्ज़ होगा तो जब क़ियामत का दिन होगा तो अपनी औलाद से उलझ जाएंगे (कि ला हमारा क़र्ज़ अदा कर)। वह जवाब देगा कि मैं तो तुम्हारी औलाद हूं। वे इस जवाब का कुछ असर न लेंगे और मांग पूरी करने पर इसरार करते रहेंगे बल्कि यह तमन्ना करेंगे कि काश! इस पर हमारा और भी ज़्यादा क़र्ज़ होता। —तब्रानी

सबसे पहले मुद्दई व मुद्दआ़ अ़लैह

हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन सबसे पहले मुद्दई व मुद्दआ़ अलैह दो पड़ोसी होंगे। —अहमद

जानवरों के फ़ैसले

क़ियामत के दिन सभी का हिसाब होगा। हर मज़्लूम के हक़ में इंसाफ़ होगा। हज़रत अबू हुरैरः رضی اللہ عنہ रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम ज़रूर-ब-ज़रूर हक़ वालों को उनके हक़ क़ियामत के दिन अदा करोगे यहां तक कि बे-सींगों वाली बकरी को (जिसे दुनिया में सींगों वाली बकरी ने मारा था) सींगों वाली बकरी से बदला दिलाया जाएगा। —मुस्लिम शरीफ़

सूरः नबा के आख़िर में इर्शाद है :

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا، اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَاقَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِىْ كُنْتُ تُرٰبًا○

ज़ालिकल यौमुल हक़्क़। फ़ मन शाअत्त ख़ ज़ इला रब्बिही मआबा। इन्ना अन्ज़र्नाकुम अज़ाबन क़रीबें यौ म यन्ज़ुरुल मर्उ मा क़द्दमत यदाहु व यक़ूलुल काफ़िरु या लै त नी कुन्तु तुराबा।

'वह दिन यक़ीनी है, सो जिसका जी चाहे अपने रब के पास ठिकाना बना रखे। बेशक हमने तुमको एक नज़दीक आने वाले अ़ज़ाब से डरा दिया है, जिस दिन हर शख़्स अपने अ़मल को देख लेगा। जो उसने पहले से आगे भेज दिए थे और काफ़िर कहेगा, काश मैं मिट्टी हो जाता!'

दुर्रे मंसूर में इस आयत की तफ़सीर में बुहत-सी हदीस की किताबों के हवाले से हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से नक़ल किया है कि क़ियामत के दिन सारी मख़्लूक़ जमा की जाएगी चौपाए भी और (इनके अ़लावा) ज़मीन पर चलने वाले भी और परिंदे भी और इनके अ़लावा हर चीज़। उस वक़्त अल्लाह की अदालत से जो फ़ैसले होंगे, उनमें यह भी होगा कि बे-सींगों वाले जानवरों की सींगों वाले जानवर से बदला दिलाया जाएगा। फिर उनसे कह दिया जाएगा कि मिट्टी हो जाओ उस वक़्त काफ़िर की ज़ुबान से (बड़ी हसरत से) यह निकलेगा कि काश में मिट्टी होता! —दुर्रे मंसूर

मशहूर तफ़सीर लिखने वाले हज़रत मुजाहिद ﷺ ने फ़रमाया कि जिस जानवर के चोंच मारी गयी थी। उसे चोंच मारने वाले जानवर से और जिस जानवर के लात मारी गयी थी, उसे लात मारने वाले जानवर से बदला दिलाया जाएगा। यह माजरा इंसानों के सामने होगा जिसे वह देखते रहेंगे। इसके बाद जानवरों के कह दिया जायेगा कि मिट्टी हो जाओ। न तुम्हारे लिए जन्नत है, न दोज़ख़ है। उस वक़्त काफ़िर (जानवरों की यह ख़लासी बल्कि

हमेशा के अ़ज़ाब से बचने की कामयाबी को देखकर उनपर रश्क करेंगे और) कह उठेंगे कि हम (भी) मिट्टी हो जाते।

दुनिया काम करने की जगह है; सोचने की जगह है; तकलीफ़ की जगह है; दुख की जगह है। इस दुनिया में जो आदमी दुनिया ही के लिए अ़मल और मेहनत करेगा और दुनिया ही के रंज व फ़िक्र में घुलेगा। यक़ीनी तौर पर आख़िरत में ख़ाली हाथ पहुंचेगा। जिसने यहां अपने को न सिर्फ़ जानवरों से अच्छा बल्कि नेक बन्दों से भी अच्छा समझा और अल्लाह के रसूल ﷺ की बात को ठुकराया और आख़िरत से बेफ़िक्र रहा। आख़िरत में बर्बाद और बेआबरू होगा और न सिर्फ़ नेक बन्दे उससे अच्छे साबित होंगे बल्कि जानवर भी नतीजे के तौर पर उससे अच्छे रहेंगे और उस वक़्त बड़ी हसरत और नाउम्मीदी के साथ पुकार उठेगा कि काश! मैं भी मिट्टी हो जाता। हिसाब न लिया जाता, दोज़ख़ में न गिरता। काश! ज़मीन फट जाती और मैं हमेशा कि लिए ज़मीन का पैवंद हो जाता जैसा कि सूरः निसा में फ़रमाया :

يَوْمَئِذٍ يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصَوُا الرَّسُولَ لَوْ تُسَوَّىٰ بِهِمُ الْأَرْضُ

यौ म इज़िं यवद्दुल्लज़ी न क फ़ रू व अ़ स वुर्रसू ल लौ तुसव्वा बिहिमुल अ़र्ज़।

'जिन लोगों ने कुफ़्र किया और रसूल की नाफ़रमानी की, उस दिन तमन्ना करेंगे कि काश! हम ज़मीन का पैवंद हो जाएं।'

इसके ख़िलाफ़ कि जिन लोगों ने दुनिया को आख़िरत के अ़मल की जगह समझकर वहां के लिए फ़िक्र किया और वहां की फ़िक्र में घुला वे वहां कामयाब होंगे। दुनिया में उनका हाल था कि ख़ुदा के डर से कहते थे कि काश हम मिट्टी हो जाते। मतलब यह कि ईमान वाले यहां अपने को दूसरी मख़्लूक़ से कम समझ कर आख़िरत की कामयाबी हासिल करेंगे और हक़ के इंकारी क़ियामत के दिन अपने को जानवरों से बदतर यक़ीन करेंगे और नाकाम होंगे।

جَعَلَنَا اللّٰهُ مِنَ الصَّالِحِيْنَ حَشَرَنَا مَعَهُمْ (امين)

ज अ़ ल नल्लाहु मिनस्सालिही न ह श र ना म अ हुम।
(आमीन)

मालिकों और ग़ुलामों का इन्साफ़

हज़रत आइशा ﵂ रिवायत फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में एक शख़्स आकर बैठ गया। उसने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! बिला शुब्हा मेरे कुछ ग़ुलाम हैं जो मुझसे झूठ बोलते हैं और मेरी ख़ियानत करते हैं और मेरी नाफ़रमानी करते हैं (यह तो उनकी तरफ़ से है) और (मेरी तरफ़ से यह है) कि उनको गालियां देता हूं और सज़ा में मारता भी हूं। अब मुझे आप यह बताएं कि आख़िरत में मेरा और उनका क्या मामला होगा? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जब क़ियामत का दिन होगा तो तेरे ग़ुलामों को ख़ियानत और नाफ़रमानी और झूठ बोलने का और तेरे सज़ा देने का हिसाब होगा। अगर तेरी सज़ा उनके क़ुसूरों के बराबर होगी तो मामला बराबर रहेगा, न तुझे कुछ उनकी तरफ़ से मिलेगा, न तुझ पर कुछ बोझ पड़ेगा और अगर तेरी सज़ा उनकी हरकतों से ज़्यादा होगी तो उस ज़्यादा सज़ा का उनको तुझे बदला दिलाया जाएगा।

हज़रत आइशा ﵂ फ़रमाती हैं कि नबी का यह इर्शाद सुनकर वह शख़्स रोता और चीख़ता हुआ वहां से हट गया। रसूलुल्लाह ﷺ ने उससे फ़रमाया क्या तू अल्लाह तआ़ला का यह इर्शाद नहीं पढ़ता (जिसमें तेरे मामले का साफ़ ज़िक्र किया गया है)

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَابِهَا وَكَفٰى بِنَاحَاسِبِيْنَ۔

व न ज़ उल म वाज़ी नल क़िस त लि यौमिल क़ियामति फ़ ला तुज़्लमु नफ़्सुन शैआ व इन का न मिस्क़ा ल हब्बतिम मिन ख़रदलिन अतैना बिहा व कफ़ा बिना हासिबीन।

'और हम क़ियामत के दिन इंसाफ़ की तराज़ू क़ायम करेंगे सो किसी पर ज़रा-सा भी ज़ुल्म न होगा और अगर कोई अ़मल राई के दाने के बराबर भी होगा तो हम उसे ज़ाहिर करेंगे और हम हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं।'

यह सुनकर उस शख़्स ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं अपने और इन ग़ुलामों के हक़ में इससे बेहतर कुछ नहीं समझता कि उनको अपने से जुदा कर दूं। आपको गवाह बनाकर कहता हूं कि वह सब आज़ाद हैं।

—मिश्कात शरीफ़

जिन्नों से ख़िताब

जिन्नों को ख़िताब करके अल्लाह जल्ल ल शानुहू सवाल फ़रमायेंगे जैसा कि सूरः अंबिया में फ़रमाया :

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِاسْتَكْثَرْتُمْ مِنَ الْاِنْسِ ۚ

व यौ म नह्शुरुहुम जमीअ़न या मअ़्शरल जिन्नि क़दिस्तक्सर्तुम मिनल इन्स।

'और जिस दिन अल्लाह इन सबको जमा करेगा (और फ़रमायेगा) ऐ जिन्नों की जमाअ़त! तुमने इंसानों में से बड़ी जमाअ़त बस में कर ली थी।'

आगे फ़रमाया :

وَقَالَ اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّ بَلَغْنَا اَجَلَنَا الَّذِىٓ اَجَّلْتَ لَنَا ۝

व क़ा ल औलियाउहुम मिनल इंसि रब्ब नस्तम्त अ़ बअ़् ज़ुना बिबअ़् ज़िंव्व बलग़्ना अ ज लनल्लज़ी अज्जल्त लना।

'और कहेंगे जिन्नों के दोस्त आदमियों में से कि ऐ हमारे रब! फ़ायदा उठाया हम में एक ने दूसरे से और हम पहुंच गये अपने उस मुक़र्रर वक़्त को जो आपने हमारे लिए मुक़र्रर फ़रमाया।'

दुनिया में तो लोग बुत वग़ैरह पूजते हैं, वे सच में ख़बीस जिन्न व शैतान ही की पूजा करते हैं, इस ख़्याल से कि वे हमारे काम निकालेंगे, उन की नियाज़ें चढ़ाते हैं और उनके आस-पास नाचते और गाते-बजाते हैं। इस्लाम से पहले यह भी क़ायदा था कि आड़े वक़्त में जिन्नों से मदद तलब किया करते थे, जब आख़िरत में जिन्न और उनकी पूजा करने वाले पकड़े जाएंगे तो मुश्रिक कहेंगे कि हमारे परवरदिगार! वह तो हमने वक़्ती कार्रवाई कर ली थी और मौत का वादा आने से पहले-पहले दुनिया की ज़रूरतों के लिऐ हम एक-दूसरे से काम निकालने के कुछ उपाय कर लिया करते थे।

आगे फ़रमाया :

قَالَ النَّارُ مَثْوٰكُمْ خَالِدِيْنَ فِيْهَا اِلَّا مَاشَآءَ اللّٰهُ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ۝ وَكَذٰلِكَ نُوَلِّىْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ۝

क़ालन्नारु मस्वाकुम ख़ालिदी न फ़ीहा इल्ला मा शाअल्लाह। इन्न न रब्ब क हकीमुन अ़लीम। व कज़ालि क नुवल्ली बअ़्ज़ज़्ज़ालिमी न बअ़्ज़म बिमा कानू यक्सिबून।

'अल्लाह तआ़ला का इर्शाद होगा कि दोज़ख़ है तुम्हारा ठिकाना। उसमें हमेशा रहोगे मगर हां, जो अल्लाह चाहे[1]। बेशक तेरा रब हिकमत वाला और जानने वाला है और इसी तरह हम साथ मिला देंगे गुनहगारों को एक-दूसरे से उनके आ़माल की वजह से।'

फिर आगे फ़रमाया :

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِىْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ۔

---

1. दोज़ख़ का अ़ज़ाब काफ़िरों के लिए हमेशा है अल्लाह के चाहने से अगर अल्लाह चाहे तो ख़त्म कर दे लेकिन इसका फ़ैसला हो चुका कि काफ़िर व मुश्रिक की बख़्शिश नहीं। ये लोग हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे। पैग़म्बरों के ज़रिए इसकी ख़बर दी जा चुकी है।

या मअ़्शरल जिन्नि वल इंसि अलम यअ्तिकुम रुसुलुम मिन्कुम यक़ुस्सू न अ़लैकुम आयाति व युन्ज़िरू न कुम लिक़ा अ यौमिकुम हाज़ा। क़ालू शहिदना अ़ला अन्फ़ुसिना व ग़र्रतहुमुल हयातुद्दुन्या व शहिदू अ़ला अन्फ़ुसिहिम अन्नहुम कानू काफ़िरीन।

'ऐ जिन्नो और इंसानों की जमाअ़त! क्या तुम्हारे पास तुम में से रसूल नहीं आये थे जो तुमको मेरी आयतें सुनाते थे और उस दिन के पेश आने से डराते थे। जिन्न व इंसान इक़रार करते हुए अ़र्ज़ करेंगे कि हमने अपने गुनाह का इक़रार कर लिया और उनको दुनिया की ज़िंदगी ने धोखा दिया और इक़रारी होंगे कि वे काफ़िर थे।'

इस आयत से साफ़ ज़ाहिर है कि जिन्नों और इंसानों से इकट्ठा ख़िताब और सवाल होगा कि रसूल तुम्हारे पास पहुंचे या नहीं? सवाल के जवाब में जुर्म का इक़रार करेंगे और यह मानेंगे कि हां! रसूल हमारे पास आये थे। सच में हम ही मुज्रिम हैं। इस आयत में है कि अपने काफ़िर होने का इक़रार करेंगे और कुछ आयतों में है कि **'मा कुन्ना मुश्रिकीन'** (हम मुश्रिक न थे) कहेंगे। इस शुब्हे का जवाब यह है कि पहले इंकार करेंगे और फिर आ़मालनामों और गवाहियों के ज़रिए इक़रार कर लेंगे और यह इंसान का क़ायदा है कि पहले जुर्म मानने से इंकार करते है। फिर जब इस तरह जान छूटती नज़र नहीं आती तो यह समझकर शायद इक़रार करने ही से ख़लासी हो जाए, इक़रार कर लेता है (लेकिन वहां काफ़िर व मुश्रिक की ख़लासी न होगी)।

जुर्म न मानने पर गवाहियां

बदन के अंगों की गवाही

इंसान बड़ा झगड़ालू है और उसकी बहस की तबीयत क़ियामत के दिन भी अपना रंग दिखायेगी और अल्लाह तआ़ला से भी हुज्जत करेगा।

उस वक़्त गवाहों के ज़रिए उसकी हुज्जत ख़त्म कर दी जाएगी। ख़ुद इंसान के अंग उसके ख़िलाफ़ गवाही देंगे। जैसा कि सूरः यासीन में फ़रमाया :

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ۝

अल् यौ म नख़्तिमु अ़ला अफ़्वाहिहिम व तुकल्लिमुना ऐदीहिम व तशहदु अर्जुलुहुम बिमा कानू यक्सिबून।

'आज हम उनके मुंहों पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हमसे कलाम करेंगे और उनके पांव उन कामों की गवाही देंगे।'

हज़रत अनस ؓ ने रिवायत ब्यान फ़रमायी कि (एक बार) आंहज़रत ﷺ की ख़िदमत में हम बैठे हुए थे कि उसी बीच अचानक आप ﷺ को हँसी आ गयी और (हमसे) फ़रमाया, क्या तुम जानते हो मैं क्यों हँस रहा हूं? हमने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह और उसको रसूल ही ख़ूब जानते हैं। फ़रमाया कि (क़ियामत के दिन) बन्दे जो अल्लाह से सवाल व जवाब करेंगे, इस मंज़र को याद करके मुझे हँसी आ गयी। बन्दा कहेगा कि ऐ रब! क्या आपने मुझे ज़ुल्म से (बचाने का एलान फ़रमाकर) मुत्मईन नहीं फ़रमाया है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे कि हां, मैंने यह वादा किया है। इसके बाद बन्दा कहेगा कि मैं अपने मामले में किसी की गवाही न मानूंगा। हां, अगर मेरे ही अंदर से कोई गवाही दे दे तो एतबार कर सकता हूं। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे कि आज अपने बारे में तेरा ख़ुद गवाह होना काफ़ी है और लिखने वालों की गवाही भी काफ़ी है। (आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने) फ़रमाया कि इसके बाद उसके मुंह पर मुहर लगा दी जाएगी (और अल्लाह की तरफ़ से) उसके अंगों को हुक्म होगा कि बोलो। चुनांचे उसके अंग उसके अ़मल को ज़ाहिर कर देंगे। यह क़िस्सा देखकर बंदा अपने अंगों से कहेगा कि दूर! दूर! तुम ही को अ़ज़ाब से बचाने के लिए तो मैं बहस कर रह था। —मुस्लिम शरीफ़

एक हदीस में है कि उसकी रान और गोश्त और हड्डियां उसके अ़मल की गवाही देंगी।

—मुस्लिम शरीफ़ अन अबी हुरैरः ؓ

ज़मीन की गवाही

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इन आयत **'यौ म इज़िन तुहद्दिसु अख़्बारहा'** (उस दिन ज़मीन अपनी ख़बरें ब्यान कर देगी) तिलावत फ़रमाकर सवाल फ़रमाया, क्या तुम जानते हो ज़मीन के ख़बर देने का क्या मतलब है?। सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह और उसका रसूल ही ख़ूब जानते हैं। आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि ज़मीन के ख़बर देने का मतलब यह है कि वह मर्द व औरत के ख़िलाफ़ उसके आ़माल की गवाही देगी जो उसकी पीठ पर किये थे। वह कहेगी कि (उसने) मुझ पर फ़्लां-फ़्लां दिन फ़्लां-फ़्लां अ़मल किया था। यह है ज़मीन की ख़बर देना।

—अहमद व तिर्मिज़ी शरीफ़

आ़मालनामे

क़ियामत के दिन आ़मालनामे पेश किये जाएंगे। किरामन कातिबीन जो दुनिया में बन्दों के आ़माल रिकार्ड करते हैं। आ़मालनामे की शक्ल में पेश कर दिए जाएंगे। सूरः जासिया में फ़रमाया :

وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ○ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰى اِلٰى كِتَابِهَا ○ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○ هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ○ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○

व तरा कुल्लु उम्मतिन जासियः। कुल्लु उम्मतिन तुद्अ़ा इला किताबिहा। अल यौ म तुज्ज़ौ न मा कुन्तुम तअ़्मलून। हाज़ा किताबुना यन्तिक़ु अ़लैकुम बिल्हक़्क़। इन्ना कुन्ना नस्तन्सिख़ु मा कुन्तुम तअ़्मलून।

और (उस दिन) आप हर फ़िर्क़े को देखेंगे कि (ख़ौफ़ की वजह से) ज़ानू के बल गिरे पड़े होंगे। हर फ़िर्क़ा अपने नामा-ए-आ़माल की तरफ़ बुलाया जाएगा (और उनसे कहा जाएगा) कि आज तुमको तुम्हारे कामों का बदला दिया जाएगा। यह हमारा दफ़्तर है जो तुम्हारे मुक़ाबले में ठीक-ठीक

बोल रहा है और हम तुम्हारे आमाल को लिखवा लिया करते थे।'

सूरः बनी इस्राईल में फ़रमाया :

وَكُلَّ إِنسَانٍ أَلْزَمْنَهُ طَائِرَهُ فِي عُنُقِهِ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ كِتَبًا يَلْقَهُ مَنشُورًا ○ اِقْرَأْ كِتَبَكَ كَفَى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ○

व कुल्लु इन्सानिन अलज़म्नाहु ताइ र हू फ़ी उनुक़िही व नुख़्रिजु लहू यौमल क़ियामः। किताबैंयल्क़ाहा मन्सूरा। इक़रअ् किताब क कफ़ा बिनफ़्सि कल यौ म अ़लै क हसीबा।

'और हमने हर इंसान का अ़मल उसके गले का हार कर रखा है और क़ियामत के दिन हम उसका आ़मालनामा निकाल कर सामने कर देंगे जिसको वह खुला हुआ देख लेगा (और उससे कहेंगे) पढ़ ले अपना आ़मालनामा। आज तू ख़ुद अपना हिसाब लेने वाला काफ़ी है।'

आ़मालनामों में सब कुछ होगा और मुज्रिम डरे हुए हैरत और हसरत करेंगे

आ़मालनामों में सब कुछ होगा और बदअ़मल आ़मालनामों को देख कर डर जाएंगे और जो भी दुनिया में किया था, सब मौजूद पाएंगे। सूरः कहफ़ में इर्शाद है :

وَوُضِعَ الْكِتَبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ وَيَقُولُونَ يَوَيْلَتَنَا مَالِ هَذَا الْكِتَبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْصَهَا وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا ○

व वुज़िअ़ल किताबु फ़ तरल मुज्रिमी न मुश्फ़िक़ी न मिम्मा फ़ीहि व यक़ूलू न या वै ल त ना मालि हाज़ल किताबि ला युग़ादिरु सग़ीरतौं व ला कबीरतन इल्ला अह्साहा। व व ज दू मा अ़मिलू हाज़िरौं व ला युज़्लिमु रब्बु क अ ह दा।

'और आमालनामा रख दिया जाएगा तो आप मुज्रिमों को देखेंगे कि उसमें जो कुछ होगा उससे डर रहे होंगे और कहते होंगे कि हाय! हमारी कमबख़्ती! इस नामा-ए-आमाल की अजीब हालत है कि बग़ैर क़लमबंद किए हुए उसने न कोई छोटा गुनाह छोड़ा, न कोई बड़ा गुनाह छोड़ा और जो कुछ उन्होंने किया, सब कुछ मौजूद पाएंगे और आपका रब किसी पर ज़ुल्म न करेगा।'

आमालनामों की तक़सीम

हर शख़्स का आमालनामा उसके सुपुर्द किया जाएगा जो लोग नेक और निजात पाने वाले होंगे, उनके आमालनामे दाहिने हाथ में दिए जाएंगे और जो लोग बदअमल और दोज़ख़ में गिरने वाले होंगे, उनके आमालनामे बाएं हाथ में और पीठ के पीछे से दिए जाएंगे।

सूरः इन्शिक़ाक़ में फ़रमाया :

يَاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ۝ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِىَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ۝ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًاوَّ يَنْقَلِبُ اِلٰى اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا۝ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِىَ كِتٰبَهٗ وَرَاءَ ظَهْرِهٖ فَسَوْفَ يَدْعُوْا ثُبُوْرًاوَّ يَصْلٰى سَعِيْرًا اِنَّهٗ كَانَ فِىْٓ اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا۝ اِنَّهٗ ظَنَّ اَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ بَلٰى اِنَّ رَبَّهٗ كَانَ بِهٖ بَصِيْرًا۝

या ऐयुहल इंसानु इन्न क कादिहुन इला रब्बि क कद्हन फ़ मुलाक़ीह फ़ अम्मा मन ऊति य किता ब हू बियमीनिह फ़ सौ फ़ युहासबु हिसाबें यसीरौं व यं क़लिबु इला अह्लिही मस्रूरा। व अम्मा मन ऊति य किता ब हू व रा अ ज़ह्रिही फ़ सौ फ़ यद्उ सुबूरौं व यस्ला सईरा। इन्नहू का न फ़ी अह्लही मस्रूरा। इन्नहू ज़न्न न अल्लैंयहू र, बला! इन्न न रब्बहू का न बिही बसीरा।

'ऐ इंसान! अपने रब के पास पहुंचने तक काम में कोशिश कर रहा

है। फिर (उस काम के बदले) से तू मिलेगा सो वह शख़्स जिसका आ़मालनामा उसके दाहिने हाथ में दे दिया गया सो उससे आसान हिसाब लिया जाएगा और वह (हिसाब से फ़ारिग़ होकर) अपने मुतअ़ल्लिक़ लोगों के पास ख़ुश-ख़ुश आएगा और जिस शख़्स का आ़मालनामा (बायें हाथ में) उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा सो वह मौत को पुकारेगा और जहन्नम में दाख़िल होगा। दुनिया में उसका यह हाल था कि (आख़िरत में बेफ़िक्र होकर) अपने बाल बच्चों में ख़ुश-ख़ुश रहा करता था और यह ख़्याल कर रखा था (उसको ख़ुदा की तरफ़) लौटना नहीं है। लौटना क्यों न होता। उसका रब उसको ख़ूब देखता था।'

जो शख़्स दुनिया में ख़ुश-ख़ुश रहा। दुनिया की ज़िंदगी को असल समझकर उसी में मस्त रहा और आख़िरत की ज़रा फ़िक्र न की और आख़िरत की बातों को झूठा समझा। क़ियामत के दिन सख़्त मुसीबत और रंज व ग़म में पड़ा रहेगा। इसके ख़िलाफ़ जो लोग दुनिया में रहते हुए, आख़िरत की फ़िक्र में घुले जाते थे और मरने के बाद वाली हालत की उन को फ़िक्र लगी रहती थी, वे क़ियामत के दिन दाहिने हाथ में आ़मालनामा लेकर ख़ूब ख़ुश होंगे। बदअ़मल यहां ख़ुश हैं और नेक अ़मल वहां ख़ुश होंगे।

आ़मालनामों के मिलने पर नेक बंदों को बेहद ख़ुशी और बुरों का बेहद रंज

सूरः हाक़्क़ः में इसे और ज़्यादा खोल दिया गया है, चुनांचे इर्शाद है :

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنكُمْ خَافِيَةٌ

यौ म इज़िन तुअ़् रज़ू न ला तख़्फ़ा मिन्कुम ख़ाफ़ियः।

'उस दिन तुम लोग पेश किये जाओगे और तुम्हारा कोई भेद छिपा न रहेगा।'

इसके बाद दाहिने हाथ में किताब मिलने वालों के लिए फ़रमाया :

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتَابَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَيَقُوْلُ هَاؤُمُ اقْرَءُوْا كِتَابِيَهْ ۝ اِنِّيْ ظَنَنْتُ اَنِّيْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ۝ فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝ قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ۝ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا بِمَا اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ۝

फ़ अम्मा मन ऊति य किता ब हु बियमीनिही फ़ यक़ूलु हाउमुक़रऊ किताबियः। इन्नी ज़नन्तु अन्नी मुलाक़िन हिसाबियः। फ़ हु व फ़ी ईशतिर्राज़ियः। फ़ी जन्नतिन आलियः। क़ुतूफ़ूहा दानियः। कुलू वश्रबू हनीअम बिमा अस्लफ़्तुम फ़िल ऐयामिल ख़ालियः।

'सो जिनके दाहिने हाथ में किताब दी जाएगी तो (ख़ुशी में कहेगा लीजियो, पढ़ियो मेरा आमालनामा)। मेरा तो अक़ीदा ही था कि बेशक मेरा हिसाब मिलना है। सो वह शख़्स बड़ी पसंदीदा ज़िंदगी में होगा। बुलंद बहिश्त में होगा। जिसके मेवे झुके-हुए होंगे और उनसे कहा जाएगा कि खाओ और पियो रचकर। यह बदला है उन (नेक) कामों का जो तुमने पिछले दिनों में पहले से (आगे) भेज दिए थे।'

दाहिने हाथ में आमालनामे का मिलना निजात पाने और मक़बूल होने की निशानी होगी। ऐसा आदमी मारे ख़ुशी के हर एक को दिखाता फिरेगा कि लो! आओ मेरा आमालनामा पढ़ो और यह भी कहेगा कि मैंने दुनिया में यह समझ रखा था कि हिसाब पेश होना है। इस ख़्याल से मैं डरता रहा और फ़िक्र में घुलता रहा। आज दिल ख़ुश करने वाला नतीजा देख रहा हूं।

इसके बाद बाएं हाथ में किताब मिलने वालों की हालत का इस तरह ज़िक्र फ़रमाया :

وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتَابَهٗ بِشِمَالِهٖ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ۝ وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسٰبِيَهْ ۝ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۝ مَا اَغْنٰى عَنِّيْ مَالِيَهْ ۝ هَلَكَ عَنِّيْ سُلْطَانِيَهْ ۝

व अम्मा मन ऊति य किता बहूबशिमालिहि फ़ यक़ूलु या

लैतनी लम ऊ त किताबियः व लम अद्रि मा हिसाबियः।
या लै त हा कानतिल क़ाज़ियः। मा अग़्ना अ़न्नी मालियः।
ह ल क अ़न्नी सुलतानियः।

'और जिसके बाएं हाथ में किताब दी जाएगी, सो वह कहेगा कि काश! मुझे मेरा आ़मालनामा न मिलता और मुझे ख़बर ही न होती कि मेरा क्या हिसाब है। काश! वही मौत (मेरा) काम तमाम करने वाली होती (और मुझे दोबारा ज़िंदगी न मिलती)। कुछ मेरे काम न आया मेरा माल। मुझसे जाती रही, मेरी हुकूमत।'

सूरः इन्शिक़ाक़ में फ़रमाया कि पीठ के पीछे से बदअ़मलों को आ़मालनामे दिए जाएंगे। दोनों को मिलाने से मालूम होता है कि बाएं हाथ में जिनको आ़मालनामे दिए जाएंगे, सो पीछे से दिए जाएंगे। गोया फ़रिश्ते उनकी सूरत देखना पसंद न करेंगे और मुम्किन है कि मशकें बंधी हों, इसलिए आ़मालनामा पीठ की तरफ़ से बाएं हाथ में देने की नौबत आये।

अ़मल का वज़न

अल्लाह तआ़ला हमेशा से सारी मख़्लूक़ के अ़मल को जानता है। अगर क़ियामत के मैदान मे सिर्फ़ अपनी जानकारियों की बुनियाद पर अ़मल का बदला व सज़ा दें तो उनको इसका भी हक़ है। लेकिन हश्र के मैदान में ऐसा न किया जाएगा। बल्कि बन्दों के सामने उनके आ़मालनामे पेश कर दिए जाएंगे। वज़न होगा, गवाहियां होंगी, मुज्रिम इंकारी भी होंगे और दलील से जुर्म भी साबित किया जाएगा ताकि सज़ा भुगतने वाले यों न कह सकें कि हमपर ज़ुल्म करके बेवजह अ़ज़ाब में डाला गया।

सूरः अनआ़म में फ़रमाया :

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ نِالْحَقُّ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ○ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ○

वल् वज़्नु यौ म-इज़िं निल-हक़्क़ु फ़ मन सक़ुलत मवाज़ीनुहू फ़ उलाइ क हुमुल मुफ़्लिहून। व मन ख़फ़्फ़त मवाज़ीनुहू फ़ उलाइ क ल्लज़ी न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम बिमा कानू बिआयातिना यज़्लिमून।

'और तौल उस दिन ठीक होगी सो जिन की तौलें भारी पड़ीं, वही लोग बामुराद होंगे और जिनकी तौलें हल्की पड़ीं, सो वही हैं जिन्होंने अपना आप नुक़सान किया। इस वजह से कि वे हमारी आयतों का इंकार करते थे।'

हज़रत सल्मान ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन (आ़माल तौलने की) तराज़ू रख दी जाएगी (और वह इतनी-ही लम्बी-चौड़ी होगी कि) अगर उसमें सारे आसमान व ज़मीन रखकर वज़न किए जाएं तो सब उसमें आ जाएं। उसको देखकर फ़रिश्ते ख़ुदा के दरबार में अ़र्ज़ करेंगे कि यह किसके लिए तौलेगी। यह सुनकर फ़रिश्ते अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ अल्लाह! आप पाक हैं। जैसा इबादत का हक़ है, हमने ऐसी इबादत आप की नहीं की। —अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब

हज़रत अनस ﷺ सैयदे आ़लम ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ने इर्शाद फ़रमाया (क़ियामत के दिन) तराज़ू पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर होगा (अ़मल का वज़न करने के लिए) इंसान इस तराज़ू के पास लाये जाते रहेंगे। जो आएगा, तराज़ू के दोनों पलड़ों के दर्मियान खड़ा कर दिया जाएगा। पस अगर उसके तौल भारी हुए। तो वह फ़रिश्ता ऐसी बुलंद आवाज़ से पुकार कर एलान करेगा जिसे सारी मख़्लूक़ सुनेगी कि फ़्लां हमेशा के लिए सआ़दतमंद[1] हो गया। अब कभी इसके बाद बदनसीब न होगा और अगर उसके तौल हल्के रहे तो वह फ़रिश्ता ऐसी बुलंद आवाज़ से पुकार कर एलान करेगा, जिसे सारी मख़्लूक़ सुनेगी कि फ़्लां हमेशा के लिए नामुराद हो गया, अब इसके बाद ख़ुशनसीब न होगा। —तर्ग़ीब व तर्हीब

हज़रत शाह अ़ब्दुल क़ादिर साहब रहमतुल्लाह अ़लैहि 'मौज़िहुल क़ुरआन' <u>में लिखते हैं कि हर शख़्स के अ़मल वज़</u>न के मुवाफ़िक़ लिखे जाते हैं। एक

1. सौभाग्यवान

ही काम है। अगर इख़्लास व मुहब्बत से शरई हुक्म के मुवाफ़िक़ किया गया और सही मौक़े पर किया गया तो उसका वज़न बढ़ गया और दिखावे को किया या हुक्म के मुवाफ़िक़ न किया था ठिकाने पर न किया तो वज़न घटा लिया, आख़िरत में वे काग़ज़ तुलेंगे, जिसके नेक काम भारी हुए तो बुराइयों से माफ़ी मिली और (जिसके नेक काम) हल्के हुए तो पकड़ा गया।

कुछ उलमा का कहना है कि क़ियामत के दिन आमाल को जिस्म देकर हाज़िर किया जाएगा और ये जिस्म तुलेंगे और इन जिस्मों के वज़नों के हल्का या भारी होने पर फ़ैसले होंगे। काग़ज़ों का तुलना या आमाल को जिस्म देकर तौला जाना भी नामुम्किन नहीं है और आमाल को बग़ैर वजन दिए यूँ ही तौल देना भी क़ादिरे मुत्लक़ की क़ुदरत से बाहर नहीं है। आज जब कि साइंस का दौर है। आमाल को तौल में आ जाना बिल्कुल समझ में आ जाता है ये आजिज़ बन्दे, जिनको अल्लाह जल्ल जलालुहू व अम्म म नवालुहू ने थोड़ी-सी समझ दी है, थर्मामीटर के ज़रिए जिस्म की गर्मी की मिक़दार बता देते हैं और इसी तरह के बहुत-से आले (यंत्र) हैं जो जिस्मों के अलावा दूसरी चीज़ों की मिक़दार मालूम करने के लिए बनाए गए हैं तो उस एक ख़ुदा की क़ुदरत से यह कैसे बाहर माना जाए कि अमल तौल में न आ सकेंगे। अगर किसी को यह शुब्हा हो कि अमल तो महसूस होने वाला वुजूद नहीं रखते और वुजूद में आने के साथ ही फ़िना होते रहते हैं फिर उनका आख़िरत में जमा होना और तौला जाना क्या मानी रखता है? तो इसका जवाब यह है कि जिस तरह तक़रीरों को रिकार्ड कर लिया जाता है तो वह रेडियो स्टेशन से फैलायी जाती रहती हैं। हालांकि बंद कमरे में जब मुक़र्रिर (वक्ता) तक़रीर करता है तो एक दम आन की आन में सब नहीं कह देता, बल्कि एक-एक हर्फ़ अदा होता है, इसके बावजूद भी सारी तक़रीर महफ़ूज़ (सुरक्षित) हो जाती है। तो जबकि अल्लाह जल्ल ल जलालुहू ने अपने बन्दों को लफ़्ज़ों और बातों की पकड़ में लाकर इकट्ठा करने और रिकार्ड में लाने की ताक़त दी है तो वह ख़ुद इसकी क़ुदरत क्यों न रखेगा कि अपनी मख़्लूक़ के अमल व हरकत का पूरा रिकार्ड तैयार रखे जिसमें से एक ज़र्रा और शूशा भी ग़ायब न हो और महसूस तौर पर क़ियामत के दिन

उनका वज़न सबके सामने ज़ाहिर हो जाए।

لِيَجْزِىَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۝ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝

लियज्ज़ियल्लाहु कुल्लु ल नफ़्सिम्मा क स बत। इन्नल्ला ह सरीउल हिसाब।

एक बंदे के अ़मल का वज़न

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ؓ रिवायत फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिलाशुब्हा क़ियामत के दिन सारी मख़्लूक़ के सामने अल्लाह तआ़ला मेरे एक उम्मती को (पूरे मज्मे से) अलग करके उसके समाने निन्नानवे दफ़्तर खोल देंगे। हर दफ़्तर वहां तक होगा जहां तक निगाह पहुंचे। (इन दफ़्तरों में सिर्फ़ गुनाह होंगे) इसके बाद अल्लाह जल्ल ल शानुहू उनसे सवाल फ़रमायेंगे कि क्या तू इन आ़मालनामों में से किसी चीज़ का इंकार करता है? क्या मेरे (मुक़र्रर किए हुए) लिखने वालों ने तुझ पर कोई ज़ुल्म किया है (कि कोई गुनाह किए बग़ैर लिख लिया हो या करने से ज़्यादा लिख दिए हों)? वह अ़र्ज़ करेगा कि ऐ परवरदिगार! नहीं!! (न इंकार है, न ज़ुल्म का दावा है) इसके बाद अल्लाह जल्ल ल शानुहू सवाल फ़रमायेंगे कि क्या तेरे पास इन बदआ़मालियों का कोई उज़्र है? वह अ़र्ज़ करेगा कि ऐ परवरदिगार! मेरे पास कोई उज़्र नहीं!

इसके बाद अल्लाह का इर्शाद होगा कि हां बेशक तेरी एक नेकी हमारे पास महफ़ूज़ है (वह भी तेरे सामने आती है) इसके बाद एक पुर्ज़ा निकाला जाएगा जिसमें———————

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अश्हदु अल्लाइला ह इल्लल्लाहु व अन्न न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुह।

लिखा होगा और उस बन्दे से फ़रमाया जाएगा कि जा! अपने आ़माल

का वज़न होता देख ले। वह बन्दा अ़र्ज़ करेगा कि ऐ मेरे रब! (तौलना-न-तौलना बराबर है। मेरी हलाकत ज़ाहिर है, क्योंकि) इन दफ़्तरों की मौजूदगी में इस पुर्ज़े की क्या हक़ीक़त है? अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमायेंगे कि यक़ीन जान। तुझ पर आज ज़ुल्म न होगा (तौलना ज़रूरी है)। चुनांचे वह सारे दफ़्तर (इंसाफ़ की तराज़ू के एक पलड़े में और वह पुर्ज़ा दूसरे पलड़े में रख दिया जाएगा और (नतीजे के तौर पर) वे दफ़्तर हल्के रह जाएंगे और वह पुर्ज़ा (इन सब दफ़्तरों से) भारी निकलेगा, इसके बाद सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि बात (असल यह है कि) अल्लाह के नाम की मौजूदगी मे कोई चीज़ वज़नी न हो सकेगी। —तिर्मिज़ी, इब्ने माजा

यह इख़्लास और दिल में अल्लाह का डर और अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत व तअ़ल्लुक़ के साथ पढ़ने की बरकत है। अल्लाह का नाम लेना भी उसी वक़्त नेकी बनता है जबकि खुलूस के साथ पढ़ा जाए। यूँ काफ़िर भी कभी-कभी कलिमा पढ़ देते हैं लेकिन उनका यह नामे इलाही ख़ाली ज़ुबान से ले लेना आख़िरत में उनको निजात न दिलायेगा। ईमान भी हो; इख़्लास भी; तभी नेकी में जान पड़ती है और वज़नदार बनती है।

सबसे ज़्यादा वज़नी अ़मल

हज़रत अबुद्दर्दा ؓ से रिवायत है आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा सबसे ज़्यादा वज़नी चीज़ जो क़ियामत के दिन मोमिन की तराज़ू में रखी जाएगी, वह अच्छे अख़्लाक़ होंगे फिर फ़रमाया कि बिला शुब्हा अल्लाह गंदगी और बेहयाई वाले से बुग्ज़ (कपट) रखते हैं। —मिश्कात शरीफ

काफ़िरों की नेकियाँ बेवज़न होंगी

सूरः कहफ़ के आख़िरी रकूअ़ में इर्शाद है :

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ۝ الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۝ أُولٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ۝

क़ुल हल नुनब्बिउकुम बिल्अख़्सरी न अअ्माला। अल्लज़ी न ज़ल्ल न सअ्युहुम फ़िल हयातिद्दुन्या व हुम यहसबू न अन्नहुम युह्सिनू न सुन्आ। उलाइकल्लज़ी न क फ़रू बिआयाति रब्बिहिम व लिक़ाइही फ़ हबितत अअ् मालुहुम फ़ ला नुक़ीमु लहुम यौमल क़ियामति वज़्ना।

'आप फ़रमा दीजिए, क्या हम तुमको ऐसे लोग बताएं जो आ़माल के एतबार से बड़े घाटे में हैं। (ये) वे लोग हैं जिनकी कोशिश अकरात गयी दुनिया की ज़िंदगी में और वे समझते रहे कि ख़ूब बनाते हैं काम! ये वही हैं, जो इंकारी हुए अपने रब की आयतों के और उसकी मुलाक़ात के सिवा अकरात गए उनके अ़मल। पस हम क़ियामत के दिन उनके लिए तौल क़ायम करेंगे।'

यानि सबसे ज़्यादा टूटे और ख़सारे वाले हक़ीक़त में वे लोग हैं, जिन्होंने वर्षों दुनिया जोड़कर ख़ुश हुए और यह यक़ीन करते रहे कि हम बड़े कामयाब और बामुराद हैं। कल हज़ारपति थे। आज लखपति हो गए। पिछले साल म्युनिस्पिल बोर्ड के मेम्बर थे। इस चुनाव में मेम्बर पार्लियामेंट बन गये ग़रज़ कि इसी फेर में ज़िंदगी गुज़ारी अल्लाह को न माना। उसकी आयतों का इन्कार किया, क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने हाज़िरी से झुठलाया। मरने के बाद क्या बनेगा, इसको कभी न सोचा, सिर्फ़ दुनिया की तरक़्क़ियों और कामयाबियों को बड़ा कमाल समझते रहे। जब क़ियामत के दिन हाज़िर होंगे तो कुफ़्र और दुनिया की मुहब्बत और दुनिया की कोशिश ही उनके आ़मालनामों में होगी, वहां ये चीज़ें बेवज़न होंगी और दोज़ख़ में जाना पड़ेगा। उस वक़्त आँखें खुलेंगी कि कामयाबी क्या है?

यहूदी और ईसाई, मुश्रिक और काफ़िर, जो दुनिया की ज़िंदगी में अपने ख़्याल में नेक काम करते हैं। जैसे पानी पिलाने कि लिए जगह का इंतिज़ाम करते हैं और मजबूर की मदद कर गुज़ारते हैं यह अल्लाह के नामों का विर्द (बार-बार पढ़ना) रखते हैं **'इला ग़ैरि ज़ालिक'**। इस क़िस्म

के काम भी आख़िरत में उनको निजात न दिलाएंगे। साधू और राहिब (योगी, संसार-त्यागी) जो बड़ी-बड़ी रियाज़तें (तपस्या) करते हैं और मुजाहिदा करके नफ़्स को मारते हैं और यहूदियों और ईसाइयों के राहिब और पादरी जो नेकी के ख़्याल से शादी नहीं करते। इस क़िस्म के तमाम काम बेफ़ायदा हैं। आख़िरत में कुफ़्र की वजह से कुछ न पाएंगे। काफ़िर की नेकियां मुर्दा हैं, वे क़ियामत के दिन नेकियों से ख़ाली हाथ होंगे। सूरः इब्राहीम में इर्शाद हैं-------------

مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ نِ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ○ لَّا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ○ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ

म स लुल्लज़ी न क फ़ रू बिरब्बिहिम अअ़्मालुहुम क र मादि निश-तद्दत बिहिर्रीहु फ़ी यौमिन आ़सिफ़ि। ला यक़्दिरू न मिम्मा क स बू अ़ला शैइ। ज़ालि क हुवज़्ज़ालुल बईद।

यानी (इन काफ़िरों को अगर अपनी निजात के मुतअ़ल्लिक़ यह ख़्याल हो कि हमारे आ़माल हमको नफ़ा देंगे तो इसके मुतअ़ल्लिक़ सुन लो कि) जो लोग अपने परवरदिगार के साथ कुफ़्र करते हैं। उनकी हालत (अ़मल के एतबार से) यह है कि जैसे राख हो, जिसे तेज़ आंधी के दिन में तेज़ी के साथ उड़ा ले जाए (कि इस शख़्स में राख का नाम व निशान न रहेगा, इसी तरह) इन लोगों ने जो अ़मल किए थे, उनका कोई हिस्सा उनको हासिल न होगा (बल्कि राख की तरह सब ज़ाय व बर्बाद हो जाएंगे और कुफ़्र व गुनाह ही क़ियामत के दिन साथ होंगे। यह काफ़ी दूर की गुमराही है) कि गुमान तो यह है कि हमारे अ़मल नफ़ा देने वाले होंगे और फिर ज़रूरत के वक़्त कुछ काम भी न आएंगे।[1]

साहिबे तफ़सीरे मज़्हरी **'फ़ ला नुक़ीमु लहुम यौमल क़ियामति वज़्ना'** की तफ़सीर में लिखते हैं कि अल्लाह तआ़ला के नज़दीक काफ़िरों के अ़मल का कोई एतबार या अहमियत न होगी। फिर हुज़ूरे अक़्दस ﷺ का

---

1. ब्यानुल क़ुरआन मअ़ ज़्यादतुत्तौज़ीह वत्तफ़्हीम

इर्शाद, हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से नक़ल फ़रमाया है (जो इस किताब में पहले गुज़र भी चुका है) कि (क़ियामत के दिन) कुछ लोग भारी- भरकम (पोज़ीशन के एतबार से या जिस्म की मोटाई के लिहाज़ से) मोटे- ताज़े आएंगे, जिनका वज़न अल्लाह के नज़दीक मच्छर के पर के बराबर भी न होगा। इसके बाद सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि (मेरी ताईद के लिए) तुम चाहो तो यह आयत पढ़ लोः **'फ़ ला नुक़ीमु लहुम यौमल क़ियामति वज़्ना'**

फिर साहिबे तफ़सीरे मज़्हरी आयत के इन लफ़्ज़ों की दूसरी तफ़सीर करते हुए फ़रमाते हैं इन (काफ़िरों) के लिए तराज़ू खड़ी भी न की जाएगी और तौलने का मामला उनके साथ होना ही नहीं, क्योंकि उनके (नेक) अ़मल वहां पर अकारत हो जाएंगे, इसलिए सीधे दोज़ख़ में डाल दिए जाएंगे। आयत में आये लफ़्ज़ों के तीसरा मानी ब्यान करते हुए फ़रमाते हैं, या यह मानी है कि काफ़िर अपने जिन अ़मल को नेक समझते हैं, क़ियामत की तराज़ू में उनका कुछ वज़न न निकलेगा। (क्योंकि वहां इस नेक काम में वज़न होगा जिन्हें ईमान की दौलत हासिल करते हुए, इख़्लास के साथ (अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने के लिए) दुनिया में किया गया था।

इसके बाद अ़ल्लामा सुयूती (रह०) से नक़ल फ़रमाते हैं कि इल्म वालों का इसमें इख़्तिलाफ़ है कि ईमान वालों के अ़मल का सिर्फ़ वज़न होगा या काफ़िरों के अ़मल भी तौले जाएंगे। एक जमाअ़त का कहना है कि सिर्फ़ मोमिनों के अ़मल तौले जाएंगे (क्योंकि काफ़िरों की नेकियां तो अकरत हो जाएंगी, फिर जब नेकी के पलड़े में रखने के लिए कुछ न रहा तो एक पलड़ा क्या तौला जाए?) इस जामअ़त ने **'फ़ ला नुक़ीमु लहुम यौमल क़ियामति वज़्ना'** से दलील ली है। दूसरी जमाअ़त कहती है कि क़ाफ़िरों के अ़मल भी तौले जाएंगे। (लेकिन वह बेवज़न निकलेंगे)। उनकी दलील आयत **'व मन ख़फ़्फ़त मवाज़ीनुहू फ़ उलाइ कल्लज़ी न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम फ़ी जहन्नन म ख़ालिदून'** से है, जिसका तर्जुमा यह है, 'और जिनकी तौल हल्की निकली, तो ये वे लोग हैं जो हार बैठे अपनी जान। ये दोज़ख़ में हमेशा रहेंगे। दलील **'हुम फ़ीहा ख़ालिदून'** से है। मतलब यह है कि अल्लाह

तआ़ला ने इस आयते करीमा में हल्की तौल निकलने वालों के बारे में फ़रमाया है कि वह दोज़ख़ में हमेशा रहेंगे। इससे मालूम हुआ कि काफ़िरों के आ़माल भी तौले जाएंगे क्योंकि इस पर सब का इत्तिफ़ाक़ है कि मोमिन कोई भी दोज़ख़ में हमेशा न रहेगा।

इसके बाद साहिबे तफ़्हीरे मज़्हरी अ़ल्लामा क़ुर्तबी का क़ौल नक़ल फ़रमाते हैं कि हर एक के आ़माल नहीं तौले जाएंगे (बल्कि इसमें तफ़सील है और वह यह है कि) जो लोग बग़ैर हिसाब जन्नत में जाएंगे या जिनको दोज़ख़ में बग़ैर हिसाब हश्र का मैदान क़ायम होते ही जाना होगा इन दोनों जमाअ़तों के आ़माल न तौले जाएंगे और इनके अ़लावा बाक़ी मोमिनों व काफ़िरों के अ़मल का वज़न होगा।

साहिबे तफ़सीरे मज़्हरी इसके बाद फ़रमाते हैं कि अ़ल्लामा क़ुर्तबी का यह इर्शाद दोनों जामअ़तों के मस्लकों और दोनों आयतों (आयत सूरः कहफ़ और आयत सूरः मूमिनून) के मतलबों को जमा कर देते हैं।

हज़रत हकीमुल उम्मत क़ुद्दुस सिर्रहू (ब्यानुल क़ुरआन में) सूरः आराफ़ के शुरू में एक मुफ़ीद तम्हीद के बाद इर्शाद फ़रमाते हैं कि, 'पस इस मीज़ान में ईमान व कुफ़्र भी वज़न किया जाएगा और इस वज़न में एक पलड़ा ख़ाली रहेगा और एक पलड़े में अगर वह मोमिन व काफ़िर अलग-अलग हो जाएंगे (तो) फिर ख़ास मोमिनों के लिए एक पल्ले में उनके हसनात[1] और दूसरे पल्ले में उनके सैयिआत[2] रखकर उन अ़मल का वज़न होगा और जैसा कि दुर्रे मंसूर में हज़रत इब्ने अ़ब्बास ؓ से रिवायत किया गया है कि अगर हसनात ग़ालिब हुए तो जन्नत और अगर सैयिआत ग़ालिब हुए तो दोज़ख़ और अगर दोनों बराबर हुए तो आराफ़ तज्वीज़ होगी। फिर चाहे शफ़ाअ़त से पहले सज़ा या सज़ा के बाद मग़्फ़िरत हो जाएगी (और दोज़ख़ वाले और आराफ़ वाले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे)।

---

1. नेकियाँ 2. गुनाह

अल्लाह की रहमत से बख़्शे जायेंगे

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि हरगिज़ कोई जन्नत में अल्लाह की रहमत के बग़ैर दाख़िल न होगा? सहाबा किराम ﷺ ने सवाल किया कि या रसूलल्लाह! आप भी अल्लाह की रहमत के बग़ैर जन्नत में न जाएंगे? इसके जवाब में सैयदे आ़लम ﷺ ने अपना मुबारक हाथ सर पर रखकर फ़रमाया और न मैं जन्नत में दाख़िल हूंगा, मगर यह कि अल्लाह मुझे अपनी रहमत से ढांप ले। —तर्ग़ीब व तर्हीब

इस हदीस मुबारक में नेक अ़मल करने वालों को और ख़ास तौर से उन इबादत करने वालों, दुनिया से चाव न रखने वालों, अल्लाह का ज़िक्र करने वालों और जिहाद करने वालों को तंबीह फ़रमायी गयी है जो हर वक़्त भलाई और नेकी में लगे रहते हैं कि अपने अ़मल पर नाज़ न करें और यह न समझें कि हम जन्नत के हक़दार वाजबी तौर पर हो चुके बल्कि चाहिए कि अपने आ़माल को कमतर समझते रहें और डरते रहें कि शायद क़ुबूल न हों। अगर अल्लाह तआ़ला आ़माल क़ुबूल न फ़रमायें तो किसी की उन पर क्या ज़बदरस्ती है जो नेक आ़माल लोग करते हैं, उनको क़ुबूल फ़रमा कर सवाब से नवाज़ें और जन्नत में दाख़िल फ़रमायें यह उनकी सिर्फ़ रहमत है, उनकी मामूली नेमत के बदला भी सारी उम्र के अ़मल नहीं हो सकते हैं (जैसा कि नेमतों के सवाल के सिलसिले में रिवायत गुज़र चुकी है) जब आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि कोई भी अल्लाह की रहमत के बग़ैर जन्नत में दाख़िल न होगा तो सहाबा किराम ﷺ ने यह समझकर कि आप तो अल्लाह तआ़ला के हुक्मों पर पूरी तरह क़ायम हैं और सख़्त मेहनत और मुजाहिदा इबादत और तब्लीग़ के लिए बर्दाश्त करते हैं और आपके किसी भी अ़मल में ज़रा खोट का शुब्हा भी नहीं हो सकता, तो तश्रीह (व्याख्या) चाही कि आप जन्नत में आ़माल की वजह से जा सकेंगे या नहीं। आप ﷺ ने साफ़ फ़रमा दिया कि मैं भी अल्लाह की रहमत का मुहताज हूं, उसकी रहमत के बग़ैर जन्नत में न जाऊंगा। हैं तो अल्लाह के बन्दे ही। आख़िर आप रहमत के मुहताज क्यों न होंगे। सहाबा किराम ﷺ पर बेइंतिहा रहमत

व रिज़्वान की बारिशें हों जिन्होंने सवाल करके बाद में आने वालों के लिए अच्छी तरह दीन समझने के लिए नबी करीम ﷺ के इर्शादात का ज़ख़ीरा जमा कर दिया और फिर उसको बाद वालों के सुपुर्द कर गये। जो लोग हज़ूरे अक़्दस ﷺ को ख़ुदाई अख़्तियारात देते हुए कहते हैं कि जो लेना है, वह लेंगे मुहम्मद से। इस मुबारक हदीस को ग़ौर से पढ़ें।

हर एक शर्मिंदा होगा

हज़रत मुहम्मद बिन अबी उमैरा ؓ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हा अगर कोई बन्दा पैदाइश के दिन से मौत आने तक अल्लाह की फ़रमांबरदारी में चेहरे के बल गिरा पड़ा रहे तो वह क़ियामत के दिन इस सारे अ़मल को हक़ीर (तुच्छ) समझेगा और यह तमन्ना करेगा कि उसको दुनिया की तरफ़ वापस कर दिया जाए ताकि और ज़्यादा बदला व सवाब (भले काम करके) हासिल करे। —अहमद

हज़रत अबू हुरैरः ؓ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम में से जिसको भी मौत आएगी, ज़रूर शर्मिंदा होगा। सहाबा किराम ؓ ने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लह के रसूल! किस चीज़ की शर्मिंदगी होगी। फ़रमाया, अगर अच्छे अ़मल करने वाला था तो यह सोच कर शर्मिंदा होगा कि और अ़मल कर लेता तो क्या अच्छा होता और अगर बुरे अ़मल करने वाला था तो यों सोचेगा कि काश! मैं बुराइयों से अपनी जान को बचाये रखता। —तिर्मिज़ी शरीफ़

शफ़ाअ़त

क़ियामत में शफ़ाअ़त भी अल्लाह जल्ल ल शानुहू क़ुबूल फ़रमाएंगे और उससे ईमान वालों को बड़ा नफ़ा पहुंचेगा। आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया है कि क़ियामत के दिन तीन गिरोह शफ़ाअ़त करेंगे।

(1) अंबिया किराम अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम, (2) उलमा और (3)

शुहदा[1]। लेकिन शफ़ाअ़त वही कर सकेगा, जिसे अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से शफ़ाअ़त करने की इजाज़त होगी। जैसा कि आयतल कुर्सी में फ़रमाया :

مَنْ ذَالَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ

मन ज़ल्लज़ी यशफ़उ इन द हु इल्ला बिइज़्निह।

'कोई है जो उसके दरबार में शफ़ाअ़त करे बग़ैर उसकी इजाज़त के।'

और सूरः ताहा में फ़रमाया :

یَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَ رَضِیَ لَهٗ قَوْلًا

यौ म इज़िल्ला तन्फ़उश्शफ़ाअ़तु इन द हु इल्ला मन अज़ि न लहुर्रहमानु व रज़ि य लहू क़ौला।

'उस दिन सिफ़ारिश नफ़ा न देगी मगर ऐसे शख़्स को जिसके वास्ते अल्लाह ने इजाज़त दे दी है और इसके वास्ते बोलना पसन्द कर लिया हो।'

जिसको अल्लाह जल्ल ल शानुहू की तरफ़ से शफ़ाअ़त की इजाज़त होगी, वही शफ़ाअ़त कर सकेगा और जिसके लिए शफ़ाअ़त की इजाज़त होगी, इसी के बारे में शफ़ाअ़त करने वाले शफ़ाअ़त करने की हिम्मत करेंगे।

काफ़िरों के हक़ में शफ़ाअ़त करने की इजाज़त न होगी और न कोई उनका दोस्त और सिफ़ारिशी होगा। अल्लाह का इर्शाद है :

مَا لِلظّٰلِمِیْنَ مِنْ حَمِیْمٍ وَّلَا شَفِیْعٍ یُّطَاعُ ○ (مؤمن: ١٨)

मा लिज़्ज़ालिमी न मिन हमीमिंव्व ला शफ़ीइंयुताअ़।

—*सूरः मोमिन*

'ज़ालिमों का न कोई दोस्त होगा और न कोई सिफ़ारिशी, जिसका कहा माना जाए।'

1. इब्ने माजा

मिर्क़ात शरह मिश्कात में लिखा है कि क़ियामत के दिन पांच तरह की शफ़ाअ़तें होंगी। सबसे पहली शफ़ाअत हश्र के मैदान में जमा होने के बाद हिसाब-किताब शुरू कराने के लिए (जिसका ज़िक्र तफ़सील से गुज़र चुका है) तमाम नबी अल्लाह के दरबार में शफ़ाअ़त करने से इंकार कर देंगे और आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ तमाम अगले-पिछले मुस्लिमों और काफ़िरों के लिए शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे। दूसरी शफ़ाअ़त बहुत से ईमान वालों को जन्नत में बग़ैर हिसाब दाख़िल कराने के बारे में होगी। यह सिफ़ारिश भी आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ फ़रमायेंगे। तीसरी शफ़ाअ़त उन लोगों के लिए होगी जो बदआमालियों की वजह से दोज़ख़ के हक़दार हो चुके होंगे। यह शफ़ाअ़त आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ भी फ़रमायेंगे और आपके अ़लावा मोमिन और शहीद, आ़लिम भी उनकी शफ़ाअ़त करेंगे। चौथी शफ़ाअ़त उन गुनाहगारों के बारे में होगी जो दोज़ख़ में दाख़िल हो चुके होंगे। उनको दोज़ख़ से निकालने के लिए नबीयों और फ़रिश्ते शफ़ाअ़त करेंगे। पांचवी शफ़ाअ़त जन्नतियों के दर्जे बुलन्द कराने के लिए होंगीं।

हज़रत औ़फ़ बिन मालिक ؓ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरे रब के पास से एक क़ासिद ने आकर (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से) मुझे यह पैग़ाम दिया कि या तो मैं इस बात को अख़्तियार कर लूं कि मेरी आधी उम्मत बिला हिसाब व अ़ज़ाब जन्नत में दाख़िल हो जाए या इसको आख़्तियार कर लूं कि (अपनी उम्मत में से जिसके लिए भी चाहूं, शफ़ाअ़त कर सकूं। इसलिए मैंने शफ़ाअ़त को अख़्तियार कर लिया और मेरी शफ़ाअ़त उन लोगों के लिए होगी, जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं करते। —मिश्कात शरीफ़

चूंकि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने उम्मत का ज़्यादा नफ़ा उसी में समझा कि हर शख़्स के लिए शफ़ाअ़त करने का हक़ ले लें। इसलिए आपने उसी को अख़्तियार फ़रमाया।

हज़रत अबू हुरैरः ؓ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि (अल्लाह की तरफ़ से हर नबी को) एक मक़बूल दुआ़ दी गयी। पस हर नबी

ﷺ ने दुनिया में मांग कर क़ुबूल करा ली और मैंने (इस दुआ को दुनिया में मांगकर ख़त्म नहीं कर दी, बल्कि उस दुआ को क़ियामत के दिन तक के लिए छिपा रखी है, ताकि उस दिन अपनी उम्मत की शफ़ाअ़त में उसको काम में लाऊं। पस मेरी शफ़ाअ़त इन्शाअल्लाह मेरे हर उस उम्मती को ज़रूर पहुंचेगी जो इस हाल में मर गया हो कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करता था।

—मुस्लिम शरीफ़

इस मुबारक हदीस के अन्दाज़ से साफ़ मालूम होता है कि अल्लाह जल्ल ल शानुहू की यह आदत थी कि हर नबी को ख़ास तौर पर यह अख़्तियार देते थे कि एक दुआ ज़रूर ही क़ुबूल होती ही थी। लेकिन ख़ास एजाज़ के लिए अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने हर नबी को अख़्तियार दिया कि एक बार तुम जो चाहो, मांग लो। प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया कि वह ख़ास दुआ हर नबी ने दुनिया ही में मांग ली। मैंने यहां नहीं मांगी। बल्कि क़ियामत के दिन के लिए रख छोड़ी है। उसे अपनी उम्मत की शफ़ाअ़त के लिए इस्तेमाल करूंगा।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्रू बिन आ़स رضي الله عنه से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ने इर्शाद फ़रमाया कि (हमारे) इस क़िब्ले के मानने वालों में इतनी ज़्यादा तादाद दोज़ख़ में दाख़िल होगी कि जिसका इल्म अल्लाह ही को है (और यह दोज़ख़ का दाख़िला) अल्लाह की नाफ़रमानियों की वजह से और नाफ़रमानियों पर जुर्अत (दुस्साहस) करने और अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ चलने की वजह से (होगी)। पस मैं सज्दा में पड़कर अल्लाह की तारीफ़ में लग जाऊंगा जैसा कि खड़े होकर उसकी तारीफ़ ब्यान करूंगा। इसके बाद (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से) हुक्म होगा कि अपना सर उठाओ और सवाल करो। तुम्हारा सवाल पूरा किया जाएगा और शफ़ाअ़त करो, तुम्हारी शफ़ाअ़त मानी जाएगी।

—मुस्लिम शरीफ़

हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब رضي الله عنه से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं अपनी उम्मत के लिए शफ़ाअ़त करता रहूंगा और अल्लाह मेरी शफ़ाअ़त क़ुबूल फ़रमाते रहेंगे, यहां तक कि अल्लाह

तआला मुझसे पूछेगा कि ऐ मुहम्मद! क्या राज़ी हो गये, मैं अ़र्ज़ करूंगा कि ऐ रब! मैं राज़ी हो गया। —तर्ग़ीब व तर्हीब

हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि नबियों के लिए (क़ियामत के दिन) नूर के मिंबर रख दिए जाएंगे, जिन पर वे तशरीफ़ फ़रमा होंगे और मेरा मिंबर ख़ाली रहेगा। मैं उस पर इस डर से न बैठूंगा कि कहीं जन्नत में मुझे न भेज दिया जाए और मेरे बाद, मेरी उम्मत (शफ़ाअ़त से महरूम) न रह जाए। मैं अ़र्ज़ करूंगा कि ऐ रब! मेरी उम्मत!! मेरी उम्मत!!! अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमाएंगे कि ऐ मुहम्मद! तुम अपनी उम्मत के बारे में मुझसे क्या चाहते हो? मैं अ़र्ज़ करूंगा कि उनका हिसाब जल्दी कर दिया जाए। चुनांचे उम्मते मुहम्मदी को बुलाकर उनका हिसाब जल्दी कर दिया जाएगा। नतीजे के तौर पर कुछ तो उनमें अल्लाह की रहमत से और कुछ मेरी शफ़ाअ़त से जन्नत में दाख़िल होगा। मैं सिफ़ारिश करता ही रहूंगा। यहां तक कि जो लोग दोज़ख़ में भेज दिए गए होंगे। उनके निकालने के लिए भी (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से) मुझे (उनके लिखे हुए नामों की) एक किताब दे दी जाएगी। यहां तक कि (मालिक ﷺ) दोज़ख़ के दारोग़ा मुझसे कहेंगे कि आपने अपनी उम्मत में से किसी को भी अल्लाह के ग़ुस्से के लिए नहीं छोड़ा जो अ़ज़ाब में पड़ा रहा चला जाता (बल्कि सबको निकलवा लिया)। —तर्ग़ीब व तर्हीब

तंबीह

आंहज़रत ﷺ की शफ़ाअ़त ज़रूर होगी और हदीसों में जो कुछ आया है, सब सही और दुरुस्त है। लेकिन शफ़ाअ़त के भरोसे पर भले काम न करना और गुनाहों में पड़े रहना बड़ी नादानी है। यह तो शफ़ाअ़त की हदीसों से ही मालूम हुआ और आगे आने वाली हदीसों से भी यह बात साफ़ हो जाएगी कि इस उम्मत क़े आदमी बुहत बड़ी तादाद में दोज़ख़ में जाएंगे। दोज़ख़ में जाने और फिर कितनी मुद्दत अ़ज़ाब भुगतने के बाद शफ़ाअ़त से निकलना होगा। यह ख़ुदा ही बेहतर जाने! अब कौन-सा गुनाहगार और नेक अ़मल से ख़ाली यह कह सकता है कि मैं दोज़ख़ में हरगिज़ न जाऊंगा? कोई

भी यह दावा नहीं कर सकता फिर गुनाहों पर जुर्अत करना और नेकियों से ख़ाली हाथ रहना कौन-सी समझदारी है? इन ही सफ़्हों (पृष्ठों) में अभी क़रीब ही गुज़र चुका है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि (हमारे) इस क़िब्ले को मानने वालों में से इतनी बड़ी तादाद दोज़ख़ में दाख़िल होगी कि जिसका इल्म अल्लाह ही को है और यह दोज़ख़ का दाख़िला अल्लाह की नाफ़रमानियों और नाफ़रमानियों पर ज़ुर्अत करने और खुदा के हुक्म के ख़िलाफ़ करने की वजह से होगा।

मोमिनों की शफ़ाअ़त

आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ की शफ़ाअ़त उम्मत के लिए रहमत होगी और आप के तुफ़ैल में आप के बहुत-से उम्मतियों को भी शफ़ाअ़त करने का एजाज़ (श्रेय) मिलेगा। हज़रत अबू सईद رضي الله عنه से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि बिला शुब्हा मेरी उम्मत के कुछ लोग पूरी जमाअ़तों के लिए शफ़ाअ़त करेंगे और कुछ एक क़बीले के लिए और कुछ लोग उस्बा[1] के लिए और कुछ एक शख़्स के लिए सिफ़ारिश करेंगे। यहां तक कि सारी उम्मत जन्नत में दाख़िल हो जाएगी और एक हदीस में है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के एक शख़्स की शफ़ाअ़त के क़बीला बनू तमीम के आदमियों से भी ज़्यादा लोग जन्नत में दाख़िल होंगे। —मिश्कात शरीफ़

हज़रत अनस رضي الله عنه से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि (जन्नतियों के रास्ते में) दोज़ख़ में जाने वालों की लाइन बनी खड़ी होगी। इसी बीच एक जन्नती वहां से गुज़रेगा। दोज़ख़ियों की लाइन वालों में से एक शख़्स उस जन्नती से कहेगा कि ऐ साहब! क्या आप मुझे पहचानते नहीं? मैंने आप को दुनिया में एक बार पानी पिलाया था। इसलिए मेहरबानी फ़रमाकर मेरी शफ़ाअ़त कर दीजिए और दोज़ख़ियों की इन लाइन वालों में से कोई गुज़रने वाला जन्नती से कहेगा कि मैंने आप को वुज़ू का

1. दस से चालीस तक की तादाद के गिरोह को उस्बा कहते हैं।

पानी दिया था (मेहरबानी फ़रमाकर शफ़ाअ़त कर दीजिए) चुनांचे जन्नती शफ़ाअ़त करके जन्नत में दाख़िल कर देगा। —इब्ने माजा

लानत करने वाले शफ़ाअ़त नहीं कर सकेंगे

हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि लानत करने की आदत वाले क़ियामत के दिन न गवाह बनेंगे, न शफ़ाअ़त करने के अहल होंगे यानी उनकी इस बुरी आदत की वजह से गवाही और शफ़ाअ़त का ओहदा न दिया जाएगा जो बड़ी सआ़दत और इज़्ज़त का रुत्बा है। —मुस्लिम शरीफ़

मुजाहिद की शफ़ाअ़त

तिर्मिज़ी शरीफ़ की एक लम्बी रिवायत में है, जिसे हज़रत मिक्दाम बिन मअ़्दीकर्ब ﷺ ने रिवायत की है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने शहीद की बड़ाईयां ब्यान करते हुए भी यह फ़रमाया कि सत्तर रिश्तेदारों के बारे में उसकी शफ़ाअ़त क़ुबूल की जाएगी। —मिश्कात शरीफ़

मां-बाप के हक़ में नाबालिग़ बच्चे की शफ़ाअ़त

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि जिसने तीन बच्चे (पहले से अपने) आगे (आख़िरत में) भेज दिए थे जो बालिग़ न हुए थे वे बच्चे उसके लिए मर्द हो या औरत, दोज़ख़ से बचाने के लिए मज़बूत क़िले (की तरह) काम आने वाले बन जाएंगे। यह सुनकर हज़रत अबूज़र ﷺ ने अ़र्ज़ किया कि मैंने तो सिर्फ़ दो बच्चे आगे भेजे हैं। मेरे बारे में क्या फ़रमाते हैं? नबी करीम ﷺ का इर्शाद हुआ कि दो बच्चे जो आगे भेजे हैं, उनके बारे में भी यही बात है। हज़रत उबई बिन कअ़्ब ﷺ ने अ़र्ज़ किया कि मैंने तो एक ही बच्चा आगे भेजा है। आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि एक के बारे में भी यही बात है। —मिश्कात शरीफ़

आगे भेजने का मतलब यह है कि मां-बाप या दोनों में से एक की

मौजूदगी में बच्चे का इंतिक़ाल हो जाए। बच्चे की मौत पर जो मां-बाप को ग़म होता है। उसके बदले में अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने यह ख़ुशी रखी है कि वह बच्चा मां-बाप के बख़्शवाने के लिए ज़ोर लगायेगा। अगर अधूरा बच्चा गिर गया तो वह भी मां-बाप को बख़्शवाने के लिए ज़ोर लगायेगा। जैसा कि हज़रत अ़ली ﷺ ने आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाया है कि बिला शुब्हा अधूरा रह गया बच्चा भी उस वक़्त अपने रब से बड़ी ज़बरदस्त सिफ़ारिश मां-बाप के लिए करेगा जबकि उसके मां-बाप दोज़ख़ में दाख़िल कर दिए जाएंगे। उसकी ज़ोरदार सिफ़ारिश पर उससे कहा जाएगा कि ऐ अधूरे बच्चे जो अपने रब से (मां-बाप की बख़्शिश के लिए) ज़ोर लगा रहा है। अपने मां-बाप को जन्नत में दाख़िल कर दे। इसके बाद वह अपनी नाफ़ के ज़रिए खींचता हुआ ले जाकर उन दोनों को जन्नत में दाख़िल कर देगा। —इब्नेमाजा शरीफ़

क़ुरआन के हाफ़िज़ की शफ़ाअ़त

हज़रत अ़ली ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने क़ुरआन पढ़ा और उसको अच्छी तरह याद कर लिया और क़ुरआन ने जिन चीज़ों और कामों को हलाल बताया है, उनको (अपने अ़मल और अ़क़ीदे में) हलाल रखा और जिन चीज़ों को उसने हराम बताया है, उनको (अपने अ़मल और अ़क़ीदे में) हराम ही रखा तो उसको अल्लाह जन्नत में दाख़िल फ़रमायेंगे और उसके घर वालों में से ऐसे दस आदमियों के बारे में उसकी शफ़ाअ़त क़ुबूल फ़रमायेंगे जिन के लिए (बुरे आ़माल की वजह से) दोज़ख़ में जाना ज़रूरी हो चुका होगा। —तिर्मिज़ी शरीफ़ वग़ैरह

तंबीह

जिसे क़ुरआन मजीद याद हो। उसकी शफ़ाअ़त दस आदमियों के हक़ में क़ुबूल होगी। जैसा कि अभी ऊपर की हदीस में गुज़रा। लेकिन इसी के साथ हदीस शरीफ़ में यह शर्त भी है कि क़ुरआन पाक पर अ़मल करने वाला हो। क़ुरआन मजीद के मुतालबों और तक़ाज़ों को पूरा करता हो। हराम से

बचता हो, हलाल पर अ़मल करता हो। लेकिन जिसने क़ुरआन शरीफ़ के उस तक़ाज़ों और मुतालबों को पीठ पीछे डाला तो ख़ुद क़ुरआन शरीफ़ उस पर दावा करेगा और दोज़ख़ में दाख़िल कर देगा। बहुत-से लोग गुनाह करते जाते हैं और नेक अ़मल से कतराते हैं और नसीहत करने पर कहते हैं कि साहब! हमारा बेटा या भतीजा या फ़्लां रिश्तेदार हाफ़िज़ है। वह बख़्शवा लेगा। हालांकि यह नहीं देखते कि क़ुरआन शरीफ़ पर वह अ़मल भी करता है या नहीं। आजकल तो अ़मल करने वाला कोई-कोई है। दूसरे के भरोसे पर खुद गुनाहों में पड़ना नादानी है। हां, नेक अ़मल करते हुए अपने रिश्तेदार हाफ़िज़ की शफ़ाअ़त की उम्मीद रखे और साथ-ही-साथ उसे क़ुरआन शरीफ़ के मुताबिक़ भी चलाते रहें।

रोज़ा और क़ुरआन की शफ़ाअ़त

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि हज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि रोज़े और क़ुरआन बन्दे के लिए शफ़ाअ़त करेंगे। रोज़े अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ रब! मैंने उसको दिन में खाने से और दूसरी ख़्वाहिशों से रोक दिया था। इसलिए इसके हक़ में मेरी शफ़ाअ़त क़ुबूल फ़रमाइए और क़ुरआन अ़र्ज़ करेगा कि ऐ रब! मैंने उसको रात को सोने से रोक दिया था। क्योंकि यह रात को मुझे पढ़ता या सुनता था, इसलिए मेरी शफ़ाअ़त उसके हक़ में क़ुबूल फ़रमाइए। इसके बाद सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि आख़िर में दोनों की शफ़ाअ़त क़ुबूल कर ली जाएगी। —मिश्कात

हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि रोज़े रखो और क़ुरआन शरीफ़ पढ़ो। क्योंकि वह क़ियामत के दिन अपने आदमियों के लिए शफ़ाअ़त करने वाला बनकर आएगा। (फिर फ़रमाया कि) दोनों सूरतों बक़रः और इम्रान को पढ़ा करो जो बहुत ज़्यादा रौशन हैं। क्योंकि वे क़ियामत के दिन दो बादलों या दो सायबानों या परिंदों की दो जमाअ़तों की तरह जो लाइन बनाये हुए हों, आयेंगी और अपने पढ़ने वालों के लिए बड़ी ज़ोर से सिफ़ारिश करेंगी। —मुस्लिम शरीफ़

तजल्ली-ए-साक़, पुलसिरात, तक़सीमे नूर

काफ़िरों, मुश्रिकों और मुनाफ़िक़ों की बेपनाह मुसीबत

क़ियामत का दिन इंसाफ़ का दिन होगा। हर शख़्स अपनी आँखों से अपने अ़मल का वज़न देखकर जन्नत या दोज़ख़ में जाएगा। किसी को यह कहने की ताक़त होगी ही नहीं कि मुझपर ज़ुल्म हुआ, मैं बेवजह दोज़ख़ में जा रहा हूं।

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ○

व वुफ़्फ़ियत कुल्लु नफ़्सिम मा अ़मिलत व हु व अअ़्लमु बिमा यफ़्अ़लून।

अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने ईमान और भले कामों के बदले के लिए जन्नत तैयार फ़रमाई है और कुफ़्र व शिर्क और दूसरे गुनाहों की सज़ा के लिए जन्नत तैयार फ़रमायी है। अपने आ़माल के नतीजे में इन दोनों में से जिसको जहां जाना होगा, जाएगा। जन्नत में जाने के लिए दोज़ख़ के ऊपर से रास्ता होगा। जिसे हदीसों में 'सिरात' फ़रमाया गया है और आम तौर से हमारे देश वाले उसे **पुलसिरात** कहते हैं। ख़ुदा से डरने वाले मोमिन अपने-अपने दर्जे के मुताबिक़ सही सलामत उस पर से गुज़र जाएंगे और बदअ़मल चल न सकेंगे और दोज़ख़ के अंदर से बड़ी-बड़ी संडासियां निकली होंगी जो गुज़रने वालों को पकड़कर दोज़ख़ में गिराने वाली होंगी। उनसे छिल-छिलाकर गुज़रते हुए बहुत से (बदअ़मल) मुसलमान पार हो जाएंगे और जिनको दोज़ख़ में गिराना ही मंज़ूर होगा तो वे संडासियां उनको गिरा कर ही छोड़ेंगी। फिर कुछ मुद्दत के बाद अपने-अपने अ़मल के मुताबिक़ और नबियों और फ़रिश्तों और नेक बंदों की शफ़ाअ़त से और आख़िर में सीधे-सीधे अल्लाह तआ़ला की मेहरबानी से वे सब लोग दोज़ख़ से निकाल लिए जाएंगे, जिन्होंने सच्चे दिल से कलिमा पढ़ा था और दोज़ख़ में सिर्फ़ काफ़िर व मुश्रिक व मुनाफ़िक़ ही रह जाएंगे।

नूर की तक़सीम

पुलसिरात पर गुज़रने से पहले नूर तक़सीम होगा। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ ने फ़रमाया कि ईमान वाले मर्दों और औरतों को उनके अपने-अपने आ़माल के बराबर नूर तक़सीम होगा (जिसकी रौशनी में) पुल सिरात पर गुज़रेंगे और यह नूर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जन्नत का रास्ता बताने वाला होगा। उनमें से किसी का नूर पहाड़ के बराबर होगा और किसी का नूर खजूर के पेड़ के बराबर होगा और सबसे कम नूर उस शख़्स का होगा, जिसका नूर सिर्फ़ अंगूठे पर (टिमटिमाते चिराग़ की तरह) का होगा, जो कभी बुझ जाएगा और कभी रौशन हो जाएगा।

सूरः हदीद में अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने फ़रमाया :

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ بِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خَالِدِيْنَ فِيْهَا ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ○

यौ म तरल मुअ् मिनी न वल मुअ्मिनाति यस्आ नूरुहुम बै न ऐदीहिम व बिऐमानिहिम बुशराकुमुल यौ म जन्नातुन तज्री मिन तह्तिहल अन्हारु ख़ालिदी न फ़ीहा ज़ालि क हुवल फ़ौज़ुल अ़ज़ीम।

'जिस दिन आप मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखेंगे कि उनका नूर उनके आगे और उनकी दाहिनी तरफ़ दौड़ता होगा (और फ़रिश्ते उनसे कहेंगे कि) आज तुमको ख़ुशख़बरी है ऐसे बाग़ों की जिनके नीचे नहरें जारी होंगी (वे) उनमें हमेशा रहेंगे। यह बड़ी कामयाबी है।'

नूर मिलने के बाद मोमिन मर्द और औरतें पुलसिरात पर गुज़रने लगेंगे और उनके नूर की रोशनी में मुनाफ़िक़ मर्द और औरत भी पीछे-पीछे हो लेंगे लेकिन जब मोमिन मर्द व औरत आगे बढ़ जाएंगे और मुनाफ़िक़ मर्द व औरत पीछे रह जाएंगे तो ईमान वालों को आवाज़ दे कर कहेंगे कि ज़रा

इंतिज़ार करो हम भी आ रहे हैं। तुम्हारी रौशनी से हमें भी फ़ायदा पहुंच जाएगा और हम भी आगे बढ़ चलेंगे। ईमान वाले जवाब देंगे (यहां अपना ही नूर काम देता है, दूसरे के नूर से फ़ायदा पहुंचाने का क़ानून नहीं है, जाओ)। वापस अपने पीछे जहां नूर तक़सीम हुआ था, वहीं ढूंढो। चुनांचे मुनाफ़िक़ मर्द व औरत नूर लेने के लिए वापस होंगे, लेकिन वहां कुछ न मिलेगा। इसलिए फिर ईमान वालों का सहारा लेने के लिए दौड़ेंगे लेकिन उनको पा न सकेंगे। एक दीवार दोनों फ़रीक़ के दर्मियान रुकावट बन जाएगी जिसमें एक दरवाज़ा होगा। उसके अंदरूनी हिस्से में (जिधर मुसलमान हों) रहमत हागी और बाहर की तरफ़ अ़ज़ाब होगा। (जिधर मुनाफ़िक़ होंगे) उसका ज़िक्र ऊपर की आयत के बाद सूरः हदीद में इस तरह है :

يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُوْرِكُمْ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ

यौ म यक़ूलुल मुनाफ़िक़ू न वल मुनाफ़िक़ाति लिल्लज़ी न आमनुन ज़ुरूना नक़तबिस मिन नूरिकुम। क़ीलरजिऊ वराअकुम फ़ल्तमिसू नूरन फ़ज़ुरि ब बैनहुम बिसूरिल्ल हू बाब। बातिनुहू फ़ीहिर्रहमतु फ़ ज़ाहिरुहू मिन क़ि ब लिहिल अ़ज़ाब।

'जिस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और औरतें ईमान वालों से कहेंगे कि हमारा इंतिज़ार कर लो ताकि हम भी तुम्हारे नूर से रौशनी हासिल करें। उनका जवाब मिलेगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ। फिर (वहां से) रौशनी तलाश कर लो। फिर दोनों फ़रीक़ के दर्मियान एक दीवार क़ायम कर दी जाएगी, जिसमें एक दरवाज़ा भी होगा, उसके अंदरूनी हिस्से में रहमत होगी और बाहर की तरफ़ अ़ज़ाब होगा।'

इस बेपनाह मुसीबत और हैरानी व परेशानी में फंसकर कोई बचने की शक्ल मुनाफ़िक़ न पाएंगे और ईमान वालों को आवाज़ देकर मेहरबानी करने

की दलील ब्यान करते हुए कहेंगे कि हम तो दुनिया में तुम्हारे साथी थे। तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़ते और रोज़े रखते थे। अब दोस्ती और साथ का हक़ आप हज़रात को अदा करना चाहिए। क़ुरआन मजीद में मुनाफ़िक़ों की इस बात को इस तरह ब्यान फ़रमाया है :

يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ

युनादू न हुम अलम नकुम म अ़ कुम।

'मुनाफ़िक़ ईमान वालों को पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे।'

मुसलमान जवाब देंगे कि :

بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ
حَتّٰى جَاءَ اَمْرُاللّٰهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ

बला, वला किन्ननकुम फ़तन्तुम अन्फ़ु सकुम व तरब्बस्तुम वर्तब्तुम व ग़र्रत कुमुल अमानीय्यु हत्ता जा अ अम्रुल्लाहि व ग़र्रकुम बिल्लाहिल ग़रूर।

'हां (यह तो सही है कि तुम दुनिया में हमारे साथ थे) लेकिन (सियासत व मस्लहत की वजह से साथ हो गये, दिल के साथ न थे) तुम ने अपनी जानों को (निफ़ाक़ के) फ़ित्ने में डालकर हलाक किया और तुम इंतिज़ार में रहा करते थे कि (देखिए, मुहम्मद ﷺ और उनके साथी कब ख़त्म हों) और तुम को (इस्लाम के हक़ होने में) शक रहा और तुमको बेहूदा तमन्नाओं ने धोखे में डाल रखा था; यहां तक कि तुम तक अल्लाह का हुक्म (यानी मौत) आ पहुंचा और तुमको धोखा देने वाले (यानी शैतान) ने अल्लाह के बारे में धोखा में डाल रखा था।'

आगे इर्शाद फ़रमाया :

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَاْوٰكُمُ النَّارُ
هِيَ مَوْلٰكُمْ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ

फ़ल यौ म ला युअ्ख़ज़ु मिन्कुम फ़िद्यतुंव्व ला मिनल्लज़ी न क फ़ रू। मअ् वाकुमुन्नारु हि य मौलाकुम व बिअ्सल मसीर।

'तो आज न क़ुबूल किया जाएगा तुमसे जान का बदला और न तुम्हारे अ़लावा उनसे, जो एलानिया काफ़िर थे तुम सबका ठिकाना दोज़ख़ है वही तुम्हारा साथी है और वह बुरा ठिकाना है।'

साक़ की तजल्ली

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﵁ रिवायत फ़रमाते हैं कि हमने रसूले अकरम ﷺ के दरबार में अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या क़ियामत के दिन हम अपने रब को देखेंगे? जवाब में आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि हां, (ज़रूर देखोगे) क्या दोपहर के वक़्त सूरज के देखने में तुमको तकलीफ़ होती है, जबकि सूरज बिल्कुल साफ़ हो (और) उसपर ज़रा बादल न हो? और क्या चौदहवीं रात के चांद को देखने में तुमको कई तकलीफ़ होती है, जबकि वह बिल्कुल साफ़ हो और उस पर कुछ भी बादल न हो? सहाबा ﵃ ने जवाब में अ़र्ज़ किया कि अल्लाह के रसूल! नहीं (कोई तकलीफ़ नहीं होती, आसानी से देख लेते हैं)। इसी तरह क़ियामत के दिन तुम अल्लाह को ख़ूब अच्छी तरह देखोगे और कोई तकलीफ़ न होगी जैसा कि चांद-सूरज के देखने में (ज़िक्र की गयी हालत में) कोई तकलीफ़ नहीं होती है। इस के बाद इर्शाद फ़रमाया कि—

'जब क़ियामत को दिन होगा तो एक पुकारने वाला पुकारेगा कि जो जिसको पूजता था, वह अपने माबूद के पीछे लग जाए, पस जो लोग ग़ैरुल्लाह यानी बुतों और स्थानों के पत्थरों को पूजते थे। वे सबके सब दोज़ख़ में गिर पड़ेंगे (क्योंकि उनके बातिल के माबूद[1] भी दोज़ख़ का

---

1. जैसा कि क़ुरआन मजीद में आया है: 'इन्नकुम वमा तअ्बुदू न मिन दूनिल्लाहि ह स बु जहन्नम' —सूरः अंबिया

ईंधन बनेंगे)। यहां तक कि जब अह्ले किताब और वे लोग रह जाएंगे जो सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करते थे तो यहूद को बुलाकर सवाल किया जाएगा कि तुम किस की इबादत करते थे। वे जवाब में कहेंगे कि हम अल्लाह के बेटे उज़ैर की पूजा करते थे। इस जवाब पर (उन पर डांट पड़ेगी और उनसे कहा जाएगा कि) यह जो तुमने उज़ैर को अल्लाह का बेटा बताया, इस कहने में तुम झूठे हो। अल्लाह ने किसी को अपनी बीवी या औलाद क़रार नहीं दिया। इसके बाद उनसे सवाल होगा कि तुम क्या चाहते हो? वह अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ परवरदिगार! हम प्यासे हैं। हमें पिला दीजिए। उनके इस कहने पर दोज़ख़ की तरफ़ इशारा करके उनसे कहा जाएगा कि वहां जाकर क्यों नहीं पी लेते। चुनांचे वे लोग दोज़ख़ की तरफ़ (चलाकर) जमा कर दिये जाएंगे (और वह दूर से ऐसा मालूम हो रहा होगा) गोया कि वह रेत है[1] और हक़ीक़त में वह आग होगी, जिसके हिस्से आपस में एक दूसरे को जला रहे होंगे। पस वे लोग उसमें गिर पड़ेंगे। फिर नसारा (ईसाई) को बुलाया जाएगा और उनसे सवाल किया होगा कि तुम किस की इबादत करते थे? उनके इस जवाब पर (डांटने के लिए) कहा जाएगा कि (यह जो तुमने मसीह को अल्लाह का बेटा बताया, इस कहने में) तुम झूठे हो। अल्लाह ने किसी को अपनी बीवी या औलाद क़रार नहीं दिया। इसके बाद उनसे सवाल होगा कि तुम क्या चाहते हो? वह अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ परवरदिगार! हम प्यासे हैं, हमको पिला दीजिए। उनके इस कहने पर दोज़ख़ की तरफ़ इशारा करके उनसे कहा जाएगा कि वहां जाकर क्यों नहीं पी लेते। पस वे लोग उसमें गिर पड़ेंगे (मतलब यह है कि तमाम यहूदी व ईसाई दोज़ख़ में गिर पड़ेंगे)। यहां तक कि जब सिर्फ़ वही लोग रह जाएंगे, जो अल्लाह ही की इबादत करते थे (यानी मुसलमान) नेक भी और बद भी तो अल्लाह तआ़ला की उनके सामने एक तजल्ली होगी (और) अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे कि तुमको क्या इंतिज़ार है? हर जमाअ़त को उसके माबूद के पीछे जाने का हुक्म है! मोमिन अ़र्ज़ करेंगे कि (जाने वाले जा चुके, हमारा उनका क्या साथ, हमको अपने माबूद

1. रेत दूर से देखने में पानी मालूम होती है।

का इंतिज़ार है, जब तक हमारा माबूद न आए, हम यहीं रहेंगे। जब हमारा रब हमारे पास पहुंचेगा, हम पहचान लेंगे) ऐ परवरदिगार! हम दूसरी जमाअ़तों और गिरोहों से दुनिया में अलग रहे। जबकि उनके साथ रहने के बहुत ज़्यादा मुहताज थे और (बहुत ज़्यादा मुहताज होने की हालत में भी) उनका साथ न दिया (अब उनके साथ कैसे हो सकते हैं) अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमायेंगे कि मैं तुम्हारा रब हूं। मोमिन (चूंकि साक़ की तजल्ली से अल्लाह को पहचानने के ध्यान में होंगे। इसलिए अल्लाह की उस तजल्ली को, जो उस वक़्त होगी, ग़ैरु ल्लाह रब मानकर क्या मुश्रिक हो जाएं) हम अल्लाह के साथ किसी भी चीज़ को शरीक़ नहीं बनाते। दो या तीन बार ऐसा ही कहेंगे। उनके इस जवाब पर अल्लाह जल्ल ल शानुहू सवाल फ़रामाएंगे कि क्या तुम्हारे रब और तुम्हारे दर्मियान कोई निशानी (मुक़र्रर) है जिससे तुम अपने रब को पहचान लोगे? मोमिन अ़र्ज़ करेंगे जी हां। निशानी ज़रूर हैं! इसके बाद साक़[1] की तजल्ली होगी जिसे देख कर तमाम वे लोग जो ख़ुलूस के साथ अल्लाह को सज्दा करते थे, अल्लाह के हुक्म से सज्दों में गिर पड़ेंगे और जो लोग दिखावे या (मस्लहतों की वजह से दुनिया में मुश्किलों से) बचने के लिए (यानी निफ़ाक़ के साथ) सज्दा करते थे, अल्लाह उन सबकी कमर को तख़्ता बना देंगे (जिसकी वजह से सज्दा न कर सकेंगे)। जो भी कोई उनमें से जब भी सज्द का इरादा करेगा गुधी के बल गिर पड़ेगा। फिर मोमिनीन सज्दों से सिर उठाएंगे और अब जो अल्लाह को देखेंगे तो इसी तजल्ली में जो तजल्ली साक़ से पहले थी, अब अल्लाह फ़रमाएंगे कि मैं तुम्हारा रब हूँ तो मोमिनीन मान लेंगे कि हाँ आप हमारे रब हैं।

इसके बाद दोज़ख की पुश्त पर पुलसिरात क़ायम की जायेगी (उस पर

---

1. साक़ पिंडली को कहते हैं और अल्लाह जल्ल ल शानुहू जिस्म और जिस्म के अंगो से पाक-साफ़ है। फिर यहां पिंडली का क्या मतलब है? इसके बारे में उलमा किराम ने बताया कि यह कोई ख़ास मुनासबत में साक़ फ़रमाया है। जैसे क़ुरआन में **'यदुल्लाह'** (अल्लाह का हाथ) **'वज्हुल्लाह'** (अल्लाह का चेहरा) का लफ़्ज़ आया है। ये और ऐसी ही लफ़्ज़ों पर, बग़ैर समझे और अक़्ल लड़ाए और अल्लाह को जिस्म के होने से पाक समझते हुए बिला शर्त ईमान रखना लाज़िम है।

से गुज़रने का हुक्म होगा) और इस वक़्त (शफ़ाअ़त के जो अह्ल होंगे उनको) शफ़ाअ़त की इजाज़त दी जाएगी और *अल्लाहुमम सल्लिम सल्लिम* (ऐ अल्लाह! सलामत रख, सलामत रख) कहते होंगें। अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! पुलसिरात की क्या सिफ़त है? इर्शाद फ़रमाया वह चिकनी और फिसलने की जगह है इस में (दोज़ख़ से निकली हुई) उचकने वाली चीज़ें और संडासियाँ होगीं और बड़े-बड़े कांटे भी होंगे जिनकी सूरत के कांटे नज्द में होते हैं जिनको सदान कहा जाता है। पस मोमिनीन पुलसिरात पर (जल्दी-जल्दी) गुज़रेंगे (और ये गुज़रना आ़माल सालिहा की बक़द्र जल्दी होगा) कोई पल झपकने में और कोई बिजली की तरह और कोई हवा की तरह और कोई परिंदों की तरह और कोई बेहतरीन तेज रफ़्तार धोंड़ों की तरह और कोई ऊँटों की तरह (गुज़र जाएगा और दोज़ख़ के अंदर से जो संडासियाँ और काँटे निकले हुए होंगे वह खींच कर दोज़ख़ में गिरने की कोशिश करेंगे नतीजा यह होगी कि) बहुत से मोमिनीन सलामती के साथ नजात पा कर पार हो जाएंगे और बहुत से अह्ले ईमान (गुज़रते हुऐ) छिल-छिला कर छूट जाऐंगे और बहुत से दोज़ख की आग में ढकेल दिए जायेंगे यहाँ तक कि जब (नेक) ईमान वाले दोज़ख से बच जाएंगे तो मै उस ज़ात की क़सम खाकर कहता हुँ जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है कि तुम (यहाँ उस दुनिया में) अल्लाह से हक लेने के बारे में ऐसे मज़बूती के साथ बात करने वाले नहीं हो जैसा कि (दोज़ख़ से बच कर पुलसिरात पर हो जाने वाले मोमिनीन अपने इन भाईयों के लिए जो दोज़ख में (गिर चुके) होंगे। अल्लाह से मज़बूती के साथ सिफारिश करेंगे। दूसरी रिवायत में है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने उस मौक़ा पर यूँ फ़रमाया कि (दुनिया में) जो हक़ तुम्हारा किसी के जिम्मे मालुम हो जाए तो उस हक़ को हासिल करने के लिए जैसी सख़्ती से मुतालिबा करते हो उस रोज़ अल्लाह से जो ईमान वाले अपने दोज़खी भाईयों के लिए ज़िस ज़ोर से मुतालिबा करेंगे तुम्हारे दुन्यावी मुतालिबा से बहुत ज़ोरदार होगा जब कि मोमिनीन ये देख़ लेंगे कि हम नजात पा चुके। बारगाह ईलाही में अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ हामारे परवरदिगार ये लोग (जो दोज़ख़ में गुनाहों की वजह से गिर गये) हमारे साथ रोज़े रखते थे

और हमारे साथ नमाज़ पढ़ते थे और हज करते थे, (अब भी हमारे साथ उनको जन्नत में दाख़िल फ़रमा दीजिए) इर्शाद होगा कि तुम जिसे पहचानते हो, निकाल लो! चुनांचे (वे उनको निकालने के लिए रवाना होंगे और (उनके जिस्म दोज़ख़ की आग पर हराम कर दिए जाएंगे यानि दोज़ख़ की आग इन निकालने वालों को न जला सकेगी)। नतीजा यह होगा कि वे लोग दोज़ख़ से भारी तादाद में लोगों को निकालेंगे और इन दोज़ख़ियों में से किसी को आग ने आधी पिंडली तक और किसी को घुटने तक पकड़ा होगा।

फिर मोमिन खुदा के दरबार में अ़र्ज़ करेंगे कि हमारे रब! आपने जिन लोगों के निकालने के मुतअ़ल्लिक़ हुक्म दिया था, उनमें से अब कोई भी दोज़ख़ में बाक़ी नहीं रहा। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा कि जाओ दोज़ख़ में कोई ऐसा भी मिले कि जिसके दिल में दीनार[1] के बराबर भी भलाई हो, उसको भी निकाल लो। चुनांचे मोमिन अल्लाह के इस इर्शाद के बाद भारी तादाद में लोगों को निकालेंगे। फिर अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ रब! दोज़ख़ में हमने इनमें से कोई भी नहीं छोड़ा जिनके निकालने के बारे में आपने हुक्म फ़रमाया था। इसके बाद अल्लाह का इर्शाद होगा कि जाओ, जिसके दिल में आधे दीनार के बराबर भी भलाई देखो, उसको भी निकाल लो। चुनांचे इर्शाद के बाद मोमिन भारी तादाद में लोगों को दोज़ख़ से निकालेंगे। फिर अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ रब! हमने दोज़ख़ में उनमें से कोई भी नहीं छोड़ा जिनके निकालने के बारे में आप ने हुक्म फ़रमाया था। इसके बाद अल्लाह का इर्शाद होगा कि जाओ जिसके दिल में ज़र्रा बराबर भी भलाई देखो उसको भी निकाल लो। चुनांचे वे भारी तादाद में लोगों को निकालेंगे। फिर अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमने दोज़ख़ में (कोई ज़रा) ख़ैर (वाला) नहीं छोड़ा।

अब अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमाएंगे कि फ़रिश्तों ने शफ़ाअ़त कर ली और नबियों ने शफ़ाअ़त कर ली और ईमान वालों ने शफ़ाअ़त कर ली। अब बस अर्हमुर्राहिमीन (अल्लाह) ही बाक़ी है। अल्लाह जल्ल ल शानुहू यह फ़रमा कर दोज़ख़ में से एक मुट्ठी भरेंगे। पस उसमें से ऐसे लोगों को निकाल

1. दीनार सोने की अशर्फ़ी को कहते थे जो अ़रब में होती थी।

लेंगे जिन्होंने कभी कोई भलाई की ही नहीं थी (और ईमान ही की छिपी दौलत उनके पास थी। ये लोग जलकर कोयला हो चुके होंगे)। उनको अल्लाह जल्ल ल शानुहू एक नहर में डाल देंगे कि जन्नत के शुरू हिस्से में होगी जिसको 'नहरुल हयात' (ज़िंदगी की नहर) कहा जाता है। (नहर में पड़कर उनकी हालत बदल जाएगी)। पस ऐसे निकलेंगे जैसे बीज बहते पानी के घास-तिनकों पर (बहुत जल्द उगकर) निकल आता है। (फिर फ़रमाया कि) इस हाल में उस नहर से निकलेंगे कि जैसे मोती हैं। उनकी गरदनों पर निशानियां होंगी (जिनके ज़रिए दूसरे) जन्नती उनको पहचानेंगे (कि ये अल्लाह के आज़ाद किए हुए हैं जिनको अल्लाह ने जन्नत में बग़ैर किसी (नेक़) अ़मल के और बग़ैर किसी भलाई के, जो उन्होंने आगे भेजी हो, जन्नत में दाख़िल फ़रमाया।

फिर अल्लाह तआ़ला उनसे फ़रमाएंगे कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ। वहां जो नज़र पड़े, वह तुम्हारे लिए है। वे अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! आपने हमको वह अ़ता फ़रमाया है जो आपने दुनिया में से किसी को भी नहीं दिया। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे कि मेरे पास तुम्हारे लिए इससे भी अफ़ज़ल नेमत है। वे अ़र्ज़ करेंगे या रब्बना, इससे अफ़ज़ल कौन होगा? अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमाएंगे (कि इससे अफ़ज़ल) मेरी ख़ुशी है। सो मैं तुम पर कभी भी नाराज़ नहीं हूंगा।[1]

यह एक लंबी हदीस है जो अभी ख़त्म हुई इसमें बताया गया है कि साक़ की तजल्ली के बाद पुलसिरात क़ायम होगी। इससे यह भी समझ में आता है कि नूर की तक़सीम तजल्ली साक़ और पुलसिरात पार करने के दर्मियान होगी। क्योंकि पुलसिरात पार करने के लिए नूर तक़सीम किया जाएगा। लेकिन तर्तीब में हमने पूरी हदीस को एक ही जगह एक सिलसिले में रखने के लिए नूर की तक़सीम को तजल्ली-ए-साक़ से पहले ब्यान कर दिया है।

इस हदीस मुबारक से पुलसिरात और उस पर से गुज़रने वालों का तफ़सीली हाल मालूम हुआ। दूसरी रिवायतों में और ज़्यादा तफ़सील आयी

1. मिश्कात शरीफ़, तर्ग़ीब व तर्हीब (बुख़ारी व मुस्लिम)

है। चुनांचे एक हदीस में है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि पैग़म्बरों में से सबसे अव्वल मैं अपनी उम्मत के साथ पुलसिरात से गुज़रूंगा और उस दिन पैग़म्बरों के सिवा कोई बोलता न होगा और पैग़म्बरों का बोलना उस दिन *'अल्लाहुम म सल्लिम सल्लिम'*[1] होगा।[2] इसी को बार-बार कहेंगे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ؓ ने फ़रमाया कि दोज़ख़ पर पुलसिरात रखी जाएगी, जो तेज़ की हुई तलवार की तरह होगी।[3]

मुस्लिम शरीफ़ की एक हदीस में है कि (पुलसिरात पर) लोगों के आमाल लेकर चलेंगे जैसे जिसके अ़मल होंगे, उसी अन्दाज़े से तेज़ और सुस्त रफ़्तार होगा और सुस्त रफ़्तारों की हालत यहां तक पहुंच जाएगी कि कुछ गुज़रने वाले इस हाल में होंगे कि घिसटते हुए चलेंगे।

एक रिवायत में है कि दोज़ख़ में से संडासियां निकली हुई होंगी, उनमें से एक-एक की लम्बाई व चौड़ाई और उनके पकड़ गिराने का यह हाल होगा कि एक ही के बार में क़बीला रबीआ़ और मुज़र[4] के लोगों से भी ज़्यादा पकड़कर दोज़ख़ में डाले जाएंगे। —तर्ग़ीब व तर्हीब

प्यारे नबी ﷺ जन्नत खुलवाएंगे

आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन तमाम पैग़म्बरों से ज़्यादा मेरे तरीक़े पर चलने वाले मौजूद होंगे और मैं सबसे पहले जन्नत का दरवाज़ा (खुलवाने के लिए) खटखटाऊंगा।[5] यह भी इर्शाद फ़रमाया कि मैं क़ियामत के दिन जन्नत के दरवाज़े पर आकर खोलने के लिए कहूंगा। जन्नत का दारोग़ा सवाल करेगा कि आप कौन हैं? मैं जवाब दूंगा कि मुहम्मद हूं! यह सुनकर वह कहेगा कि मुझे यही हुक्म हुआ है कि आपके लिए खोलूं (और) आपसे पहले किसी के लिए न खोलूं।[6] यह भी

1. ऐ अल्लाह! सलामत रख, सलामत रख
2. बुख़ारी व मुस्लिम
3. तर्ग़ीब
4. अरब के दो क़बीलों के नाम
5. मुस्लिम शरीफ़
6. मुस्लिम शरीफ़

इर्शाद फ़रमाया कि मैं सबसे पहले जन्नत के (दरवाज़े के) हल्क़ों को हिलाऊंगा। पस अल्लाह मेरे लिए जन्नत खोलकर मुझे दाख़िल फ़रमा देंगे और मेरे साथ फ़क़ीर मोमिन होंगे और यह मैं फख़्र के साथ नहीं ब्यान कर रहा हूं (फिर फ़रमाया कि) मैं अल्लाह के नज़दीक तमाम अगलों -पिछलों से ज़्यादा इज़्ज़त वाला हूं।

—तिर्मिज़ी शरीफ़

जन्नत व दोज़ख़ में गिरोह-गिरोह जायेंगे

दोज़ख़ियों पर मलामत और जन्नतियों का स्वागत। दोज़ख़ के दरवाज़े जेल की तरह पहले से बन्द होंगे और जन्नत के दरवाज़े पहले से खुले होंगे।

तमाम काफ़िरों को धक्के देकर बड़ी ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ दोज़ख़ की तरफ़ हांका जाएगा और चूंकि कुफ़्र की क़िस्में और दर्जे बहुत हैं इसिलए हर क़िस्म और हर दर्जे के काफ़िरों का गिरोह अलग-अलग कर दिया जाएगा। अल्लाह का इर्शाद है :

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ط

व सीक़ल्लज़ी न क फ़ रू इलां जहन्न म ज़ु म रा।

'और जो काफ़िर हैं, वह जन्नत की तरफ़ गिरोह-गिरोह बनाकर हांके जाएंगे।'

जब वे दोज़ख़ के दरवाज़ों पर पहुचेंगे तो दरवाज़े खोलकर उसमें दाख़िल कर दिए जाएंगे और दोज़ख़ के दरवाज़ों पर जो फ़रिश्ते मुक़र्रर होंगे, वह मलामत करने के लिए सवाल करेंगे क्या तुम्हारे पास रसूल नहीं आए थे?

चुनांचे इर्शाद फ़रमाया है :

حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ
رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ
هٰذَا قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ، قِيْلَ
ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ

हत्ता इज़ा जाऊहा फ़ुतिहत अब्वाबुहा व क़ा ल लहुम ख़ ज़ नतुहा अलम यअ्तिकुम रुसुलुम मिन्कुम यत्लू न अलैकुम आयाति रब्बिकुम व युन्ज़िरू नकुम लिक़ा अ यौमिकुम हाज़ा। क़ालू बला, वला किन हक़्क़त कलिमतुल अज़ाबि अ़लल काफ़िरून। क़ीलद् ख़ुलू अब्वा ब जहन्न न म ख़ालिदीन फ़ीहा। फ़ बिअ्‌ स मस्वल मु त कब्बिरीन।

'यहां तक कि दोज़ख़ के पास पहुंचेंगे तो उसके दरवाज़े खोल दिए जाएंगे और उनसे दोज़ख़ के निगरां (देख-भाल करने वाले) कहेंगे क्या तुम्हारे पास तुम में से पैग़म्बर नहीं आये थे जो तुमको तुम्हारे रब की आयतें पढ़कर सुनाते थे और तुमको आज के दिन पेश आने से डराया करते थे? दोज़ख़ी जवाब देंगे कि हां (पैग़म्बर आये थे) लेकिन अ़ज़ाब का वादा काफ़िरों पर पूरा होकर रहा। (फिर उनसे) कहा जायेगा कि जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ (और) उसमें हमेशा के लिए रहो ग़रज़ यह कि घमंडियों का बुरा ठिकाना होगा।'

जन्नत वालों के बारे में फ़रमाया :

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا

व सीक़ल्लज़ी न त्त क़ौ रब्बहुम इलल जन्नति ज़ु म रा०

'और जो लोग अपने रब से डरते थे। गिरोह-गिरोह होकर जन्नत की तरफ़ रवाना किए जाएंगे।'

ईमान व तक़्वा के मर्तबे और दर्जे कम और ज़्यादा हैं। हर दर्जे और मर्तबे के मोमिनों की जमाअ़त अलग-अलग होगी और उन सब जमाअ़तों को एज़ाज़ व इकराम के साथ जन्नत की तरफ़ रवाना किया जायेगा। उनके स्वागत के लिए जन्नत के दरवाज़े पहले से खुले होंगे और दरवाज़ों पर पहुंचते ही जन्नत के निगरां उनको सलामती और खुश ज़िंदगी गुज़ारते रहने की खुशख़बरी सुनायेंगे। चुनांचे इर्शाद है :

حَتّٰى اِذَا جَاءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خَالِدِيْنَ○

हत्ता इज़ा जाऊहा व फ़ुतिहत अब्वाबुहा व का ल लहुम ख़ ज़ न तुहा सलामुन अ़लैकुम तिब्तुम फ़दख़ुलूहा ख़ालिदीन।

'यहां तक कि जन्नत के पास पहुंचेंगे और उसके दरवाज़े खुले होंगे और उसके निगरां कहेंगे कि तुम पर सलाम हो। तुम मज़े में रहे सो जन्नत में हमेशा रहने के लिए दाख़िल हो जाओ।'

दोज़ख़ियों की आपस में एक-दूसरे पर लानत

दोज़ख़ी आपस में यहां बड़ी मुहब्बतें रखते थे और एक दूसरे के उकसाने और फुसलाने पर कुफ़्र व शिर्क के काम किया करते थे, लेकिन जब सब अपने बुरे किरदार (चरित्र) का नतीजा दोज़ख़ में जाने की शक्ल में देखेंगे तो एक दूसरे पर लानत की बौछार करेंगे।

सूरः अअ़्राफ़ में इर्शाद है:

كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا حَتّٰى اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا قَالَتْ اُخْرٰهُمْ لِاُوْلٰهُمْ رَبَّنَا هٰؤُلَاءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ

कुल्लमा द ख़ लत उम्मतुल्ल अ़ नत उख़्त हा हत्ता इज़द्द र कू फ़ीहा जमीअ़ा। क़ालत उख़्राहुम लि उलाहुम रब्बना हा उलाइ अज़ल्लूना फ़ आतिहिम अ़ज़ाबन ज़िअ़्फ़म मिनन्नार।

'जिस वक़्त भी कोई जमाअ़त दोज़ख़ में दाख़िल होगी अपनी जैसी दूसरी जमाअ़त को लानत करेगी। यहां तक कि जब सब उसमें जमा हो जाएंगे तो पिछले लोग पहले लोगों के बारे में कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमको इन लोगों ने गुमराह किया था। सो इनको दोज़ख़ का अ़ज़ाब दो गुना दीजिए।'

दोज़ख़ियों को अनोखी हैरत

दुनिया में काफ़िर ईमान वालों के मज़ाक़ बनाते थे और उनका ठट्ठा करते थे। जब दोज़ख़ में पहुंचेंगे तो अल्लाह के इन क़रीबी लोगों को अपने साथ न देखकर हैरत में पड़ जाएंगे जैसा कि सूरः साद में फ़रमाया :

وَقَالُوْا مَالَنَا لَانَرٰی رِجَالاً كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِنَ الْاَشْرَارِ، اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ○

व क़ालू मा लना ला नरा रिजालन कुन्ना नउद्दुहुम मिनल अश्रार। अत्तख़ज़्नाहुम सिख़रीय्यन अम ज़ाग़त अन्हुमुल अब्सार।

'और ये दोज़ख़ी कहेंगे कि क्या बात है। वे लोग हमें दिखायी नहीं देते जिनको हम बुरे लोगों में गिना करते थे, क्या हमने उन लोगों की ग़लती से हँसी कर रखी थी या उनके देखने से आंखें चकरा रही हैं।

यानी जबकि वे लोग यहां यहां नज़र नहीं आते तो उसके बारे में यही कहा जा सकता है हम उनको बुरा समझने और शरारत वाले गिनने और उनका मज़ाक बनाने में ग़लती पर थे और वे हक़ीक़त में अच्छे लोग थे जो आज यहां नहीं हैं या यह है कि वे हैं यहीं, मगर हमारी आंखें चूक गयी हैं। वे लोग देखने में नहीं आ रहे हैं।

अपने मानने वालों के सामने शैतान का सफ़ाई पेश करना

दुनिया में शैतान ने अपने गिरोह के साथ इंसानों को ख़ूब बहकाया और हक़ के रास्ते से हटाकर कुफ़्र व शिर्क में फांसा। मगर क़ियामत के दिन इंसानों को ही इल्ज़ाम देगा कि तुमने मेरी बात क्यों मानी। मेरा तुम पर क्या ज़ोर था। चुनांचे अल्लाह का इर्शाद है :

وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّآ اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ۝ (سورۂ ابراھیم)

व क़ालश्शैतानु लम्मा क़ुज़ियल अम्रु इन्नल्ला ह व अ़ द कुम वअ़दल हक़्क़ि व व अ़त्तुकुम फ़अख़्लफ़्तुकुम व मा का न लि य अ़लैकुम मिनसुल्तानिन इल्ला अन् दअ़ौतुकुम फ़स्तजब्तुम ली फ़ ला तलूमूनी व लूमू अन्फ़ुसकुम मा अना बिमुस्रिख़िकुम वमा अन्तुम बिमुस्रिख़ीय्य इन्नी कफ़र्तु बिमा अशरक्तुमूनि मिन क़ब्ल इन्नज़्ज़ालिमी न लहुम अ़ज़ाबुन अ़लीम। —*सूरः इब्राहीम*

'और जब फ़ैसले हो चुकेंगे, शैतान कहेगा कि (मुझे बुरा कहना नाहक़ है) क्योंकि बिला शुब्हा अल्लाह ने तुमसे सच्चे वादे किये थे, और मैंने (भी) तुमसे वायदे किये थे। सो मैंने जो वादे के ख़िलाफ़ किये थे और तुम पर मेरा कुछ ज़ोर इससे ज़्यादा तो चलता न था कि मैंने तुमको दावत दी। सो तुमने (खुद ही) मेरा कहना मान लिया। सो तुम मुझ पर मलामत न करो और अपने को मलामत करो। न मैं तुम्हारा मददगार हूं न तुम मेरे। मैं तुम्हारे इस फ़ेल (काम) से खुद बेज़ार हूं कि तुमने इससे पहले (दुनिया में) मुझे खुदा का शरीक क़रार दिया। यक़ीनन ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।'

शैतान के कहने का मतलब यह है कि मैंने तुमको बहकाया। सच्चे रास्ते से हटाने की कोशिश की। यह तो मेरा काम था। तुमने मेरी बात क्यों मानी? तुम ख़ुद मुज्रिम हो? पैग़म्बरों की दावत छोड़कर जो मुअ़्जिज़ा, हुज्जत और दलील के ज़रिए होती थी। मेरे झूठे और बातिल बुलावे पर तुमने क्यों कान धरा। कोई ज़बरदस्ती हाथ पकड़ के तो मैंने तुमसे कुफ़्र व शिर्क के काम कराये नहीं। मुझे बुरा कहने से क्या बनेगा। ख़ुद अपने नफ़्सों को

मलामत करो। हम आपस में एक दूसरे की मदद नहीं कर सकते। अब तो अज़ाब चखना ही है। दुनिया में जो तुमने मुझे ख़ुदा का शरीक बनाया मैं उससे बेज़ारी ज़ाहिर करता हूं।

शैतान के कहने पर चलने वाले की हसरत व अफ़सोस का जो उस वक़्त हाल होगा, ज़ाहिर है। *'अ आज़नल्लाहु मिन तस्वीलिही व शर्रिहि'*

जन्नत में सबसे पहले उम्मते मुहम्मदिया दाख़िल होगी और सबसे ज़्यादा होगी

मुस्लिम शरीफ़ में है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि हम दुनिया में आख़िर में आये और क़ियामत के दिन दूसरी मख़्लूक़ से पहले हमारे फ़ैसले होंगे और यह भी फ़रमाया कि हम (यहां) आख़िर में आये (और) क़ियामत के दिन पहले होंगे और सबसे पहले जन्नत में हम दाख़िल होंगे। —मिश्कात शरीफ़, बाबुल जुमुअः

एक रिवायत में है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि जन्नतियों की 120 सफ़ें होंगी (यानी क़ियामत के दिन मैदान में) जिनमें 80 इस उम्मत की और 40 सब उम्मतों की मिलाकर होंगी। —मिश्कात शरीफ़

मालदार हिसाब की वजह से जन्नत में जाने से अटके रहेंगे

हज़रत अबू हुरैरः ؓ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि तंगदस्त लोग जन्नत में मालदारों से पांच सौ वर्ष पहले दाख़िल होंगे।[1]। और यह भी इर्शाद फ़रमाया कि मैंने जन्नत के दरवाज़े पर खड़े होकर देखा तो उसमें जो दाख़िल हो चुके थे ज़्यादा तर मिस्कीन लोग थे और माल वाले (हिसाब देने के लिए) अटके हुए थे। मगर दोज़ख़ियों को दोज़ख़ में पहुंचाने का हुक्म हो चुका था और मैंने दोज़ख़ के दरवाज़े पर खड़े होकर देखा, तो उसमें अकसर औरतें थीं। —बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़

इस मुबारक हदीस में आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने क़ियामत के दिन

1. तिर्मिज़ी शरीफ़

का एक मंज़र फ़रमाया है जो आपको दिखा दिया गया था। इस हदीस पाक से जहां यह भी मालूम हुआ कि मालदारों को जन्नत में जाने में देर लगेगी। वहां यह भी मालूम हुआ कि तंगदस्ती और तंगी वाले पांच सौ वर्ष मालदारों से पहले जन्नत में जाएंगे। उस दिन तंगी की क़ीमत मालूम होगी। मगर यह भी नहीं भूलना चाहिए कि तंगदस्ती ख़ुद से जन्नत में ले जाने वाली चीज़ नहीं है। इसके साथ नेक अ़मल भी होने चाहिएं। बदअ़मल तंगदस्त यह न समझें कि हम ज़रूर ही जन्नती हैं और हमारी बड़ी बड़ाई है। बड़ाई आख़िरत में नेक आ़माल से होगी। हां, जिसके नेक अ़मल जन्नत के लायक़ होंगे, वह तंगदस्ती की वजह से मालदार से पहले जन्नत में चला जाएगा बहुत से लोग तंगदस्त भी हैं और बदअ़मल भी, नमाज़-रोज़े से गाफ़िल हैं। गुनाहों में लिथड़े हुए हैं। ऐसे लोग सख़्त नुक़्सान में हैं और दोनों जगह की बदनसीबी के लिए दुनिया गुज़ार रहे हैं। आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि बदनसीबों का बद-नसीब वह है जो तंगदस्त भी रहा और आख़िरत का अ़ज़ाब भी भुगता। —तर्ग़ीब

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्रू ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि (लोग) क़ियामत के दिन जमा होंगे। इसके बाद पुकार होगी कि इस उम्मत के तंगदस्त कहां हैं? फिर उनसे सवाल होगा कि तुम ने क्या किया? (हिसाब दो) वे अ़र्ज़ करेंगे कि आप ने हमको तंगदस्ती देकर जांच में डाला। सो हमने सब्र किया (और आप की ख़ुशी पर ख़ुश रहे) और आपने माल और हुकूमत हमारे सिवा दूसरों को दे दिया। अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमाएंगे कि तुमने सच कहा। इसके बाद (और लोगों से पहले) जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे। हिसाब की सख़्ती मालदारों और हुकूमत वालों पर रहेगी। सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! मोमिन उस दिन कहां होंगे? नबी करीम ﷺ का इर्शाद हुआ कि उनके लिए नूर की कुर्सियां रख दी जाएंगी और उन पर बादलों का साया कर दिया जाएगा। (पहाड़ों से भी बड़ा) दिन ईमान वालों के लिए दिन के एक छोटे-से हिस्से से भी कम होगा। —तर्ग़ीब अ़नितबरानी इब्ने हब्बान

दोज़ख़ में अकसर औरतें और मालदार जाएंगे

हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि मैंने जन्नत में झांका तो देखा, उसमें अकसर तंगदस्त हैं और मैंने दोज़ख़ में झांका तो देखा कि उसमें अकसर माल वाले और औरतें हैं। —तर्ग़ीब

एक रिवायत में है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि मैं जन्नत में दाख़िल हुआ तो ऊंचे मर्तबे वाले जन्नती, तंगदस्त मुहाजिर और मोमिनों के नाबालिग़ बच्चे थे और जन्नत में सबसे कम मालदारों और औरतों की तादाद थी। उस वक़्त मुझे बताया गया कि मालदारों का हिसाब दरवाज़े पर हो रहा है और उनको पाक व साफ़ किया जा रहा है और औरतों को (दुनिया में) सोने और रेशम ने (ख़ुदा और ख़ुदा के दीन से) ग़ाफ़िल रखा। इसलिए यहां उनकी तादाद कम है। —तर्ग़ीब

माल बड़े वबाल की चीज़ है। उसको ध्यान करके हलाल के ज़रिए कमाया और फिर उसमें से अल्लाह के और अल्लाह के बंदों के हुक़ूक़ अदा करना और गुनाहों में न ख़र्च करना बड़ा कठिन काम है। इसमें अकसर लोग फ़ेल हो जाते हैं और माल होने पर अपनी ख़्वाहिश या औलाद व बीवी की फ़रमाइश पर या दुनिया की रस्म व रिवाज से दबकर गुनाह के कामों में रुपये को लगाते हैं। ज़कात का सही हिसाब करके अकसर मालदार नहीं देते, हज़ारों आदमी, जिन पर हज फ़र्ज़ हो चुका था, बग़ैर हज किये मर जाते हैं। और मालदारों के लिए गुनाहों के मौक़े बहुत हैं जिनमें माल लुटाते और लगाते हैं। दोज़ख़ में मालदार ज़्यादा हों और हिसाब की वजह से अटके रहें, इसमें कोई तअ़ज्जुब की जगह नहीं है।

दोज़ख़ में औरतों की तादाद भी बहुत भारी होगी। उनके दोज़ख़ में जाने की वजह अभी-अभी हदीस शरीफ़ से यह मालूम हुई कि दुनिया में रेशम और सोने के फेर में रहकर अल्लाह तआ़ला से ग़ाफ़िल रही। औरतों को कपड़े और ज़ेवर का लालच जो होता है, इसको कौन नहीं जानता? कपड़े और ज़ेवर के लिए शौहर को हराम कमाने, रिश्वत लेने, क़र्ज़-उधार करने पर

मजबूर करती हैं और दिखावे कि लिए पहनती हैं। एक महिफ़ल में एक जोड़ा पहनकर गयी थीं, तो अब दूसरी महिफ़ल में उसी जोड़े को पहनकर जाने में शर्म समझती हैं। ज़ेवर पहनकर कहीं गर्मी के बहाने गला खोलकर दिखाती हैं, कहीं ज़ेवर की डिज़ाइनों पर बहस चलाकर अपने ज़ेवर के अनोखा होने की बड़ाई हांकती हैं। दिखावा बहुत बड़ा गुनाह है। इर्शाद फ़रमाया नबी अकरम ﷺ ने, जो भी औरत दिखावे कि लिए सोने के ज़ेवर पहनेगी, अज़ाब पाएगी।

—मिश्कात शरीफ़

जो ज़ेवर हराम कमाई का है, उसका अज़ाब की वजह होना ज़ाहिर है लेकिन जो हलाल कमाई से बनता है, उसकी ज़कात न औरतें अदा करती हैं, न उनके शौहर अदा करते हैं। जिस माल की ज़कात न दी जाएगी, वह आख़िरत में वबाल और अज़ाब बनेगा।

बुख़ारी व मुस्लिम की एक रिवायत में है कि औरतों ने सवाल किया कि या रसूलुल्लाह! औरतें दोज़ख़ में ज़्यादा जाने वाली क्यों होंगीं? इर्शाद फ़रमाया, (इसिलए कि) तुम लानत (फिटकार) भेजने का मश्ग़ला (काम) बहुत रखती हो और शौहर की नाशुक्री करती हो। —मिश्कात शरीफ़

जन्नतियों को दोज़ख़ और दोज़ख़ियों को जन्नत दिखायी जाएगी

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ ने रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि जन्नत में जो कोई दाख़िल होगा उसका दोज़ख़ में मुक़र्रर किया हुआ वह ठिकाना ज़रूर उसको दिखला दिया जाएगा, जो बुरे अ़मल करने पर उसको मिलता ताकि ज़्यादा दिया जाएगा। जो बुरे अ़मल करने पर उस को मिलता, ताकि ज़्यादा शुक्र अदा करे और जो कोई दोज़ख़ में दाख़िल होगा, उसको जन्नत में मुक़र्रर किया हुआ वह ठिकाना ज़रूर उसको दिखला दिया जाएगा जो अच्छे अ़मल करने पर मिलता ताकि उसको ज़्यादा हसरत हो।

जन्नत और दोज़ख़ दोनों भर दी जाएंगी

सूरः क़ाफ़ में फ़रमाया :

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ۝

यौ म नक़ूलु लिजहन्न न म हलिम्तलअ्ति व तक़ूलु हल मिम मज़ीद।

'जिस दिन कि हम दोज़ख़ से कहेंगे कि क्या तू भर गयी? वह कहेगी क्या कुछ और भी है?'

हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि दोज़ख़ में दोज़ख़ी डाले जाते रहेंगे और वह कहती रहेगी कि क्या और भी है? यहां तक कि अल्लाह उसमें अपना क़दम रख देंगे जिसकी वजह से[1] सिमट जाएगी और कहेगी आपकी इज़्ज़त की क़सम, बस! बस!! और जन्नत में भी फ़ाज़िल जगह बाक़ी ही रह जाएगी। यहां तक कि अल्लाह तआला नयी मख़्लूक़ पैदा फ़रमाकर उस फ़ाज़िल जगह में बसा देंगे।

—बुख़ारी व मुस्लिम

दूसरी हदीस में है कि अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने जन्नत व दोज़ख़ दोनों को भर देने का ज़िम्मा लिया है।[2] दोज़ख़ ख़ाली रह जाएगी तो नयी मख़्लूक़ पैदा फ़रमाकर उसे भरेंगे नहीं। क्योंकि वे बेक़सूर[3] होंगे और जन्नत में जो जगह बच जाएगी, उसको नयी मख़्लूक़ पैदा फ़रमाकर भर देंगे। हमारे एक बुज़ुर्ग से किसी ने कहा कि वही मज़े में रहे जो पैदा होते ही जन्नत में होंगे। उन्होंने फ़रमाया कि उनको क्या ख़ाक मज़ा आएगा। न दुनिया में आये, न दुख-दर्द सहने की मुसीबत पड़ी। आराम का मज़ा उसी को ख़ूब महसूस होता है जिसे दुख के बाद नसीब हुआ हो।

दोज़ख़ में जाने वालों का अन्दाज़ा

हज़रत रसूले करीम ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला हज़रत आदम ؑ को ख़िताब करके फ़रमाएंगे, 'ऐ आदम!' वह अर्ज़ करेंगे :

1. अल्लाह तआला हाथ या क़दम तमाम अंग और देहत्त्व से पाक हैं। क़ुरआन व हदीस में जहां ऐसा ज़िक्र आए, उसके मुताबिक़ यही अक़ीदा रखें कि इसका जो मतलब अल्लाह के नज़दीक है, वही हमारे नज़दीक है।
2. मिश्कात शरीफ़
3. मिश्कात

لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ كُلُّهُ فِيْ يَدَيْكَ

लब्बैक व सअ्दैक वल ख़ैरु कुल्लुहू फ़ी यदैक।

'मैं हाज़िर हूं और हुक्म का ताबेअ् हूं और सारी बेहतरी आप ही के हाथ में है।'

अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमाएंगे, (अपनी औलाद में से) दोज़ख़ी निकाल दो। वह अ़र्ज़ करेंगे, दोज़ख़ी कितने हैं? इर्शाद होगा कि हर हज़ार में 999 है। (यह सुनकर आदम ﷺ की औलाद को सख़्त परेशानी होगी और रंज व ग़म की वजह से) उस वक़्त बच्चे बूढ़े हो जाएंगे और हामिला औरतों का हमल गिर जाएगा और लोग होश खो बैठेंगे। जबकि हक़ीक़त में बेहोश न होंगे, लेकिन अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त होगा (जिसकी वजह से होश खो बैठेंगे) यह सुनकर हज़रात सहाबा किराम ﷺ ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! वह एक जन्नती हममें से कौन होगा? आप ﷺ ने फ़रमाया कि (घबराओ नहीं) ख़ुश हो जाओ, क्योंकि यह तादाद इस तरह है कि एक तुम में से है और हज़ार याजूज माजूज हैं। —मिश्कात

मतलब यह है कि याजूज-माजूज की तादाद बहुत ही ज़्यादा है कि अगर तुम में और उनमें मुक़ाबला हो तो तुममें से एक शख़्स के मुक़ाबले में याजूज-माजूज एक हज़ार आएंगे और चूंकि वे भी आदम ﷺ की नस्ल से हैं, उनको मिलाकर हर हज़ार में 999 दोज़ख़ में जाएंगे। वे ज़मीन में बिगाड़ पैदा करने वाले और ख़ुदा का इन्कार करने वाले हैं।

क़ियामत के दिन की लंबाई

क़ियामत का दिन बहुत लंबा होगा। हदीस शरीफ़ में इसकी लंबाई 50,000 वर्ष बतायी गयी है।[1] यानी पहली बार सूर फूंकने के वक़्त से लेकर बहिश्तयों के बहिश्त में जाने और दोज़ख़ियों के दोज़ख़ में क़रार पकड़ने तक पचास हज़ार वर्ष की मुद्दत होगी। इतना बड़ा दिन मुश्रिकों, काफ़िरों और

1. मिश्कात शरीफ़ 'किताबुज़्ज़कात' पेज 156-157

मुनाफ़िक़ों के लिए बड़ा सख़्त होगा। ईमान वाले बंदों के लिए अल्लाह तआ़ला आसानी फ़रमा देंगे। चुनांचे हदीस शरीफ़ में है कि आंहज़रत ﷺ ने उस दिन के बारे में सवाल किया गया जिसकी लंबाई पचास हज़ार वर्ष की होगी कि उस दिन की लंबाई का क्या ठिकाना है (भला वह कैसे कटेगा?)

आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़सम उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, बिला शुब्हा वह दिन मोमिन पर इतना आसान कर दिया जाएगा कि फ़र्ज़ नमाज़ जो दुनिया में पढ़ा करता था, उससे भी हल्का होगा।[1] खट से गुज़र भी जाएगा और हौल व मुसीबत होने की वजह से परेशानी भी न होगी।

मौत की मौत

दोज़ख़ में हमेशा के लिए काफ़िर और मुश्रिक मुनाफ़िक़ ही रहेंगे और उनको उसमें कभी मौत न आयेगी, न अ़ज़ाब हल्का किया जाएगा। जैसा कि सूरः फ़ातिर में इर्शाद है :

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ
عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا كَذٰلِكَ نَجْزِىْ كُلَّ كَفُوْرٍ ○

वल्लज़ी न क फ़रू लहुम नारु जहन्न म ला युक़्ज़ा
अ़लैहिम फ़ यमूतू व ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुम मिन अ़ज़ाबिहा।
कज़ालि क नज्ज़ी कुल ल कफ़ूर।

'और जो लोग काफ़िर हैं, उनके लिए दोज़ख़ की आग है न तो उनको क़ज़ा आयेगी कि मर ही जाएं और न दोज़ख़ का अ़ज़ाब ही उनसे हल्का किया जाएगा। हम हर काफ़िर को ऐसी ही सज़ा देते हैं।' –मिश्कात शरीफ़

गुनाहगार मुसलमान जो दोज़ख़ में जाएंगे। सज़ा भुगतने के बाद जन्नत में दाख़िल कर दिए जाएंगे। जो जन्नत में दाख़िल होगा, उसमें हमेशा रहेगा। जन्नत में किसी को मौत न आएगी। न उससे निकाले जाएंगे, न निकलना चाहेंगे।

1. मिश्कात शरीफ़

خَالِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ○

ख़ालिदी न फ़ीहा ला यब्ग़ू न अन्हा हि व ला।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि जब (सारे) जन्नती जन्नत में और (सारे) दोज़ख़ी दोज़ख़ में पहुंच चुकेंगे तो मौत हाज़िर की जाएगी, यहां तक कि जन्नत और दोज़ख़ के दर्मियान लाने के बाद ज़बह कर दी जाएगी। फिर एक पुकारने वाला ज़ोर से पुकारेगा कि ऐ जन्नतियो! (अब) मौत नहीं और ऐ दोज़ख़ियो! (अब) मौत नहीं! इस एलान की वजह से जन्नतियों की ख़ुशी बढ़ जाएगी और दोज़ख़ियों के रंज पर रंज की बढ़ोत्तरी हो जाएगी। —मिश्कात शरीफ़ (बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने (सूरः मरयम की आयत) '**व अन्ज़िरहुम यौमल हसरति**' पढ़ी (और इसके बाद हसरत की तफ़सीर में) फ़रमाया कि मौत (जिस्म व शक्ल देकर) लायी जाएगी। गोया कि वह शक्ल व सूरत में सफ़ेद मेंढा होगी जिसमें काले धब्बे भी होंगे और वह जन्नत और दोज़ख़ के दर्मियान वाली दीवार पर खड़ी की जाएगी। फिर जन्नत वालों को आवाज़ दी जाएगी कि ऐ दोज़ख़ वालो! यह सुनकर वे (भी) नज़र उठाकर देखेंगे। इसके बाद उन (तमाम जन्नतियों और दोज़ख़ियों) से सवाल होगा कि क्या तुम इसको पहचानते हो? वे सब जवाब देंगे कि हां (पहचानते हैं) यह मौत है। इस के बाद (इन सबके सामने यह एलान करने के लिए कि अब मौत न आएगी) मौत को ज़बह कर दिया जाएगा (उस वक़्त जन्नत वालों की ख़ुशी और दोज़ख़ वालों का रंज बहुत ज़्यादा होगा)। पस अगर जन्नत वालों के लिए हमेशा ज़िन्दा और बाक़ी रहने का फ़ैसला अल्लाह की तरफ़ से न हो चुका होता तो उस वक़्त की ख़ुशी में मर जाते और अगर दोज़ख़ वालों के लिए हमेशा के लिए मौत न आने और दोज़ख़ में हमेशा पड़े ही रहने का फ़ैसला अल्लाह की तरफ़ से न हो चुका होता तो उस वक़्त के रंज से मर जाते। —तिर्मिज़ी शरीफ़

आराफ़ वाले

जन्नत वालों और दोज़ख़ वालों के दर्मियान एक आड़ यानी एक दीवार होगी। इस दीवार का या इस दीवार के ऊपरी हिस्से का नाम आराफ़ है। आराफ़ पर थोड़ी-सी मुद्दत के लिए उन मुसलमानों को रखा जाएगा, जिनकी नेकियां और बुराईयां वज़न में बराबर उतरेंगी। आराफ़ के ऊपर से ये लोग जन्नती और दोज़ख़ी दोनों को देखते और पहचानते होंगे और दोनों फ़रीक़ से बातचीत करेंगे जिसकी तफ़सील सूरः आराफ़ में आयी है। चुनांचे अल्लाह का इर्शाद है :

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ وَّعَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّا بِسِيْمَاهُمْ
وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ

व बै न हुमा हिजाबुंव्व अ़लल आराफ़ि रिजालैं यअ़रिफ़ू न कुल्लम बिसीमाहुम व नादौ अस्हाबल जन्नति अन् सलामुन अ़लैकुम लम् यद् ख़ुलूहा व हुम यत्मऊन।

'और इन दोनों (फ़रीक़) जन्नतियों और दोज़ख़ियों के दर्मियान एक आड़ (यानी दीवार) होगी और उस दीवार या उसके ऊपरी हिस्से का नाम आराफ़ है। उस पर से जन्नती और दोज़ख़ी सब नज़र आएंगे। आराफ़ के ऊपर बहुत से आदमी होंगे वे (जन्नतियों और दोज़ख़ियों में से) हर एक को उनकी निशानी से पहचानते होंगे और ये (आराफ़ वाली) जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे कि **'अस्सलामु अ़लैकुम'**। अभी ये आराफ़ वाले जन्नत में दाख़िल न हुए होंगे और उसके उम्मीदवार होंगे।[1]

आगे फ़रमाया :

وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ ۝ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا
مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝

1. बाद में उनकी उम्मीद पूरी कर दी जाएगी

व इज़ा सुरिफ़त अब्सारुहुम तिल्क़ा अ अस्हाबिन्नार। क़ालू रब्बना ला तज्अ़ल्ना मअ़ल क़ौमिज़्ज़ालिमीन।

'और जब इन (आराफ़) वालों की निगाहें दोज़ख़ वालों की तरफ़ जा पड़ेंगी, तो उस वक़्त (हौल खाकर) कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हम को इन ज़ालिम-लोगों के साथ अ़ज़ाब में शामिल न कीजिए।'

फिर आराफ़ वालों का दोज़ख़ वालों को मलामत करने का ज़िक्र फ़रमाया :

وَنَادٰى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ قَالُوْا مَآ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ

व नादा अस्हाबुल आराफ़ि रिजालैंयअ़्रिफ़ूनहुम बिसीमाहुम क़ालू मा अग़्ना अन्कुम जमउ़कुम वमा कुन्तुम तस्तक्बिरून। अ हाउला-इल्लज़ी न अक़सम्तुम ला यनालुहुमुल्लाहु बिरहमः उद्ख़ुलुल् जन्न त ला ख़ौफ़ुन अ़लैकुम व ला अन्तुम तहज़नून।

'और आराफ़ वाले (दोज़ख़ियों में से) बहुत-से आदमियों को जिनको कि वे उनकी निशानियों से पुकारेंगे और कहेंगे कि तुम्हारी जमाअ़त और तुम्हारा अपने को बड़ा समझना तुम्हारे कुछ काम न आया। (अब देखो) क्या ये (जो जन्नत में मज़े उड़ा रहे हैं)। वही (मुसलमान) हैं जिनके बारे में तुम क़समें खा कर कहा करते थे कि इन पर अल्लाह (अपनी) रहमत न करेगा। (हालांकि इन पर रहमत यह हुई कि) इनसे कह दिया गया कि जाओ जन्नत में, तुम पर न कुछ डर है, न तुम रंजीदा होगे।' —ब्यानुल क़ुरआन

आराफ़ वाले आख़िर में जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।—ब्यानुल क़ुरआन

जन्नत और दौज़ख़ दो ही जगहें आ़माल के बदले के लिए अल्लाह तआ़ला ने मुक़र्रर फ़रमाए हैं। जन्नत में जाना सच्ची कामयाबी है और

दोज़ख़ में जाना असली घाटा और सच्चा नुक़सान है। जिससे बड़ा कोई नुक़सान नहीं। इस दुनिया में लोग कामयाबी और बामुरादी की कोशिश करते हैं और तरह-तरह की मुसीबतों को अलग-अलग इरादों में कामयाब होने के लिए ख़ुशी-ख़ुशी बरदाश्त करते हैं। अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूलों और किताबों के ज़रिए हश्र व नश्र और हिसाब व क़िसास, मीज़ान, पुलसिरात, जन्नत-दोज़ख़ के हालात से और सच्चे नफ़ा-नुक़सान और वाक़ई कामयाबी से ख़बरदार फ़रमा दिया है और नेक आ़माल के अच्छे बदले से कभी तफ़सील से, कभी बेतफ़सील बताकर भले कामों के करने पर उभारा और उसकी ताकीद फ़रमा दी है। दुनिया में जो आता है। ज़रूर मेहनत व कोशिश और अ़मल करता है, भले-बुरे सभी दौड़-धूप करते और जान व माल और वक़्त ख़र्च करते हैं। उसमें ज़्यादा बदक़िस्मत कोई भी नहीं है, जिसने ज़िंदगी की बेहतरीन पूंजी और जान व माल के सरमाए को दोज़ख़ के कामों में ख़र्च करके बेइंतिहा घाटा ख़रीदा और अपनी जान को आख़िरत के अ़ज़ाब में डाला। मरना तो सब ही को है। मगर बेहतर मरने वाले वे हैं जो जन्नत के लिए जीते और मरते हैं। यही बन्दे कामयाब और बामुराद हैं।

सूरः आले इमरान में फ़रमाया :

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ، وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ○

कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल मौत। व इन्नमा तुवफ़्फ़ौ न उजू र कुम यौमल क़ियामति फ़ मन ज़ुह्ज़ि ह अ़निन्नार। व उद्ख़िलल जन्न न त फ़ क़द फ़ा ज़ व मल हयातुद्दुन्या इल्ला मताउल ग़ुरूर।

'हर जान को मौत का मज़ा चखना है और तुमको पूरे बदले क़ियामत ही के दिन मिलेंगे। सो जो आदमी दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया, पस वह कामयाब हुआ और दुनिया की ज़िंदगी धोखे

के सिवा कुछ भी नहीं है।'

अल्लाह तआला ने जब हज़रत आदम عليه السلام व हज़रत हौवा को ज़मीन पर भेजा था तो फ़रमा दिया था कि जो मेरी हिदायत की पैरवी करेगा, सो वह गुमराह न होगा, न बदक़िस्मत होगा और यह फ़रमा दिया था कि जो मेरी हिदायत की पैरवी करेगा तो ऐसों पर न कुछ डर होगा, न ऐसे लोग दुखी होंगे और जो कुफ़्र करेंगे और झुठलाएंगे हमारे हुक्मों को, ये दोज़ख़ वाले होंगे, उसमें हमेशा रहेंगे। सूरः ताहा और सूरः बक़रः में यह एलान मौजूद है। जिसने दुनिया में इस एलान पर कान धरा और अल्लाह की हिदायत को माना। बेशुब्हा न यहां राह से भटका हुआ है, न आख़िरत में नामुराद और बदक़िस्मत होगा और जिसने अल्लाह की हिदायत को पीठ पीछे डाला, उसने हुक्मों को झुठलाया; दोज़ख़ में जा कर अपने किरदार (चरित्र) का बदला पाएगा।

اَدْخَلَنَا اللّٰهُ الْجَنَّةَ دَارَ النَّعِيْمِ وَاَعَاذَنَا مِنْ عَذَابِ الْجَحِيْمِ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ، سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ○

अद ख़ ल नल्लाहुल जन्न न त दारन्न नईम व अआ ज़ना मिन अज़ाबिल जहीम। इन्नहू हुवत्तव्वाबुर्रहीम। सुब्हा न रब्बि क रब्बिल इज़्ज़ति अ़म्मा यसिफ़ून व सलामुन अ़लल मुर्सलीन। वलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन।

मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होना, हश्र का क़ाइम होना और हिसाब व किताब लिया जाना इस्लाम के बुनियादी अक़ीदों में शामिल है। दुनिया की जिन्दगी में किया जाने वाला छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा अमल उस दिन इन्सान के सामने आ जायेगा और अच्छा या बुरा जैसा भी वह अमल होगा उसका बदला भी ज़रुर दिया जायेगा। वहां न कोई असर व रसूख़ काम आयेगा, न धन दौलत और न कोई सिफ़ारिश।

इस किताब में कुरआन मजीद और हदीस शरीफ़ के हवाले से मैदाने हश्र के हालात, उसकी तफ़्सीलात, और बुरे अमलों की सज़ाएं तफ़्सील से बयान की गई हैं।

ISBN 81-7101-480-1 www.idara.co
9788171014804 ₹ 60000